# EAGLES' WINGS

An illustrated Monthly Magazine for the Young



NEEDED TRUTH PUBLISHING OFFICE, ROBOT BUILDINGS, LEEDS ROAD, BRADFORD. Printed in England by James Harwood, Ltd., Derby.

#### CONTENTS.

PLEASE NOTE: That by printer's error there is a duplication of pages 38 to 44, also of pages 81 to 84. (\* indicates duplicate page).

|                                 | D 100   |          | . 1917  |         |          |         |       |
|---------------------------------|---------|----------|---------|---------|----------|---------|-------|
|                                 |         |          |         |         |          |         | PAGE  |
| Are the children safe           |         | ***      |         |         |          |         | 60    |
| Autobiography, An               |         |          |         |         | 2454     |         | 79    |
| Bearing Fruit                   |         | ***      |         |         |          |         | 62    |
| Bible Exercise                  |         | 8,       | 14, 24  | 1, 44*, | 51, 64,  | 69, 84  | 1, 99 |
| Bible Searching                 | . !     |          |         | 28      | , 48, 70 | ), 84*, | 104   |
| Bible Searching Results         | 8, 1    | 1, 25, 3 | 35, 41, | 44, 44  | *, 45, 6 | 64, 69, | 81*   |
|                                 |         | 1        |         |         |          | 36, 91, |       |
| Bus Driver, The                 |         |          | • . • . |         |          |         | 68    |
| Camp Memories                   |         |          |         |         |          |         | 35    |
| Canadian Bear Story, A          | 14      |          | ***     |         |          |         | 19    |
| City Bright, A                  |         |          |         |         |          |         | 16    |
| Contentment                     |         |          |         |         |          |         | 12    |
| Creation's Glory                |         |          |         |         |          |         | 32    |
| Cross of Lorraine, The          | elect.  |          |         |         |          |         | 71    |
| Crowd Passed By, The            |         |          |         |         |          |         | 95    |
| Crown of Thorns, The            |         |          |         |         |          |         | 4     |
| Cummersdale—Farewell!           |         |          |         |         |          | -       | 18    |
| Deserter, The                   |         |          |         |         |          | ***     | 72    |
| Tilantain Timba                 | 22      |          |         |         |          |         | 92    |
| End of the Trail The            |         |          |         |         |          |         | 38    |
|                                 |         |          |         |         |          |         | 83    |
| D M                             |         |          |         |         |          |         | 56    |
| Girl of 9 had not even heard    | d of th | ne Bible | е       | 1000    |          |         | 55    |
| Good Looking                    |         |          | 4.4     | 12.     |          |         | 80    |
| Carl Camanitan Tha              |         |          |         |         |          |         | 42    |
| C 1 T Tl                        |         |          |         |         |          |         | 30    |
| Cross for Mo                    |         |          | 4.0     |         |          |         | 80    |
| Caral Channa Tha                |         |          |         |         | -1.      |         | 78    |
| Croot Suppor A                  |         |          |         |         |          |         | 13    |
| Heard in a Sunday School        |         |          |         |         |          |         | 54    |
| Hero, A                         |         |          |         |         |          |         | 22    |
| TI-1'-1 M                       |         |          |         |         |          | 20.0    | 50    |
| Hamaruand Davind                |         |          | 1       | **      |          |         | 97    |
| How I was Saved                 | 2715    |          |         | **      |          | 1969    | 16    |
| In England to-day               |         | -        | 200     | ***     |          | 2000    |       |
| In the Midst of Life            |         | 10000    | 11      |         |          |         | 55    |
| 7-1                             |         |          |         | 100     | * *      |         | 21    |
| John Lightning Conductor, The . |         |          |         |         | **       |         | 58    |
| T J . ( II Th.                  |         |          |         |         |          |         | 67    |
|                                 | 1 +ha   | Forth    | ***     |         |          |         | 100   |
| Lord shall be King over al      | i the   | Earth    |         | 10.0    |          |         | 39*   |
| Lost One Found, A               | No.     | **       |         |         |          |         | 40*   |
| Maranatha                       |         |          | 5(6)    |         |          |         | 5     |
| Master is Here, The             |         |          |         |         |          |         | 86    |
| Mercy Ship, The                 |         |          |         |         |          |         | 7     |
| My Conversion                   |         |          | £ .     |         |          |         | 99    |
|                                 |         |          |         |         |          |         |       |

| New Life, The           | ***   |          | 1000 |         |      |         | 40   |
|-------------------------|-------|----------|------|---------|------|---------|------|
| One Step then Eternity  |       |          |      |         |      |         | 94   |
|                         |       | 32, 39*, |      |         |      |         |      |
| Poisoned Seagull, The   | ,,    | , ,      |      | , 00, 0 |      | 00,00,  | 89   |
| Pound Note, The         | 4.4   |          |      |         | 11.5 |         | 84   |
| Redemption              |       |          |      |         | ***  |         | 43*  |
| Samuel, Story of        | 1.0   |          | * *  | 10.10   |      |         | 10   |
| School Boy Substitute,  | Δ     | *7.*     | * *  |         |      | - 90    | 63   |
| Second Man, The         |       |          | 0.00 | ***     | ***  | 4.4     | 98   |
| Sheep Dog Trials, The   | 3.9   |          | 0400 |         | * *  | 2.2     | 82   |
|                         |       | ***      | ***  | * *     |      | **      |      |
| Sinner Like Me, A       | 26.4  | * * *    |      |         | * *  | 7.7     | 24   |
| Soldier's Dream, The    | * *   |          | 193  |         | 2.5  | 9.5     | 2    |
| Spiritual Railway, The  |       | 70       |      | ***     | **   | 1873    | 51   |
| Stories of Conversion   |       | * *      |      | 34534   |      | ***     | 40*  |
| Story of the Younger S  |       | 28.2     |      | * *     |      | **      | 88   |
| Straight Line in the Sn | ow, A | **       | ***  |         |      | ***     | 23   |
| Take Time by the Fore   |       | 404      |      |         |      | 144     | 96   |
| Travel Talk             |       | **       |      |         |      | 32, 38* | , 53 |
| What Christ is to the I |       | 4.       |      |         |      |         | 44   |
| What's a Well?          |       | **       |      |         |      |         | 15   |
| Window, The             |       |          |      |         |      | -       | 52   |
| Wisdom of the Ants, T   |       | - 100    |      |         |      |         | 66   |
| Wise Choice, A          |       |          |      | 15.05   | 7.5  |         | 41*  |
|                         |       | et et    | ***  | ***     |      |         | 34   |
| Young Soul Winner, A    |       | ***      |      |         |      |         | 04   |
|                         |       |          |      |         |      |         |      |

## FOR THE LITTLE ONES.

|                             |         |       |       |        |          |      | PAGE   |
|-----------------------------|---------|-------|-------|--------|----------|------|--------|
| As White as Snow            |         | **    |       |        | **       |      | viii.  |
| Bed Time                    | **      |       |       |        |          |      | iv.    |
| Elijah and the Ravens       |         |       |       |        |          |      | XV.    |
| Favourites all              |         | ***   | 1929  |        | **       |      | xxi.   |
| Fiery Serpents              | 1919    | **    |       | **     |          |      | iii.   |
| Going to School             | 99      | 3.3   |       |        | 1.00     |      | ix.    |
| How to have a Happy No      |         | ear   |       |        |          | ***  | 1.     |
| If I come to Jesus          |         |       | ***   | *.*    |          |      | IV.    |
| I hope it doesn't hurt me   |         | 10.00 |       | **     |          | X    |        |
| Jesus loves little children |         |       |       |        | ***      | 2    | XXXI.  |
| Jesus loves me              |         |       | • • • |        | **       |      | xiii.  |
| Little Boy who Died, A      |         | **    |       |        |          | 1974 | Xi.    |
| Little Captive Maid, The    |         |       |       |        | **       |      | V11.   |
| Lost Sheep, A               |         | **    |       | ***    | 1000     |      |        |
| Poetry                      |         | **    |       | 1V., X | vii., xx |      |        |
| Rex                         |         |       | 9.84  |        | .,       |      | xxix.  |
| Sheep dipping at the Fari   |         | * *   |       |        |          |      | XXV.   |
| Something for Nothing       |         |       |       |        | **       |      | xii.   |
| Something we must do ou     | irselve | S     | **    |        | ***      | 4.41 | XX.    |
| Sweet Story of Old          |         |       | 4.    |        |          | X    | xviii. |
| There's a Friend for Little | e Chil  | dren  | **    |        |          |      | xxiv.  |
| Timothy                     | * *     |       |       |        |          | 2    | xvii.  |
| Who made the Sea?           |         |       |       | 100    |          |      | xvii.  |
| Yes, Jesus Loves me         |         |       |       |        |          |      | v.     |
| Your Own Way                |         |       |       |        |          |      | xvi.   |
| Zacchaeus                   |         |       |       |        | 1        |      | xix.   |
|                             |         |       |       |        |          |      |        |

#### <u>eeeleeeleeeleelee</u>

## "In the Day and in the Night."

In the day and in the night,
In the dark as in the light:
Even when none else can see,
I am sure God seeth me.

Some may say, "There is no God,"
Some may bow to blocks of wood;
There's a God, things made prove this,
And The Book tells who He is.

Every word of God is pure, Every word of God is sure; Heaven and earth shall pass away. But God's Word shall stand for aye.

Read God's Word, we learn therein, God loves sinners, God hates sin; All His words and ways do prove, "God is Light" and "God is Love."

God loves all—His Son He gave, Jesus came to seek and save; When we on God's Son believe, Life eternal we receive.

God hates sin—His judgment fell, On the One He loved so well; If we do God's Son reject, Then we must God's wrath expect.

A. FOSTER.

## "GOD FEEDETH THEM."

"Not one of them is forgotten in the sight of God."



How true the above words are! God is pleased to use means to do so.

LITTLE MARY FEEDING THE SPARROWS.

## The Soldier's Dream.

A true incident (Prayer Answered).

When I read it my eyes were filled with tears, and my heart was moved as I thought of the wondrous privilege of working for the Lord Jesus Christ, and the rich reward it brings.

Tract distributors should be encouraged by this.

One day I was alone, and sad; everything seemed dark and desolate to me; my soul was east down, and I had forgotten the exhortation, "Cast thy burden upon the Lord, and He shall sustain thee" (Psalm 55. 22). Suddenly, in the midst of the deep silence and loneliness of a sad evening, the sound of sweet music was heard. It was a boy playing an organ. What an intelligent face he had! and the great black eyes which he turned on me spoke of want and suffering. "He is hungry," I said to myself. I gave him some bread and meat on a plate, and also a tract, without having the courage to speak to him. However, this boy

interested me deeply, and while watching him eating, from my window. I asked God over and over again to use this tract to the salvation of his soul. After he had eaten, he read the title, "How to become a Christian," and then put the tract carefully into his pocket.

Several years passed, and the Great War broke out, bringing its terrible story of suffering and distress, and I forgot my young organ-player. I visited recently a military hospital where the wounded and the sick were cared for. The



doctor was going his round; he was standing silent and sad by the bed of a young soldier, holding his wrist and feeling his pulse, which was beating more and more feebly. I bent down to look at him. His eyes were closed, and the stamp of death was printed on his face. At this moment the chaplain came in; he bent over the dying man and seemed anxious to know if he were still breathing. Suddenly the young man opened his eyes and asked, "AM I GOING TO DIE?" The chaplain, who was saddened, did not answer.

"Oh, don't be afraid to tell me! I am ready! God be praised!"

"I cannot say, my friend," replied the chaplain, "but do you know the Saviour of sinners? Do you love the Lord Jesus Christ?"

"YES, YES, I HAVE JUST SEEN HIM. I AM NOT WANDERING. I MUST TELL YOU BEFORE I GO."

"Is your mother still living?" asked the chaplain. "Can I

do anything for you?"

"Yes, sir, but she is not here. I shall be with her soon; she is in heaven." As he said these words, his eyes, which were already becoming dim, took on an expression of intense happiness. "But," he added, "I have a young sister. Poor child, she will be very lonely now, but I have commended her to the Lord, and surely He will not forget her. I should like to be able to send her some little things." And so saying, he made a supreme effort to take from under his pillow his purse, in which there were some pieces of gold, then his Bible, a photograph, and a tract, the cover of which was dyed with his blood.

"This little tract was the means of my salvation, as well as my dear mother. A long time ago I was a poor organplayer, trying to support my mother and my little sister; we were very poor, when a kind lady gave me this tract. Oh! how happy my mother was when I read it to her! Up till then, no one had ever given us anything to show us the way to heaven. No one had ever spoken to us of this precious Saviour, who died on the cross to ransom us. Since then we have prayed for this kind lady every day. How much I should like to see her again! Her little book was like the cup of cold water to my dying mother."

I came nearer to his bed to hear all he was saying, for I had recognised in him the little organ-player who had formerly encouraged my downcast soul. A little while after, he said, in a low voice, "What a lovely dream it was! I had reached the gates of heaven, and I entered. Everything was so beautiful, so glorious, but I wanted to see my Saviour, and then my mother. She was there, close to Him. Then I thought of the kind lady with the little book. I wanted to see her, but she had not come there yet. A little while after the gates opened, and she came in. I was longing to tell her what her little book had brought us, and the Saviour, who knew the desire of my heart, said to me. 'Go.' So I went, but I woke up. It was only a dream."

I could no longer control myself, and sobbed aloud, which attracted the attention of the dying soldier. He recognised me.

Marvellously surprised to see me, yet incapable of making any movement, he said slowly, looking up to heaven, "I thank Thee. Lord, that Thou hast answered my prayer. I know that Thou

answerest the prayers of those that trust in Thee."

You who may read this true incident, do you want to know "How to become a Christian"? You cannot save yourself. You need a Saviour, and the only Saviour is the Lamb of God, who suffered on Calvary's Cross to take away the sin of the world. You cannot enter heaven unless your sins are forgiven, and there is only One who can remit your sins, and that is the One who died, the Just for the unjust, to bring us to God.

He appeared once in the end of the ages to put away sin by

the sacrifice of Himself. No other sacrifice would do.

"There was none other good enough
To pay the price of sin;
He only could unlock the gate
Of heaven and let us in."

He is the only Saviour. "Neither is there salvation in any other: for there is NONE OTHER NAME under heaven given among men, whereby we must be saved "(Acts 4. 12).

## The Crown of Chorns.

URING the Russian-Japanese war, one who loved and served the Lord Jesus Christ was having her breakfast early one morning, when she heard a tiny Japanese carriage, pulled by a man, stop at her front gate, and one came

to her door and called out, "Gomen nasai."

In a few minutes her servant came to say a Japanese soldier wished to see her. He was sorry to disturb her so early, but he had come on urgent business. After all the formal Japanese greetings were over, the soldier explained that he had been called up for active service, but as he had no peace in his heart he could not happily face death, though he knew he ought to do so as a loyal subject of the Japanese Emperor. Then putting his hand into his breast pocket he brought out a small packet done up in

white paper out of which he took a piece of acacia thorn. "Some years ago," he said, "I heard that the One who wore a crown made of thorns like this died to save men from their sins and give them eternal life.

I have been enquiring about Him lately, and a friend told me that the Christian living here would be able to explain it all to me. I have been travelling all night that I might find and ask you to tell me about this Saviour. To-morrow I must join my regiment."

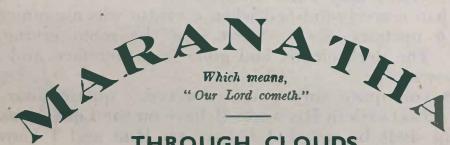
What a joy it was to the lady to tell the Japanese soldier the way of salvation, and he found peace through believing in the Lord Jesus.

He stayed at her house all that day, and she unfolded to him from the Scriptures the wondrous story of redeeming love. The love of God in sending His only begotten Son to be the Saviour of the world. The love of the Son in giving Himself up on the cross as the atoning Sacrifice for sin. Sin's penalty having been borne by the Saviour, and His work gloriously finished, God raised Him from the dead and He was received up to the right hand of God in glory. Exalted to be . . . a Saviour, to give repentance and remission of sins to all who believe with their heart on Him.

The soldier went away glad because he had believed on the One who wore a crown of thorns and died for him. This Saviour

is willing to save all who come unto God through Him.

CONTRIBUTED BY W. H. B. FULLARD.



## THROUGH CLOUDS TO SUNSHINE.

THE sun was shining brilliantly, but on the cliff top a gentle breeze was blowing. Far below, the sea rolled in all its grandeur and the seagulls made a pretty picture, sometimes

riding upon the waves, then flying off in search of food, mewing

and screaming as they went.

Into this summer scene came a little girl. She came up the hillside obviously in search of someone. Her brows were knit, and the expression on her face told of a troubled heart within. At last she stopped and waited until a young lady, who was coming towards her, drew near. "Whatever can be the matter with E——," thought the young lady as she saw her troubled look; but she was left in no doubt when she heard little E—— say in a very solemn voice, "I want to be saved."

On the previous day our friend had been speaking to some of the young people on the cliff-top about the coming of the Lord Jesus to the air to take away all those who are saved. She had told them that He would come Himself for them, and that they would hear the voice of the archangel and the trump of God-E—knew that of all her family, she alone was outside "the tender Shepherd's care," and she was really afraid that the trumpet would blow, and the Lord would come.

"E—, it is said,—Believe on the Lord Jesus Christ and thou shalt be saved. Do you believe on Him?" queried the

young lady.

"Oh yes," replied the little girl.

"Are you saved then?"
"No," she said doubtfully.

"Well, that is strange!" said her companion. "Either God or you are not telling the truth; because God says that if you believe on the Lord Jesus you will be saved, and you say that you do believe on Him yet you are not saved. Now. I think I know what is wrong, perhaps you have never said "thank you" to God for sending the Lord Jesus to die for you on the cross. Will you do that, my dear?" and leaving the little girl to think it over, the young lady went in to lunch.

She had scarcely finished when a visitor was announced, and, bounding upstairs, E—— burst into the room crying, "I'm saved." The dark clouds had gone from her face and all was

sunny now.

"Are you quite sure you are saved," queried our friend. "Oh yes, God says in His word, Believe on the Lord Jesus Christ, and thou shalt be saved, I believe on Him and I know I am saved."

While she was giving God thanks, the gracious Holy Spirit had given her the assurance of salvation. Then she said, as she remembered that Jesus was coming again, "The trumpet can

blow anytime now."

It may be that the story of E——'s salvation will help you. dear young friend, to realise just how simple it is to be saved when you know your need of the Saviour. Will you come as she did, and say, "Thank you!" from your heart for the Lord Jesus

and His death upon the Cross to atone for your sin?

I would like to tell you the sequel to this story. Little E—said very decidedly at that time, "I'm not getting baptized," and when pressed for a reason she replied, "Because I'm afraid to put my head under the water." However when she was a little older, she discovered that her love to the Lord Jesus had grown, and she was willing to be baptized as a disciple to please and to obey Him, even though she was afraid of the water.

Perhaps you have been saved, but have not been baptized. Can you think how it must grieve the heart of the Lord Jesus when He sees a boy or girl unwilling to follow Him in baptism. If He should come to-night would you not be ashamed to meet

Him unbaptized? when it is so plain in the Word (Matthew 28. 18-20), also its teaching in Romans 6. 3-12.

One now with the Lord, wrote the following lines which I do

hope you will take to heart.

Are you ready for His coming?
Face the matter! Do not shrink!
Let this pointed, personal question
Search your heart and make you thinkAre you really, truly ready?

Let me ask you if I may,

Are you ready for His coming,

If the Lord should come to-day? S. TRAVERS.

"The Mercy Ship."

NCE again the bow of the "Lady Nelson" plowed her way

up the St. Lawrence amid tumultuous cheering.

To see her steaming into port would be a moving sight for those who awaited her arrival, also a great thrill for those poor men on board. They were coming home after many terrible experiences of battle and imprisonment. Could there be a more beautiful sight for them than the shores of the homeland?

Many times this mercy ship has sailed the seas amid many



dangers, yet she always arrived safely in port. Once when sighted by the enemy only one thing saved her from destruction, that being a Red Cross prominently displayed from the mast and on sides of the ship. This cross is recognized by all nations, and according to international law would permit a ship safe passage to its destination.

I can well imagine those poor men lying on their sick beds wondering if that cross would really save them from disaster, and it would be a great relief to their mind to be anchored in port.

Do you ever think, boys and girls, that you are sailing on life's sea and are at the mercy of the enemy—Satan, and that you can also be sheltered by a Cross? The Cross on which Jesus shed His precious blood to pay the price for our redemption; to free us from the power of Satan, sin, death and Hell, was where He made atonement for sin by His death.

Was it good people whom Jesus came to save? Ah no! it was for sinners like you and me that He came down from Heaven to die on that Cross. God tells us in Romans 3. 23 that "All have sinned and come short of the glory of God." ALL includes everyone, therefore ALL need a Saviour. Believers can say. "He was wounded for our transgressions, He was bruised for our iniquities; the chastisement of our peace was upon Him; and with His stripes we are healed" (Isaiah 53. 5).

You cannot hope to be in Heaven if you are still in your sins. You must come to the sinner's Saviour in your need, a lost, guilty soul, and accept Him as your Saviour; then your sins will be blotted out for ever, and your name written in the Book of Life. This will be your passport to Heaven, for you will be sheltered under the Cross of Christ. You need have no fear, for He will take you safely home. To all believing sinners the Saviour's word is—"I give unto them eternal life; and they shall never perish, and no one shall snatch them out of My hand" (John 10. 28).

At camp last year we used to sing:—

Oh yes, my friend, there's something more

Something more than gold; To know your sins are all forgiven Is something more than gold.



Yes, it is a grand thing to know you are bound for Heaven! but how sad if you are not. You may go on never thinking where you will anchor when life's voyage is over. Where will it end? There are two destinations, HEAVEN and HELL. If you are still unsaved you are lost, helpless and sinking, and if you die unsaved your journey's end will be Hell. There is a pierced hand held

out within your reach to save you from a lost sinner's hell. Why not then take hold of it, and be saved from perishing, and find a true haven of rest in Christ Jesus.

We would warn you to decide now where you will spend eternity: make sure that your haven will be HEAVEN. If so you must be sheltered by the Blood and Cross of the Lord Jesus Christ. Will your eyes behold through the morning Light

The city of gold and the harbour bright?
Will you anchor safe on the heavenly shore,
When life's storms are past for evermore?

H. YOUNG, HAMILTON, CANADA.

#### BIBLE EXERCISE (For older Scholars)

A prophet named when he was drawn
Out of the Nile's dark wave;
A prophet who revived a man,
Though buried in his grave;
Who was it that some prophets fed
And hid them in a cave?

Teachers should seek to find the answers themselves, and encourage their scholars to bring their answers to them. The answers will be given next month.

Answers to December Bible Exercise.

A sucking lamb, 1 Samuel 7. 9. A ram, Genesis 22. 13. The Lamb of God, John 1. 29.

† OVERSEAS BIBLE SEARCHING RESULTS.

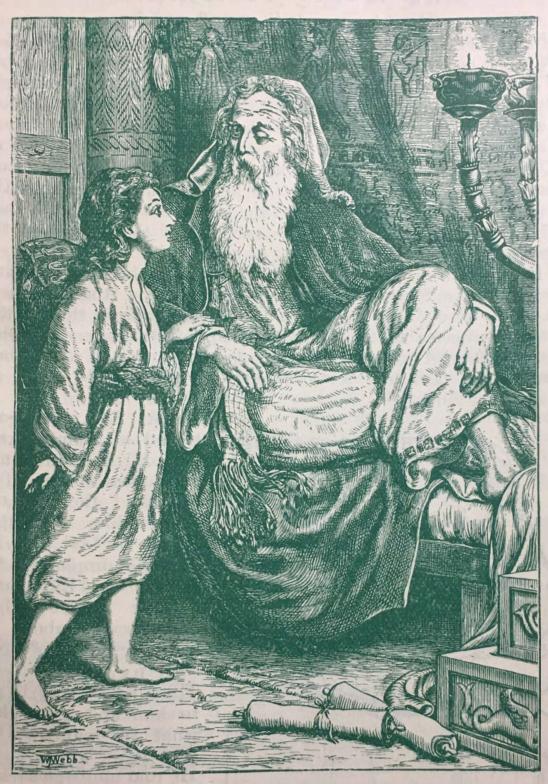
TORONTO (Canada).—Excellent—\*A. Todd (welcome Andrew!).

VICTORIA (B.C., Canada).—Excellent—B. Farndon, M. Merriman, R. McLeman.

IBADAN (Nigeria).—Excellent—D. A. Okeyode (well done Daniel!).

† Received too late to be inserted with others in December issue.

## Samuel answering the Divine Call



Hushed was the evening hymn,
The temple courts were dark;
The lamp was burning dim
Before the sacred ark:
When suddenly a voice Divine
Rang through the silence of the shrine.

Oh, give me Samuel's ear—
The open ear, O Lord!
Alive and quick to hear
Each whisper of Thy Word:
Like him, to answer at Thy call.
And to obey Thee first of all.

## The Story of Samuel.

(Read 1 Samuel chapters 2. and 3.).

when he was very young. He was given in answer to prayer. and all through his life this fact would be constantly brought before him because his name signified "asked of God." Before he was born, his mother, Hannah, determined that his life should be one of service to God, so after he was weaned she took him up to Jerusalem to live in the Temple under the supervision of God's servant, Eli. When he grew older he helped Eli in the work of the Temple, and he gradually learned the law of Moses and all he had to know in connection with the sacrifices and the services of the Temple. He was in the Right Atmosphere.

Helping Eli in the Temple at this time were his two sons, and in each of them Samuel had a very bad example. It says of them that they were "sons of Belial." We can see from this that it would have been a bad thing for Israel had these two succeeded Eli as priests. Samuel noticed their behaviour, but in spite of this bad example, he faithfully served God and obeyed Eli in all he

commanded him.



Then Eli called Samuel . . . And he (Eli) said, What is the thing that the Lord hath spoken unto thee? And Samuel told him every whit, and hid nothing from him. (1 Samuel 3. 16-18.).

As Eli's sons continued in their wickedness, Eli heard about it and talked to them of it, but alas! they did not listen to him. At length a man of God came to him and prophesied the destruction of Eli's house.

One night when Samuel was about to sleep he heard a voice calling, "Samuel." Thinking it was Eli he ran to him and asked him what he wanted. Eli was very astonished. He told himto go back to bed as he had not called him. Hardly had he lain down again when the voice again called "Samuel." Again he

arose and ran to Eli and said, "Here am I; for thou didst call me." Eli answered, "I called not, my son; lie down again." Again

the voice called to him, and this time he must have felt sure that it was Eli who called, so he ran to Eli again, but Eli realised who was speaking to Samuel and he gave him instruction, "If He call thee, that thou say, Speak, Lord; for Thy servant heareth." So Samuel went to lay down again. He again heard the voice, "Samuel, Samuel." This time he answered, "Speak; for Thy servant heareth." God now told Samuel that He would destroy Eli and bring judgment against Eli and his house, for Eli had not restrained his sons when they sinned. Eli asked Samuel the next morning what God had told him.

It all came to pass just as God had said—Eli fell from his seat when he heard the news of the capture of the Ark of the Covenant and broke his neck. His two sons were killed in the battle. It is said of Samuel that he was recognised as a prophet throughout all Israel.

We see here how God began working through a very young child who grew up to be a great man for God. Before this happened, however, Samuel had to come to know God. How can we know God to-day? The answer is, through His Son, the Lord Jesus Christ, who came down from heaven to die on the cross for our sin. He was the Lamb of God, and He offered Himself as a sacrifice for sin. God accepted that Sacrifice on our behalf, and now, if you as a lost sinner, accept the Lord Jesus as your Saviour: you can then say He bore my sins in His body on the Tree. You will be able to say, He "loved me, and gave Himself up for me." Do not say He came to save us; say, He came to save ME.

"If Thou shalt confess with Thy mouth the Lord Jesus, and shalt believe in THINE heart that God hath raised Him from the dead, THOU shalt be saved" (Romans 10. 9).

R. PINEAS.

#### OVERSEAS SEPTEMBER, 1945, BIBLE SEARCHINGS.

MELBOURNE (Australia).—Excellent—M. Carroll, S. Le Huray, B. Heydon, E. Martin, N. McKenzie, J. Le Huray, H. Carroll, D. Drew (welcome Dorothy!). Very Good—I. Turriff, F. Child.

IBADAN (Nigeria).—Excellent—Eniola Odejoke.

VICTORIA (British Columbia).—Excellent—S. Cave, M. Darnell, F. Farndon.

SIDNEY (Australia).—Excellent—J. Irvine, K. Irvine, J. Megaw.

VANCOUVER (British Columbia).—Excellent—G. Armstrong, J. Stirrat.

HAMILTON (Ontario).—Excellent—A. Curran, E. Curran, J. Petrie, K. Smith.

BRANTFORD (Ontario).—Excellent—J. Bell, J. Burbridge, C. Reid, N. Seath. Very Good—J. Thomas.

Will George Turner, somewhere in East or South of England (isolated address), and Peter Kennedy of Jarrow-on-Tyne, please send their address to:—Mr. Gordon Taylor, 94, Freeman Road North, Leicester, when they will receive an Honours Certificate for Bible Searchings.

We regret to learn that Netta, Russell's name was omitted from our last Bible Searching Results. This shall not affect the Honours List record.

All correspondence for "Eagles' Wings" to be addressed to the Editor, Mr. J. Dorricott, 18, Arlington Road, Derby.

### Contentment.

Twas a beautiful Saturday afternoon, and the local Tract Band was paying its annual visit to a little Scottish Village. Some arrived by bus and others by cycle, and after receiving some Gospel tracts and booklets commenced to hand one in to each home in the village.



One of the workers knocked at the door of a humble cottage.

One of the workers knocked at the door of a humble cottage, and a voice from within requested him to come inside. He entered and found seated at the fireside an old lady whom he requested in a kindly manner to accept a Gospel Leaflet. She said that she would gladly accept it, but was unable to read it. He then noticed she was blind. and quickly offered to read the tract to her.

After having done so, she told him that she was now 91 years of age, and had taken the Lord Jesus Christ as her own Saviour when she was a very young girl. She had been a keen student of the Word of God, and now, when she was no longer able to read it for herself, she was often refreshed and strengthened in spirit by repeating and meditating on verses and chapters memorised in earlier years.

A few more from the Tract Band were invited into this little cottage and sang some hymns to her, and at her request a portion of God's Word was read. For two years, since this Saturday afternoon, some have visited her regularly, and have always found this dear child of God displaying the same eagerness for the Word of God to be read, and never once has she complained or grumbled, although she has no longer her sight; all her family are dead, and she has none of this world's riches.

Now just think for a moment, boys and girls, what is the reason that one who is now blind, alone, with but a humble home, can be so contented and happy. Well, here are some of the reasons:—

(1) Her sins are forgiven. She loves the Lord Jesus Christ, and is looking forward to being with Him soon.

(2) Although she has lost her sight; she has treasured in her heart God's word which says, "Thy Word is a lamp unto my feet, and light unto my path.

(3) Lonely,—but she has experienced the promise, "I will never

leave thee nor forsake thee."

(4) Having nothing, and yet possessing all things.

Dear young reader, if you know not Jesus Christ as your Saviour, will you not receive Him as your Saviour now, and know the peace and joy which our friend of 93 years of age enjoys?

If you are a young believer, we ask, Do you read God's Word every day? If not, begin now and store it up in your heart.

A. N. URE.

## A Great Supper.

Please read Luke 14. 15-24.

The youngest of our readers will understand that the man here, who made a Great Supper, speaks of God Himself. We might speak of this as illustrating the Great Gospel Supper.

The supper was great for several reasons.

- (1) A great deal of thought and careful preparation was necessary. It was in the man's mind for a long time before the date arranged for the supper.
- (2) It was a very costly supper.
- (3) A large number were invited.
- (4) Rich, abundant and variety of provision was made. It was indeed a Great Supper.

This reminds us that the Triune God was thinking of the Great Gospel Supper away back in eternity, for we are told that believers were chosen in Christ before the foundation of the world (Ephesians 1. 4).



"Lord, what thou didst command is done, and yet there is room."

We also remember the tremendous cost at which it has been provided, even the precious life of the Lord Jesus Himself.

"While we were yet sinners, Christ died for us" (Romans 5.8). The gospel is for whosoever will,—the greatest possible number are invited. It is forced upon none, being far too precious to be given to those who do not want it, but it is free to all.

What tremendous blessings the gospel brings to all who

believe it! Let us mention a few.

(1) Forgiveness of sins. "Every one that believeth on Him shall receive remission of sins" (Acts 10. 43). If one dies in his sins, where the Lord Jesus is he cannot go (John 8. 21). ●ne unforgiven sinner in heaven would defile that holy place. How important then to know that one's sins are forgiven!

(2) Eternal Life. This means not only that the one who receives it shall live for ever, but that he shall enjoy the knowledge of God, and the Lord Jesus (John 17.3); a knowledge which fills the soul with joy and peace. "He satisfieth the longing soul" (Psalm 107. 9). "He that believeth on the Son hath eternal life" (John 3.36).

(3) Believers become children of God (John 1. 12). How blessed to know God as our Father; to be able to go to Him in all our trials and difficulties, and to share with Him our joys!

(4) We become possessors of the Holy Spirit, Whom the Lord Jesus has sent to this earth to take His place, to indwell and to abide with the believer (John 14. 16, 17).

(5) A home in heaven is assured to all who put faith in Christ

(John 14. 2, 3).

Many more blessings might be enumerated, but surely these are enough to make unsaved persons long for this Great Salvation.

Please note, it was the needy who accepted the invitation to the Great Supper, and it is the needy who come to the Saviour.

Do not be like the foolish men in the parable, who "with one consent began to make excuse," but respond at once to the invitation "Come; for all things are now ready."

G. E. HORNE.

#### BIBLE EXERCISE (For older Scholars).

Who was a prophet of the LORD When he was but a child? The greatest prophet of old times, Yet he was meek and mild; What prophet made him iron horns and who a king beguiled?

What prophet made him iron horns
And who a king beguiled?

Teachers should seek to find the answers themselves, and encourage their scholars to bring their answers to them. The answers will be given next month.



An Eastern woman returning from the Well.

## What's a Well?

BOYS and girls sometimes use the expression, "What's a well without a bucket?"

It may be this saying finds its origin in the conversation that the Lord Jesus had with the Samaritan woman at the well, written in John chapter 4. "Thou hast nothing to draw with and the well is deep!"

The other day I was surprised to find a well without water. The inscription on the stonework was very inviting—

"Ho, EVERYONE THAT THIRSTETH."

If you will please take your Bible you will find that this is a quotation from Isaiah, chapter 55.; which please read.

I can imagine thirsty boys and girls racing along the road, seeking to be first at this well to obtain a refreshing drink of water. What a disappointment it would be to find that

the supply had ceased!

When the Lord Jesus was here upon earth He spoke on several occasions about water,—in fact He said to the woman at the well, "Every one that drinketh of this water shall thirst again: But whosoever drinketh of the water that I shall give him shall never thirst" (John 4. 14). I can assure you that if you would but come to Jesus as a thirsty, needy sinner, you will not be disappointed, but will find an abundant supply of living water. This was the experience of the writer of the words:—

I came to Jesus and I drank, Of that life-giving stream, My thirst was quenched, my soul revived, And now I live in Him.

Why not be the first in your class to come to the Lord Jesus? Your teacher will be glad, and there will be joy in heaven.

The last invitation in the Bible reads like this:—" He that is athirst, let him come: he that will, let him take of the water of life freely" (Revelation 22. 17).

There's a fountain freely flowing. Millions there have been supplied, Still it flows as fresh as ever From the Saviour's wounded side. 

#### HOW I WAS SAVED.

One Tuesday night in Laird's Lane Hall, I heard the blessed Saviour call; His words of grace were sweet to me, And always precious they will be.

I knelt beside two friends of mine, And each was saved by grace divine; We rested on His precious word, And so were saved—Praise ye the Lord!

Have you yet heard the Saviour's voice? Is He the object of your choice? It rests with you, you can accept; You may, alas, His grace reject!

M.H.

discussional de la constant de la co

#### A CITY BRIGHT.

1 There is a city bright,
Closed are its gates to sin;
Naught that defileth,
Naught that defileth,
Can ever enter in.

personant and a service of the servi

- 2 Saviour, I come to Thee!
  O Lamb of God, I pray,—
  Cleanse me and save me,
  Cleanse me and save me,
  Wash all my sins away.
- 3 Lord, make me, from this hour,
  Thy loving child to be,
  Kept by Thy power,
  Kept by Thy power,
  From all that grieveth Thee:
- 4 Till in the snowy dress
  Of Thy redeemed I stand;
  Faultless and stainless,
  Faultless and stainless,
  Safe in that happy land!

It is with feelings of sorrow we have to record the death of two of our Bible Searchers, Jean Hamilton and M. Bole. Both died in Mearnskirk Hospital, Glasgow. We send our sympathy to the bereaved and to the teachers. Another of the Searchers in Glasgow is dangerously ill. Will believers remember this one in prayer?

BE YE ALSO READY.

Editor.

# The Dawn of Hope,— The Coming Spring



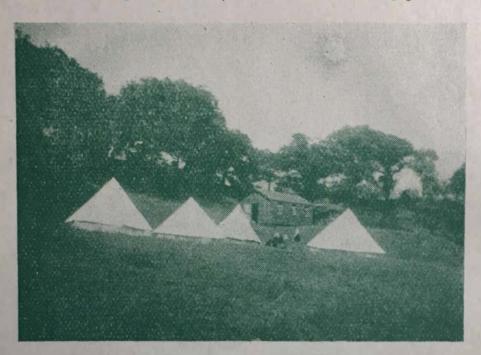
By kind permission of Fox Photos Ltd.

A LOVELY COUNTRY SCENE WHICH SPEAKS OF THE COMING OF SPRING.

TO EVERY THING THERE IS A SEASON . . . . HE (GOD) HATH MADE EVERY THING BEAUTIFUL IN ITS TIME (Ecclesiastes 3. I, II).

## Cummersdale-Farcwell!

LONG the Caldew's bank we wended our way to see the Old Camp site once again. The day was dull and a solemn stillness filled the air. Just in front of us a hawk, disturbed, arose carrying its prey with it, and leaving behind a few small feathers. With silent curiosity the cattle stared at us. Somehow we felt strange in spirit. We climbed over the stile at the top of the field overlooking the dam (our famous bathing pool) and trod



Cummersdale Camp.

along the well-beaten track through the woods. But there were no sound of voices; no cheers rent the air on our arrival; all was still. There was no hut, no kitchen, nothing to indicate that a Camp had been there. Oh yes, there was something, an old enamel plate, and a rusty iron pot near the bushes. As we stood there on the little plateau, a vision of former days seemed to pass before us. We saw again the boys marshalled for dinner, singing so heartily:—

"Oh God, to Thee we raise our voice, In thanks for these good things."

In our mind we saw them sitting round the Camp Fire for a testimony meeting, with the tents silhouetted like Indian wigwams, and with their happy fire-lit faces and shining eyes, telling how and when Jesus had saved them. We heard the joyful strains as after each had told their story, they sung the chorus—

"Happy night, Happy night, When Jesus made my black heart white."

In vision we saw the men who have gone before us and are now at "rest." They lived and laboured among the boys and young

men, and the Scripture came again, with power-

"Jesus Christ is the same yesterday and to-day, yea

and for ever."

And as we still continued to view the past, we could see others rising up to fill the gaps and carry on the good work. And how very dear they all became to us. Standing there on the old site, where so often the word of God had been spoken, and where so many decisions had been made for Christ, spontaneously we started to sing, "How good is the God we adore," with growing crescendo until the last two lines:—

"We'll praise Him for all that is past, And trust Him f r all tha's to come."

And we bowed our heads and gave thanks to God, who so liberally had poured His grace upon us. Then we retraced our steps through the wood, and as we crunched the dry brown leaves beneath our feet, their rustic music seemed to say, "The harvest is past and the summer is ended."

Farewell—Cummersdale—Farewell! Thank God that some can look back to you and say that it was there they decided for Christ, it was there they started their journey for Heaven, it was there that some saved ones consecrated themselves afresh to the Lord.

Perhaps, young friend, you were never at Cummersdale Camp, and these things and scenes do not appeal to you. Well, addressing you as with all former campers who are not saved—not converted. Why are you not? Do you know your need of the Saviour, and would you like the Lord Jesus to save you to-day? If you would, then receive Him for He waits to save you. The Scripture speaks so plainly, "Whosoever shall call upon the Name of the Lord shall be saved" (Romans 10. 13). W. STEWART.

## A Canadian Bear Story.

In the forests of Canada there are many wild animals and a very common one is the bear. While I was living at a camp, deep in an Ontario forest, I never thought I would like to see one of these bears, but I did, and fortunately it was dead. You know bears eat quite heavily during the good weather, and then they prepare a comfortable den in which to sleep all winter. There they stay, and do not come out to eat until the Spring.

Some of the men at the camp were outworking felling trees. Near where they were working they noticed a small hole, and thinking it was a rabbit hole, one of the young men took a big stick and started poking around in the hole, and then finally knelt down and put his head in. What should meet his gaze but a bear awakened out of his sleep! You can imagine how axes would be dropped

and everyone would go scurrying away as the cry would ring out, "Bear! Bear!" Yes, all of us would run. Quite often there is safety in flight. But, listen, one of these young men was a Frenchman who had not yet learned much English. This was all strange to him as he stood beside the hole and watched the confusion. He had not seen what the one young man had, and furthermore he could not understand the cry. So there he stood.



Soon they had the bear trussed up by its leas, and they carried it triumphuntly into camp.

But just then the bear came out and he saw it! What a blessing he had his axe in his hand! Quickly he raised it and sent it crashing down on the bear's skull. And again! and again! Another young man came over, and between the two of them the bear had all the life in him stilled.

Soon they had the bear trussed up by the legs on a pole and they

carried it triumphantly into camp (see picture).

I often wonder why more boys and girls do not flee from the wrath to come when they are told about the danger of being in the Lake of Fire if they die unsaved. Is it because they don't understand? Listen, if you are an unsaved one, you are in greater danger than those young men were, and nothing you have done or can do will rid you of the danger, unless you flee to the Saviour. God's word is plain, and it says, "Flee from the wrath to come" (Matthew 3. 7). Satan is like a bear and a roaring lion; he seeks the souls of boys and girls to drag them down to Hell. But there is One so kind, so gentle, so meek, who in all His seeming weakness has broken Satan's great power at the Cross of Calvary. It was there He became the Sacrifice for sin. It was there He made atonement and rendered righteous satisfaction for sin.

The atoning work is done, The Victim's blood is shed.

God has raised Him from the dead, and exalted Him to be a Prince and a Saviour, and now He lovingly calls to all and says, "Come unto Me... and I will give you rest" (Matthew 11.28). He said, "God so loved the world, that He gave His only

begotten Son, that whosoever believeth on Him should not perish

but have everlasting life" (John 3. 16).

We have raised the warning cry, we have told of the Saviour's love, will you not come to Him? or will you still reject God's offer of mercy?

"Too late! too late!" will be the cry, When Jesus of Nazareth has passed by.

A SPROUL, BRANTFORD, CANADA.

## "In the midst of Life."

T the approach of winter, my mind went back to a very sad incident which happened in my school days. My companion, a boy of ten years old, called for me to go skating.



My companion called for me to go skating with him.

What boy does not like this fascinating and delightful pleasure! But this particular day I did not go with him. Hughie, for that was his name, went off to the pond in high glee with his brother and some more boys. But how disappointing are most earthly pleasures, for they had only been a short time away, when the sad news was brought to me that a boy had been drowned! My thoughts turned at once to my companion. Yes, it was only too true, it was Hughie. How suddenly death sometimes comes,

even in the midst of boyhood's joys! What happened? The ice gave way and Hughie's brother fell in. Hughie tried to save him, and in so doing was drowned himself, whilst his brother was saved. Saved from what? Death! What a brave deed! Hughie gave his life to save his brother. Does this not remind us of the Saviour, who gave His life in order that we might be saved? The Lord Jesus Christ came into the world to save sinners (1 Timothy 1. 15). Yes, to save you. Do you know your need of a Saviour to save you from your sins and their penalty.—the judgment to come, from which you cannot save yourself? I will quote a passage from God's holy Word. "For God so loved the world, that He gave His only begotten Son, that whosoever believeth in Him should not perish, but have eternal life" (John 3. 16). Oh what kindness, what grace and love we see in God giving up His only Son to death that we might be saved, and in His Son willingly laying down His life on the Cross for us! Is He able to save? Yes, for our sin was reckoned to Him, and He suffered for it in order that we may know our sins forgiven and have eternal life. We may say that it was very great love in respect to Hughie who gave his life to save his brother. But Jesus died on behalf of sinners; He gave His life a Ransom for many. Can you with me say, "He died for me"? If you, as a lost sinner, put your faith in the Lord Jesus, then you have eternal life. John 10. 28 says, "I give unto them eternal life; and they shall never perish." "Believe on the Lord Jesus Christ, and thou shalt be saved" (Acts 16. 31). Be warned in time. "In the midst of life we are in death." Hughie never thought death was so near. We entreat of you to "Prepare to meet thy God." Delay no longer, but take hold by faith the loving hand stretched forth to save you.

"He that heareth my word, and believeth on Him that sent Me, hath everlasting life, and shall not come into condemnation, but is passed from death unto life" (John 5. 24).

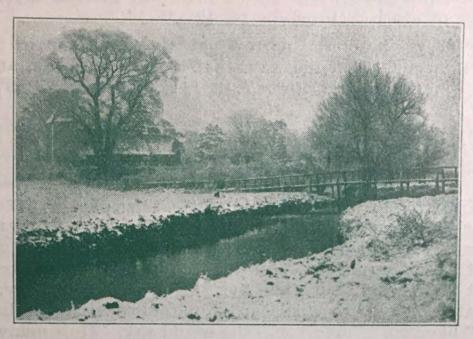
T. BROWN.

# Hallero.

"Be not ashamed therefore of the testimony of our Lord" (2 Timothy 1. 8). He never won a medal on any battle-field, Nor ever gained an honour by making foe-men yield. He never made a daring charge in face of shot and shell, Nor did he ever stand alone as others round him fell. There's no one ever praised him or talked about his fame; The papers did not laud him, or ever print his name. He never brought great honour upon his native town, And yet he is a hero, and he shall wear a crown. Because he did what many are too afraid to do; He just stood up for Jesus, defending what is true. He stood up in the work-shop with all his mates around, And told them of the Saviour, the Christ whom he had found. He made no great oration, a simple word he gave, Of Jesus' love for sinners and of His power to save. He had to face a barrage of taunts and jeers and shame, But still he stood unflinching and owned his Saviour's name. Ah, yes! he did what many, yea, thousands, dare not do; He testified for Jesus, beloved friend, do you?

J. MAWHINNEY.

## A Straight Line in the Snow.



The country-side was covered with a thick blanket of snow.

SNOWY days remind me of a story I once heard of two country boys who had a long way to go to school. This day they set out for school together and the countryside was covered with a thick blanket of snow. They were walking through a field where there was not one footmark, when one of the boys said to the other, "Let's see who can make the straightest line across the field in the snow." So they set out in turn to walk across the field to the gate at the other side. The first boy tried very hard to put one foot right in front of the other, hoping in this way to get a fine straight line. But, needless to say, his line was far from straight when he reached the other side.

The second boy, seeing his chum's failure, tried another way. He fixed his eyes on the gate for which he was making and never looked at his feet at all. As he walked on, the marks he left

behind made a much straighter line than the other.

It is just the same in our journey through life. It may be you are trying to reach Heaven. But how are you trying to get there? It is no use trying to make a straight road for ourselves, because we cannot walk straight. Our footmarks will be like the first boy's line, very crooked. You must look away from yourself, like the second boy. You must look to the Saviour who says, "Look unto Me and be ye saved." Then He will give you power to walk straight as you look unto Him. He also says, "I am the Way, and the Truth, and the Life, no man cometh unto the Father but by Me" (John 14.6). Take this Way to-day, for:—"Jesus is the True, the only Living Way, whosoever will

may come." Be wise in time, for the Scripture saith, "There is a way which seemeth right unto a man, but the end thereof are the ways of death" (Proverbs 14. 12).

"Enter ye in by the narrow gate: . . . for narrow is the gate, and straightened the way, that leadeth unto life, and few be they that find it" (Matthew 7. 13, 14). GRACE M. JOHNSTON.

## A Sinner like Me.

LITTLE girl was being taught a verse of a hymn ending with the words:—"ALL THIS HE DID FOR A SINNER LIKE ME." My friend who was teaching her could not get her to say this, she would say, "All this He did for a sinner like you." No, not "like you," but "like me" my friend would say. But do what he could, the little girl would always pass it back to him; "like you," "like you," she would say. How many there be who pass on to others words of a message that should speak to their own hearts, and has an application to themselves, and thus lose the blessing intended for them personally. O that the reader may come to say, and say from your heart. concerning the atoning death of the Lord Jesus:—" ALL THIS HE DID FOR A SINNER LIKE ME." Like me, like me; let it be personal, then you can claim a personal Saviour, and say with Paul, "The Son of God who loved me, and gave Himself up for me" (Galatians 2. 20). You will then be able to sing:

I then fully trusted in Jesus:
And oh, now a joy came to me!
My heart was filled with His praises,
For saving a poor sinner like me.

And when life's journey is over, And I the blest Saviour shall see, I'll praise Him for ever and ever, For saving a poor sinner like me.

J.D.

#### BIBLE EXERCISE (For older Scholars).

A priest who helped to build the wall Around Jerusalem; A priest who yielded to the wish Of many wicked men; A jealous priest the wicked slew And gained a priesthood then.

Teachers should seek to find the answers themselves, and encourage their scholars to bring their answers to them. The answers will be given next month.

#### EAGLES' WINGS DEC., 1945 BIBLE SEARCHING RESULTS.



bringing in results.

Once again our fine record has been maintained. We extend a hearty welcome to 929 searchers, and especially to the 112 new searchers. \* Denotes first attempt. If you have sent in a paper and your name is not in the list, please write at once to the Editor, Mr. John Dorricott, "Fairhaven," 18, Arlington Road, Derby.

ABERDEEN.—Excellent—D. Cowle, H. Duncan, G. McLeod, R. Mcleod, J. Roberts, M. Roberts, F. Robertson, R. Robertson, T. Robertson, A. Smith, D. Thomson, A. Thomson. ABERKENFIG.—Very Good.—G. Williams. ADLINGTON.—Excellent.—\*K. Allsopp, \*D. Berry, \*J. Dier, \*M. Dynnock, \*E. Edwards, D. Forster, \*D. Gray, J. Harding, \*H. Hartley, P. Hodgson, \*P. Hudson, \*M. Hurst, B. Isherwood, \*E. Jebb, \*M. Odula, B. Openshaw, D. Openshaw, M. Openshaw, \*B. Pearson, \*B. Rainford, \*J. Robinson, \*R. Russell, J. Taylor, \*A. Wolfenden,

\*A. Wyatt (grand effort, so glad to see so many new searchers!). ARMAGH.—Excellent—K. Adams, J. Clarke, John Clarke (good paper!), E. Clarke, Mc. Clarke, C. Gillespie, Charles Gillespie, H. Gillespie, N. Gillespie, J. Griffiths, B. Hamilton, M. Killen, M. Latimer, S. Lesier, H. Lewis, A. Lockhart, D. Lockhart, M. Mills, C. Rolleston, D. Thompson. Very Good—M. McKnight, E. Pallett, J. Short. Good—P. Pallett, E. Hodge. ASHGILL.—Excellent—H. McQueen, M. McQueen, Margaret McQueen, N. Russell, B. Russell. Very Good—J. Anderson. ATHERTON.—Excellent—R. Amos, \*J. Bamford, L. Birchall, M. Birchall, \*E. Bolton, \*J. Brooks, \*R. Brown, A. Chadwick, B. Chadwick, M. Cunliffe, \*B. Eckersley, E. Grant, \*J. Grimes, F. Harris, M. Harris, \*F. Hayes, \*N. Hewitt, \*B. Hodgekiss, D. Jones, \*K. Jones, \*M. Jones, D. Kenyon, L. Kenyon, \*G. Moores (glad to hear of your baptism!), A. Potts, B. Potts, F. Sale, K. Sale, B. Smith, D. Treacher, G. Treacher, M. Treacher, \*I. Fryner, A. Weilding, J. Weilding (splendid effort—so glad to know so many are saved!). AYR.—Excellent—J. Boon, J. Porter.

BATHGATE.—Excellent—A. Cameron, M. Cameron, Mary Cameron, A. Franssen, H. Franssen, \*J. Fisher, R. Fisher, P. Haddon, T. Hamilton, J. Kearney, W. McIntyre, M. Ramsay, M. Smith, \*S. Smith. Also two papers with no name! BARROW-IN-FURNESS.—Excellent—J. Bourne, D. Creasey, N. Creasey, B. Joughin, M. Joughin, D. Probert, J. Probert, Y. Probert. BARRY.—Excellent—M. Jones, Mildred Jones. BELFAST.—Excellent—E. Boyd, M. Boyd, J. Campbell, K. Campbell, L. Campbell, A. Clements, J. Clements, \*D. Clarke, \*E. Clarke, \*J. Clarke, W. Clarke, C. Coyne, M. Coyne, E. Doran, M. Doran, B. Lewis, W. Lewis, L. Lourry, \*A. Mawhinney (well done Anne!), D. Mawhinney. BEXHILL-ON-SEA.—Excellent—M. Andrews (yood paper!). BIRKENHEAD.—Excellent—\*B. Allen, T. Doodson, J. Fletcher, M. Haygarth, D. Horne, K. Horne, M. Horne, D. Hyland, E. Leigh, M. McNoon, M. Roberts, R. Williams. Very Good—\*D. Haygarth, A. Hyland. BIRMINGHAM.—Excellent—D. Bailey, R. Bailey, D. Brown, M. Carty, R. Carty, J. Patrick, P. Sutton. Very Good—A. Brown, G. Howl, W. Lambeth. Good—D. Harris, P. Howl. A. Kilminster, A. Kitching, D. Lees, R. Pickering. BLACKBURN.—Excellent—A. Cotton, K. Cotton, J. Ratcliffe, T. Sharples. BOLTON.—Excellent—M. Isherwood, M. Johnson, E. Leeming, E. McDonald, \*E. Oakes, E. Parkinson, J. Sankey. Very Good—D. Iddon, F. Iddon, L. Isherwood. BRADFORD.—Excellent—B. Smith, S. Webster.

CARDIFF (Kings Road Hall).—Excellent—M. Burgess, J. Butlin, A. Kilbington, S. Laho, M. Stockwell, M. Toms, P. Toms., R. Toms. Very Good- P. Tucker, R. Jones. (Ely) .- Excellent-R. Palmer Very Good-J. Blow, R. Blow, S. Collins, B. Prynne, B. Waite, B. Wakeley. Good-I. Jones. (Ely Children's Homes) .- Excellent-B. Cross, D. Grolding, J. Johnson, \*J. Pocock. Very Good-J. Golding, Z. Harmet, \*B. Johns, N. Rao, V. Thomas, G. Whitmarsh, I. Willis. Good-V. Harmet. CARLISLE. Excellent-M. Johnston. Very Good-\*G. Bellas, \*K. Dawson, C. Kendall. CHEADLE.-Excellent-B. Pattinson. J. Pattinson, J. Salt, K. Salt, S. Salt. CLYDEBANK .- Excellent-A. Boyd, C. Boyd, B. Dow, G. Dyer, E. Hamilton, A. McClure, M. McKinlay, A. Wigmore. Very Good-\*J. Gallagher, A. Tivendale, L. Tivendale, Good- \*H. White. COATBRIDGE.-Excellent-M. Barrie. Very Good-J. Kerr, G. Miller, R. Watson. COWDENBEATH .- Excellent -E. Allan, I. Allan, R. Allan, J. Bruce, M. Bruce, \*A. Bowman, V. Duff. R. Galloway, 1. Gilmour, J. Hunter, R. Hunter, J. Melville, M. Park, Moira Park, J. Paterson, G. Ross, J. Winsborough. Very Good-E. Haddon. CROSSFORD.—Excellent—H. Brindle. CROWBOROUGH.— Very Good-\*A. French, B. French, \*J. French. Good-\*M. Pursglove, S. White. CULLEYBACKEY .-Excellent-\*H. Baxter, J. Baxter, D. Crabbe, E. Hutchinson, W. Hutchinson, E. McIlroy, T. McIlroy, A. McKendry, Annie McKendry, A. McKeown, \*M. Millar, J. Stewart. Very Good—\*H. McIlroy, H. Millar, \*L. Millar.

**DERBY** (Iron Tent).—Excellent—\*D. Caddick, G. Fairholm, B. Grattidge, B. Johnson, K. Johnson, M. Munday, S. Preston. Very Good—J. Cholerton, \*H. Farthing, J. Grainger, S. Grainger, A. Johnson, M. Johnson, G. Minard. Good—\*F. Cholerton, O. Taylor. (Sinfin).—Excellent—E. Gadsby, M. Gadsby, Miriam Gadsby, F. Gaskins, P. Gaskins, M. Harrison, A. Hinc, B. Ince, I. Morrell, B. Neal, P. Neal, P. Whiteley, I. Wooley. Very Good—J. Pawley, J. Radford, C. Taylor. G. Taylor. DOUGLAS (I.O.M.).—Excellent—D. Collister.

EDINBURGH.—Excellent—D. Bunting, W. Bunting, \*I. Degnan, A. Hope, K. Hope, M. Hope, \*I. Jardine, \*R. McNeill, \*J. Short, W. Taylor. Very Good—\*N. Campbell, \*S. Hamilton, \*L. Short. Good—J. Doull (so glad to see these first attempts!). Galston.—Excellent—Jean Piper.

GLASGOW (Balornock.—Excellent—A. Lynch, B. Mackie (well done Betty!), R. Strachan, and one no name. (Cathcart Road).—Excellent—F. Archibald, C. Bowie, Chrissie Bowie, J. Gordon, S. Magee, M. Macdonald, James J. Meechan, A. Postlethwaite, D. Renfrew, E. Windle. Very Good-R. Boa, J. Brown, B. Cassidy, R. Cassidy, B. Clements, A. Holmes, W. McBride, John Meechan, Mary Parker, D. Penny, D. Renfrew, G. Robertson, W. Robertson, \*J. Sanderson, M. Stewart, W. Stewart. Good-1. Ferguson, \*P. Kelly, C. Stokes, J. Wilson, M. Wilson. (Govan).—Excellent—J. Boyd, \*M. Brown, \*M. Dick, L. Hutcheson, C. Laverty, D. McIlreavy, J. McIlvenna, H. McKim, M. Purse, D. Wallace, W. Wallace, C. Adie. Very Good-D. Laverty, C. McIntyre, I. McIntyre, A. Murdoch, N. Robinson. Good-M. Hillhouse. (Kirkintilloch).—Excellent—W. Alston, A. Brown, M. Brown, \*A. Caldwell, J. Comric, \*C. Duncan, R. Forsyth, M. Hamilton, M. Hogg, R. Mathicson, J. Scott, M. Watson. Very Good-\*E. Doherty, M. Doherty, M. Scott, M. Thomson. Good-\*N. McBurnic (well done Kirkintilloch, welcome as a Lord's Day School') (Parkhead).-Excellent—C. Daly, S. Heggie. Very Good—\*I. Money, I. Shaw, L. Shaw, \*M. Wright. Good—M. Parker. (Partick).—Excellent—M. Anderson, J. Bell, A. Laird, M. Carson, \*1. Carter, \*W. Cumnings, B. Dale, I. Dale, A. Gibson, \*J. Neil, \*R. Nichol, \*J. McKenzie, \*R. Smith, \*R. Tait. Very Good—J. W. Archibald, J. Baxter, M. Dempsey, K. Doniran, W. Fleming, A. Gallacher, R. Henderson, I. Hyslop, J. Hyslop, E. Jennings, A. Keifer, R. Lee, F. MacDonald, M. MacDonald, N. McDonald, R. McEwan, B. McGaffin, M. McGaffin, A. McGonagle, D. McKenzie, J. McKenzie, M. McKecknie, E. McLeish, J. McQueen, P. Mirrless, A. Ramsav, \*J. Rodgers, G. Scott, M. Scott, J. Todd, I. Warnock, S. White, M. Wolfenden (splendid effort Partick, bed many omitted to write out the verse in full!). (Springburn)—Excellent—M. Davidson, F. Low, J. Low, B. Macleod, C. Mooney, E. Mooney (a nice set!). Also one paper from Glasgow.—Excellent—H. Smith (no address!). GREENOCK.—Excellent—N. Bethel, H. Craig, I. Duggan, J. Duggan, E. Johnston, B. McCahill, G. McCahill, F. McCafferty, D. McClay, G. McCrindle, N. McFarlane, M. McKaig, R. McKaig, A. McSheffry, C. McSheffry, J. McSheffery, G. Miller, M. Mitchell, C. Piggott, E. Rogers, E. Renfrew, Eunice Renfrew, C. Sanders, M. Watt. Very Good-W. Johnston, R. McDiarmid, M. McFarlane, R. McFarlane, I. McNeice, C. Ranney, E. Shaw, M. Wilson, W. Wilson. Good-J. Barbour. Well Tried-N. T. Renfrew.

HAMILTON.—Excellent—C. Cunningham, S. Cunningham, B. Lindsay, \*A. Mathieson, E. Cook (but this was the previous searching!). HARTHILL.—Excellent—A. Cooper, \*J. Cooper, M. Cheyne. Very Good—J. Marshall, S. Marshall. HAYDOCK.—Excellent—B. Dixon, D. Hazeldine, L. Hazeldine, I. Hughes, W. Hughes, E. Molyneux, F. Molyneux, D. Seddon, M. Seddon. Very Good—S. Brown, \*H. Leyland. HAYES.—Excellent—J. Eade, B. Lewin, J. Lewin, R. Sivier. HEREFORD.—Excellent—I. Preece, M. Rees.

Livermore, C. Norris, P. Smith, J. Stringer, B. Tracey, E. Tracey, R. Wood, R. Wright, J. Smith. Very Good—M. Wood. INNERLEITHEN.—Excellent—S. Pearce (fine paper), L. Notman. Very Good—G. Sulton, R. Sulton, \*T. Scott, I. Tait, G. Wilson.

KINGSTON-ON-THAMES (Burritt Hall).—Excellent—H. Bartlett, J. Davie. Very Good—J. Russell. (Bonner Hill).—Excellent—\*D. Bourne (well done David!), M. Bourne, Mary Bourne. Very Good—I. Ferguson.

KNOCKNACLOY.—Excellent—G. Thompson. Very Good—N. Busby.

LEICESTER (Broomfield Hall).—Excellent—M. Armsden, B. Barsby, M. Barsby, S. Barsby, C. Camp, B. Chapman, M. Chapman, R. Chapman, C. Curtis, M. Elliott, D. Fear (good paper Dorothy!), I. Gant, P. Gant, M. Jewell, H. Mugglestone, D. Parker, R. Parker, L. Reeve, M. Roberts, J. Vernon, M. White. Very Good—B. Attewell, J. Attewell, M. Elliott, F. Gill, R. Hardy, D. Jones, M. Lamb, I. Marshall, T. Marshall, D. Roberts, E. Vernon: Good—P. Dowle. Well Tried—M. Brown, V. Brown, W. Hewitt, B. Upton, J. Upton. (Northfield Hall).—Excellent—\*J. Adams, \*M. Balcombe, \*P. Burrows, H. Crane, I. Davie, A. Davis, \*B. Frearson, J. Grocock, E. Hobbins, \*M. Johnson, D. Kennell, S. Kennell, N. King, \*E. Knight, \*B. Pole, J. Pole, A. Pegg, J. Royston, M. Royston, \*B. Sandford, B. Suffolk, H. Sumner, O. Sumner, \*O. Walker, M. West, B. Weston, P. Weston. Very Good—S. Baron, M. Bennett, P. Bennett, S. Dean, B. Edwards, M. Eld, M. Norton, B. Parker, D. Parkinson, J. Pick, E. Rudden, A. Scotton, M. Scotton, T. Teagle, B. Tipler, M. Whiteman. Well Tried—K. Teagle. (Uppingham Road).—Excellent—M. Dennison, J. Pereira, P. M.

Thompson. LEIGH.—Excellent—\*D. Bland, \*J. Bland, M. Crook, F. Green, E. Swift. LIVERPOOL.—Excellent—P. Blackhurst, D. McDonald, B. Plumb, E. Plumb, R. Plumb, R. Reid (good paper Ren!), M. Richards, S. Richards, T. Richards, R. Roughley, B. Wilson, E. Banks. Very Good—\*J. Bovill, R. Butler (trust your finger will soon mend!), Ruth Butler. Very Good—D. Hill, E. Mayor, E. Richards, J. Robinson, 8. Winstanley. LONDON (Denmark Hill).—Excellent—J. Bartholomew, J. Chedgy, A. Evans, D. G. Evans,

R. Gewitzke, J. Hurst, A. Reeve. Very Good-M. Fagan, M. O'Bryan, Michael O'Bryan.

MACDUFF.—Excellent—B. Gould, V. Gould, E. Robertson, C. Sellar, J. Sellar, A. Stuart, J. Stuart, P. Stuart, V. Stuart, D. Watt, J. Watt, M. Watt. MAIDSTONE (Assembly Hall).—Excellent—E. Dann, \*V. Greenaway, B. Jones, D. King, D. Lee, J. Lee, S. Lee, A. Stewart, N. Stewart, M. Wallis, A. Woodsell, M. Woodsell, E. Yates. Very Good—P. Goad, A. Jones, K. King. Good—D. Palmer. (North Down Close).—Excellent—\*J. Dodd, \*A. Rillie, \*F. Wickins. Very Good—G. Evans. MANCHESTER.—Excellent—V. Bentley, E. Bowker, M. Jones, P. Jones, J. Singleton, L. Turner. Good—R. Spence. METHIL.—Excellent.—\*A. Baird, G. Baird, J. Brown, C. Montgomery, I. Montgomery, J. Montgomery, John Montgomery, M. Paton, B. Philp, I. Reilly. Very Good—James Montgomery. MIDDLESBROUGH.—Excellent—J. Briggs, B. Briggs. MOUNTAIN ASH.—Excellent—Mary Mortimer. MUSSELBURGH.—Excellent—M. Courtney, J. Glen, A. McLuckie, A. McWatt, \*M. Ramage. Very Good—B. Auld, J. Forrest, I. Lindsay, J. Lindsay, J. Peddie.

NEWHALL .- Very Good-G. Matthews, J. Ward, C. Young, F. Young.

OLLABERRY.—Excellent—J. Peterson, K. Peterson.

PENYGRAIG.—Excellent—R. Amos, K. Lee, R. Lee. PAISLEY.—Excellent—S. McFadyan. PORT GLASGOW.—Excellent—I. Callander, P. Clabbie, W. Clark, M. Cook, E. Cummingham, B. Dixon, N. Dixon, C. Grant, M. Hall, A. Hoey, B. Hoey, M. Hoey, P. Hoey, R. Hoey, W. Jackson, B. Martin, M. McCarty, A. McConnachie, J. MacConnachie, \*G. McFarlane, R. McFarlane, W. McClellan, M. Miller, I. Renfrew, N. Renfrew, R. Renfrew, I. Ross, J. Ross, E. Scullion, M. Steel, R. Wylie (very good paper!). Very Good—T. Cunningham, H. Miller, H. Miscandlon, A. Smith. Good—Bertha Dixon. PORTSLADE.—Excellent—

K. Elliott, J. Elliott, E. Bridger.

SHOTTS.—Excellent—A. Pearson. SOUTHPORT.—Excellent—B. Scott (neat paper Brenda). Very Good—\*C Hafez (welcome Colin!), E. Hodson. SOUTH SHIELDS.—Excellent—R. Atkinson, M. Brown, R. Garwick, R. Tomlinson. Very Good—C. Deakin, S. Young. Good—J. Walker. SPALDING.—Excellent—F. E. Spindler. SHIRLEYWICH (Stafford).—Excellent—M. Hydes, O. Jones. STANMORE.—Excellent—John Griffin. ST. HELENS.—Excellent—J. Barrett, \*W. Barton, J. Bowes, \*J. Chisnall, J. Farrar, B. Greenhalgh, R. Hurst, G. Lightfoot, J. Lightfoot, J. Molyneux, John Melyneux, I. Stringfellow. Very Good—John Barrett, S. Chisnall, F. Grove, J. Hill, M. Smith, B. Thelwell, B. Stringfellow. STOKE-ON-TRENT.—Excellent—D. Adams, J. Adams, M. Adams, G. Bennison, H. Bennison, M. Brady, D. Ford, E. Hilton, B. Loach, S. Sutton. Very Good—S. Grimley, B. Knox, I. Parker, D. Trenter, E. Wilson. Good—G. Key (good George!). (Mount School).—Excellent—R. Connor, H. Cope, K. Davies, T. Downing, B. Foxall, \*J. Plant, S. Ridge, C. Runnalls, R. Watts (again excellent papers!).

TROEDYRHIW.—Excellent—W. Jones, B. Jones.

WEMBLEY.—Excellent—B. Avon, J. Avon, A. Hobley, D. Hobley, R. Hobley, M. Hobley. WIGAN.—
Excellent—N. Bentham, A. Bird, M. Bird, S. Cafferty, A. Caldwell, J. Howarth, R. Johnson, V. Jones,
B. Leyland, J. Leyland, M. Lord, T. Lord, N. Martin, H. Ollerton, N. Ollerton, T. Ollerton, S. Peters, G.
Roberts. Very Good—J. Bird, L. Parr. WILLOWS GREEN (Chelmsford).—Excellent—R. Amos. WILLINGTON QUAY.—Excellent—E. Birkley, M. Kemp, M. Patterson, M. Sayers. Very Good—E. Wood.
Good—I'. Nellist. WORGESTER PARK (Surrey).—Excellent—R. Winkworth. WISHAW.—Excellent—
8. Armstrong. Very Good—M. Hunter.

YEOVIL.—Excellent—J. Boobier, J. Francis, M. Francis, \*R. Francis, M. Lodge, J. Parsons, S. Pippard, A. Sartin, F. Sharp, D. Shore, K. Stone, P. Luck. Very Good—M. Brice, R. Eglen, \*T. Haine. Good—D.

Finch. Well Tried-\*P. W. Bown, R. Parsons, J. Wright

#### INSTRUCTIONS FOR THE BIBLE SEARCHING WHICH APPEARS ON PAGE 28.

Fo those of ten years and over. Find the chapter and verse where the missing words appear. Write these missing words in their order. The First Letter of each word gives the four words which is the answer. Print these words in Capital Letters and remember that this is always true. These four words are found in a verse in Genesis 15. or 16. chapters, write this Verse in Full.

Those under ten years of age need only to find the chapter and verse where the missing words are and write these; also give the missing words in their order and where found in Genesis (see above instructions).

The whole verse need not be written.

If this is your First Attempt please say so. Send in your answer not later than April 10th, the earlier the better (Overseas later), give your name, age, town and Sunday School; if not attending a Sunday School give your home address. Put your answer in an unscaled envelope, put B.S. on the left hand side and affix 1d. stamp (not 2½d.). Post your answers to Mr. G. Taylor, 94, Freeman Road North, Leicester. Please note that the 10th of the following month after B.S. appears, is the latest date if results are to

appear in List of Names.—Editor

## A SUMMARY OF THE DECEMBER, 1945 BIBLE SEARCHING RESULTS. (Alphabetically according to Town).

|              |       |                            |                   |                  |              |                   | CONTRACTOR OF THE PARTY OF THE  |                            |                   |
|--------------|-------|----------------------------|-------------------|------------------|--------------|-------------------|--|----------------------------|-------------------|
| TOWN.        |       | Total No. of<br>Searchers. | New<br>Searchers. | TOWN.            | Total No. of | New<br>Searchers. | TOWN.  | Total No. of<br>Searchers. | New<br>Bearobers. |
| AUERDEEN     |       | 12                         |                   | EDINBURGH        | 14           | 7                 | MANCHESTER   | 7                          |                   |
| ABERKENFIG   |       | 1                          | _                 | GALSTON          | 1            | -                 | METHIL   | 11                         | 1                 |
| ADLINGTON    |       | 25                         | 17                | GLASGOW—         |              |                   | MIDDLESPROUGH  | 9                          | - Second          |
| ARMAGII      |       | 25                         | _                 | Baloroch         | 4            | -                 | MOUNTAIN ASH   | 4                          | -                 |
| ASHOILL      |       | 6                          | -                 | Catheart Road    | 01           | 2                 | MUSSELBURGH  | 10                         | 1                 |
| ATHERTON     | ***   | 35                         | 13                | GOVAN            | 10           | 2                 | NEWHALL  | 4                          | _                 |
| AYR          | 100   | 2                          | -                 | Kirkintilloch    | 17           | 4                 | OLLABERRY  | 0                          | 10 PA             |
| BATHGATE     |       | 16                         | 2                 | Parkhead         | 17           | 2                 | PAISLFY  | 1                          | -                 |
| BARROW       | ***   | 8                          | -                 | Partick          | AM           | 8                 | PENYGRAIG  | 3                          | -                 |
| BARRY        | ***   | 2                          | -                 | Springburn       | Q            |                   | PORT GLASGOW   | 36                         | 1                 |
| BELFAST      | ***   | 20                         | 4                 | No Address       | 1            | -                 | PORTSLADE  | 3                          | -                 |
| BEXHILL      | ***   | 1                          | -                 | GREENOCK         | 20           | -                 | SHOTTS   | . 1                        | -                 |
| BIRKENHEAD   | ***   | 14                         | 2                 | HAMILTON         | . 5          | 1                 | SOUTHPORT  | 3                          | 1                 |
| BIRMINGHAM   | 11000 | 16                         | -                 | HARTSHILL        | . 5          | 1                 | SOUTH SHIELDS  | . 7                        | -                 |
| BLACKEURN    | ***   | 4                          | -                 | HAYDOCK          | . 11         | 2                 | SPALDING   | . 1                        | -                 |
| BOLTON       | ***   | 10                         | 1                 | HAYES            |              | -                 | SHIRLEYWICH  | . 2                        | -                 |
| BRADFORD     |       | 2                          | -                 | HEREFORD         |              | 7000              | STANMORE   |                            | -                 |
| CARDIFF-     |       |                            |                   | ILFORD           |              | -                 | ST. HELENS   | . 19                       | -                 |
| Kings Road   | 200   | 10                         | -                 | INNERLEITHEN     | . 7          | 1                 | STOKE  | . 16                       | -                 |
| Ely          | ***   | 8                          | -                 | KINGSTON—        |              |                   | (Mount School)   |                            | 1                 |
| Ely C.H      | 2000  | 12                         | 2                 | Burritt Hall     |              | -                 | TROEDYRHIW   | . 2                        | -                 |
| CARLISLE     | 1654  | 4                          | 2                 | _ Bonner Hill    |              | 1                 | WEMBLEY  |                            | -                 |
| CHEADIR      | ***   | 5                          | -                 | KNOCKNACLOY      | . 2          | -                 | WIGAN  | 21                         | 1                 |
| CLYDERANK    |       | 12                         | 2                 | LEICESTER—       | -            |                   | WILLOW GREEN   | 1                          |                   |
| COATHRIDGE   |       | 4                          | -                 | Broomfield       | . 39         | _                 | WILLINGTON QUAY  | ß                          | 1                 |
| COWDENBEATH  | ***   | 18                         | Y                 | Northfield       | . 44         | 8                 | WORCESTER PARK   | 1                          | -                 |
| 0            |       | 1                          |                   | I'ppingham Road  | 3            | _                 | Misuva   | 10                         | 3                 |
|              | 55.55 | 5                          | 3                 | LEIGH            |              | 2                 | YEOVIL   | . 19                       | 2                 |
| CROWBOROUGH  | ***   |                            |                   | LIVERPOOL        | . 20         | 2                 |  |                            |                   |
| CULLEYBACHBY | (600  | 15                         | 4                 | LONDON           |              | -                 |  |                            |                   |
| DERRY-       |       | 10                         | .0                | MACDUFF          | . 12         |                   |  |                            |                   |
| Iron Tent    | (444) | 16                         | '3                | MAIDSTONE-       | 17           | 1                 | Including late arrivals  | 929                        | 112               |
| Siufin       | 2000  | 17                         |                   | Assembly Class   | . 17         | 1 3               | as at foot.  | 928                        | 112               |
| Douglas      | (***) | 1                          |                   | North Down Close | 4            | 9                 | The state of the s |                            |                   |
|              |       |                            |                   |                  |              |                   |  |                            |                   |

NEXT BIBLE SEARCHING (For Instructions see page 27.)

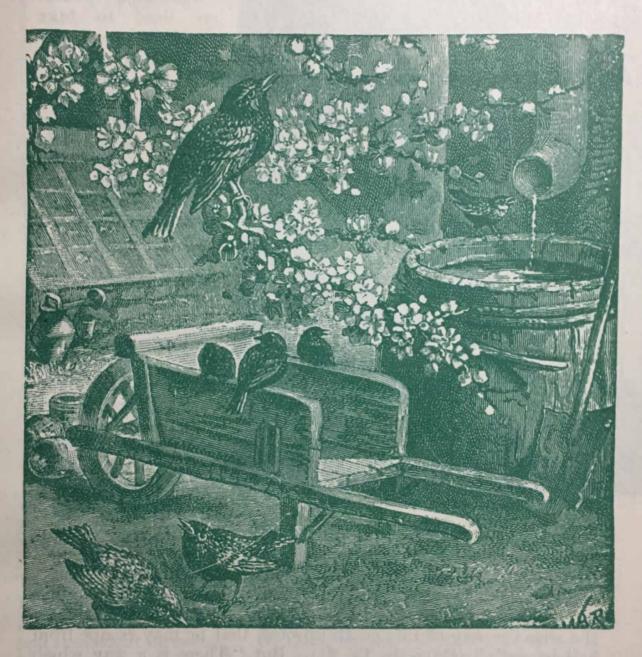
|     | Searchers will find the missing         | words | in the | Authorised | ley to missing words.                  |
|-----|---|-------|--------|------------|--|
| 1.  | shalt call His name Jesus               | ***   | ***    | Ма         | etthew. In chapters 1 or 2.            |
|     | I know whom I believed                  | ***   | ***    | 2 1        | 'imothy. In chapters 1 or 2.           |
| 3.  | That ye love another                    | ***   | ***    | Jol        | hn (Gospel). In chapters 15. or 16.    |
| 4.  | God commendeth His love toward          | ***   | ***    | Ro         | mans. In chapters 5. or 6.             |
| 5.  | If be for us who can be against us?     | ***   |        | Ro         | mans. In chapters 7. or 8.             |
| n.  | Believe the Lord Jesus Christ           | ***   | ***    | Ac         | ts. In chapters 15. or 16.             |
| 7.  | Then said He unto me, Fear not          | ***   | ***    | Da         | niel. In chapters 10. cr 11.           |
| 8.  | God loved the world                     | ***   | 742    | Jo         | hn (Gospel) In chapters 2. or 3.       |
| 9.  | This is life to know Thee the only true | God   | ***    | Jo         | hn (Gospel). In chapters 16. or 17.    |
|     | Lord, I pray Thee his eyes.             |       |        | 2 1        | kings. In chapters 6. or 7.            |
|     | Re and know that I am God               | ***   | ***    | Ps         | alms. In chapters 45. or 46.           |
| 12. | Is there anything hard for the Lord?    | 111   | ***    | Ge         | nesis. In chapters 17. or 18.          |
| 13. | peace I give unto you                   |       |        | Jo         | hn (Gospel). In chapters 14. or 15.    |
|     | I will fear no for Thou art with me     |       |        | Ps         | alms. In chapters 23. or 24. M. PARRY. |

The following were received too late to be inserted in the List of Searchers in their order:—
MAIDSTONE (North Down Close).—Excellent—R. Bent (sorry to hear you have been ill Rosemary!).
LEIGESTER (Broomfield Hall).—Excellent—C. Howard, Isabel Rae. COOKSTOWN.—Excellent—A. 8.
Bell, C. W. Bell, F. E. Bell, W. D. Bell, William Bell, M. Anderson.

<sup>•</sup> Denotes first attempt.

# SPRING TIME.

on the earth; the time of the singing of birds is come (Sol. Song 2, 12, 13).



God sends the sunshine showers to bring the seed to birth,
God gives the lovely flowers to beautify the earth;
God gives us fruitful seasons, and fills our hearts with food;
And thus for many reasons we know that God is good.

A.F.

## The Gospel Tram.

OST boys and girls who read this will have seen a tram car, possibly in the town in which they live, but, strange as it may seem, there are those who have never seen one. The



This model is a little different from the ordinary tram.

photograph will help them to see what a tram is like. Trams are used to take people to and fro along the tram routes and for this they have to pay a fare.

The model in the picture is a little different from the ordinary tram car; it has been made so, that we may learn some lessons from it.

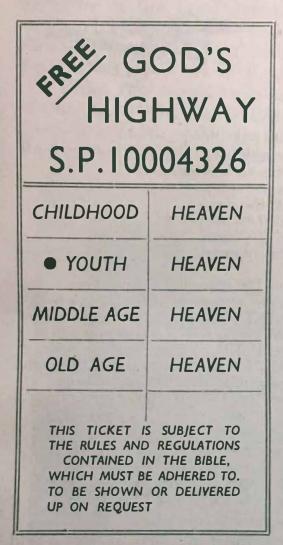
Firstly, if you look carefully, you will see that on the front is the word "Heaven." I am sure we all want to go there. Then there is a difference between tram cars and the means by which Heaven is reached. There is nothing to pay to get to Heaven.

Salvation is for everybody, and is without money and without price. The Lord Jesus Christ has paid the full fare so that we may travel free, which He did by giving His life for sinners on Calvary.

Now look at the route number. You will see that it is "number 1." This tells us that there is only one way to Heaven. "To the wise the way of Life goeth upward, that he may escape from hell beneath" (Proverbs 15. 24). But "There is a way which seemeth right unto a man, but the end thereof are the ways of death" (Proverbs 16. 25).

If you look very closely, you may see the number of the tram, it is also "number 1," which tells us not only that there is but one way to Heaven, but only one *Person*, for the Lord said, "I

am the Way," and He only can take us there. In Isaiah 43. 11, we read, "I, even I, am the LORD; and beside Me there is no Saviour."



Note now the trolley pole (that is the arm at the top of the car) which makes contact with the overhead wire, whence the car receives the electric power by which it is driven; this power also gives light inside. The power to become children of God comes from above; it comes from God, and it is by contact with Christ that we have light in ourselves. Immediately the bow collector is taken from the overhead wire, all power and light is gone. Again there is a difference between the tram car and believers. All who have made contact with Christ by faith can never be separated from Him and from His love (Romans 8. 35-39).

Let me draw your attention to the tram ticket. You will see from the illustration that it is headed "God's Highway," and that it is "free." Now note the letters and numbers. "S.P."

stands for "saved person," because it is only saved people who

are going to Heaven-no others.

Then see when you enter "God's Highway," either in child-hood, youth, middle age or old age, that the destination is Heaven in each case. It is best to start the journey now, whatever age

you may be.

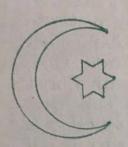
The ticket in the illustration has been punched at "youth." It is good to start for Heaven early. The only conditions which have to be complied with are those contained in the Scriptures, and they are really very simple. "Believe on the Lord Jesus and thou shalt be saved." By doing so you will start the journey to Heaven now, and will be on the right track. In Heaven you will enjoy the presence of the blessed Saviour for ever and ever.

A. J. S. THOMPSON.

## Creation's Glory.

We love the sun that shines so bright,
The mighty ball that gives us light;
The sunrise and the sunset too,
With lovely tints of varied hue.
But some are BLIND and cannot see
The glorious sun the same as we,
And some, who see, forget the line,
"Tis God who makes His sun to shine."





We love the moon with its pale glow,
The myriad stars that twinkle so;
God knows them all—gives each a name,
He knows each one of us the same.
God made the sun to rule the day.
The moon the night, and they obey,
Yet man, the creature of His hand,
Will DISOBEY His plain command.



We love the changing seasons too,
The works and ways of God we view;
The WINTER with its frost and snow,
The smiling SPRING we welcome so;
The SUMMER with its sunshine clear,
And AUTUMN bounties crown the year.
The voice of thanks to God we raise,
For they are DUMB who never praise.

A. FOSTER.

### Travel Talk Ho. 29.

"AND SO WE CAME TO ROME."

Rome was probably the most important city of the world at the time the Lord Jesus was on earth, so that a visit there is of more than ordinary interest to us. Many disciples of the Lord lived there in early days, and the Apostle Paul was a

prisoner there for some years.

The title of this talk is taken from the account of the journey of the Apostle Paul to Rome which you can read in your Bible, in the last chapter of the book of the Acts of the Apostles. In the city of Rome to-day there are many remains of buildings and monuments which were erected nearly 2,000 years ago, and are silent links with those early times.

As we read some of the epistles written by Paul whilst a prisoner, we can imagine a grey haired man feeling the cold (because he asks for a cloak), and realising his need of the Word of God he asks Timothy to bring the parchments to him. Our hearts are touched as we read, "At my first defence no one took my part, but all forsook me: may it not be laid to their account"

(2 Timothy 4. 16). Although he was forsaken by his earthly companions what a lesson we have as he tells us "but the Lord stood by me, and strengthened me!" This can still be the experience of believers in the Lord Jesus to-day, for His promise still holds good, "I will in no wise fail thee, neither will I in any wise forsake thee. So that with good courage we say, the Lord is my Helper; I will not fear: what shall man do unto me?" (Hebrews 13. 5, 6).

From the records available, we learn that many thousands of Christians were put to death in Rome, because they would not deny their Lord, and there is little doubt that the beloved Apostle Paul suffered death as a martyr in or near that city. The Coliseum



The ruins of the Coliseum in Rome, where multitudes of Christians have been put to death.

was the place where many of these early disciples met their death. It was a huge building surrounding an oval shaped arena and inside were rows of seats for the people, rising in tiers up to the walls like a huge grandstand. An Italian guide is to show us the ruins of the place, and as we stand in the arena listening to him we are taken back nearly 1,900 years. We have visions of 50,000 people sitting or standing waiting for the "sport" to begin. The Emperor is also there in a central position surrounded by many notables of the day. The Romans were cruel and considered human life cheap, so the programme includes well-armed gladiators who will fight to kill each other, and fights with fierce wild beasts from Africa also add to the amusement. Thousands of men have lost their lives in this way, trying to win fame and applause from men.

The guide continues to tell of various incidents, but the story that interests me most tells of braver men and women who are

brought unarmed to face the wild beasts. These are followers of the Lord Jesus Christ, and it was considered good sport to put them into the arena and watch the hungry wild beasts come and tear them to pieces. Some were crucified before the wild beasts were set upon them. Their only "crime" was that they had confessed to being believers in the Lord Jesus Christ. They had been given the opportunity of saving their lives by denying their Lord, but believing the truth of the Lord's words as recorded in Matthew 10. 39, "He that loseth his life for My sake shall find it," they chose to confess Him before men.

Their example is surely a stirring rebuke to lukewarm disciples of the Lord Jesus to-day. Many trusted the Saviour as a result of the faith shown by the martyrs in those far off days, and ran the risk of meeting a similar end. How thankful we should be that those dark days are past, and any one may trust the Saviour without fear of such persecution and death. Perhaps it is the ease and simplicity of being saved which makes so many boys, girls, and grown ups careless about it. God says, "Behold, now is the acceptable time; behold, now is the day of salvation."

## A Young Soul Winner.

"THERE'S no God" declared a little maiden vehemently, as she conversed with little May who was just seven years of age. "Oh yes, there is," was the emphatic reply. "If there was no God then you wouldn't be

F.W.P.

alive." "Well," said her companion triumphantly, "God wasn't born." "God is a Spirit," May replied, "but the Lord Jesus was born a little baby boy, and grew up and died on the Cross because we were sinners. We would never get to heaven if He hadn't died." The little girl began to be interested and little by little May told her the story of the Cross, that if she would confess to God that she was a sinner and believe that the Lord Jesus died to put away her sin then she would be saved.

As May related the above conversation her face lit up as she

said, "She got saved that day."

Dear boys and girls have you ever told anyone how to be saved? Of course you must be saved yourselves first, before you can have the joy of leading others to the Saviour. But when you are saved then tell others of Him.

When Jesus has found you tell others the story, That your blessed Saviour can be their Saviour too. And pray that your Saviour will take them to glory, And prayer will be answered, 'twas answered for you.

As May finished telling of her companion she said quite wistfully, "But, I am not baptised yet."

I wonder how many of our readers have ever thought about this! Is there a "but" in your story. Many of you no doubt will be able to say. "Oh yes, I am saved and know it." However it may be that like little May you will have to add, "But, I am not baptised yet." Do think of this important step and will you read carefully, Matthew 28. 19, 20, and Romans 6. 4? When you have been baptised you will be able to sing from the heart:—

Buried unto Christ in water, In His grave ourselves we view, Buried thus, our old life ended, Raised to walk in life anew.

ROSE DYER.

## Camp Memories.

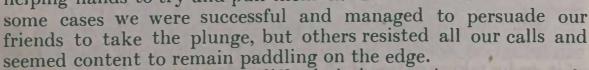
EXPECT many boys and girls have happy memories of days spent at camp, in the country or by the sea, and of gatherings in tents and the open air, to hear stories from God's word about the Lord Jesus Christ and what He taught. You will remember that quite a number of the stories and parables which the Lord Jesus Himself told to the people who listened to Him were about the things which were happening around them every-

day in the country and at home, and He taught them spiritual lessons by bringing to their notice these ordinary everyday

events.

Now I want to tell you about one or two things which happened at our camp, from which we were able to take spiritual lessons.

One day we went down to the sea, and soon most of us were enjoying a swim; but we noticed that several girls had only come as far as the edge of the water, and were standing there shivering, trying to make up their minds to come in. We called out words of encouragement, told them how we were enjoying it, and held out helping hands to try and pull them in. In



This reminded us how difficult it is sometimes to persuade other people to come and enjoy with us the love of God, which is

#### OVERSEAS BIBLE SEARCHING RESULTS.

There is no space for the insertion of these this month. God willing they will appear in May issue.

like a mighty ocean. We tell them of His offer of salvation, and ask them to accept it, but still they seem to prefer to stay "on the edge of things," and never really decide to accept the Lord Jesus Christ as their Saviour. God will never force anyone to come to Him, it must be of our own free will that we accept His love. We might perhaps have been able to force the girls to come into the water by picking them up bodily and carrying them in. but we cannot make anyone accept God's love.

Then another lesson in connection with swimming was this. Some of the teachers and bigger girls were trying to teach the vounger ones to swim, and we found that it was difficult to persuade the non-swimmers to trust themselves to us, and to the lifting power of the water, and not to struggle in trying to keep afloat. Is not that just like the way some boys and girls, and grownups too, try and struggle and work hard for salvation instead of trusting in the Lord Jesus and His power to save? If we will but trust ourselves to Him, He is able to save and keep us now and always, and will never let us down. During the week the boys were at camp they had also gone bathing and one of the teachers was helping a boy to swim when along came a heavy wave and knocked them both over! In that case the strength of the teacher was evidently not sufficient to hold the boy up; but nothing like that can happen to anyone who has trusted in the Lord Jesus. His strength and power are all-sufficient to keep us from falling if we commit ourselves to Him.

Another day when we were on the beach one of the girls picked up a round smooth green stone. On examining it we realised that it had once been a jagged piece of broken glass and that all the tossing and tumbling about by the waves had gradually knocked off all the rough corners and smoothed out irregular surfaces, until it was now quite different in shape, and much nicer to look at. This reminded us of the fact that even the troubles and trials which God may allow His children to pass through, which are unpleasant at the time, like being tossed about by the waves, are all designed by Him to knock off our rough corners, all those little tempers and naughty habits, and make us happy, pleasant people, who will bring joy to Him and to those around us.

Let us all try more in the future to learn all the lessons we can from God, whether by reading His Word, hearing others speak of it, or by taking notice of all the everyday happenings around us, and letting them remind us of what the Lord Jesus has done, is doing, and will do, for us.

J. LEAMY.

## The Great Indian Chief



The Great Chief of the Indian Village had been a great warrior and hunter in his day.

(See next page)

## The End of the Trail.

HE Great Chief of the Indian Village lay dying. He had been a great warrior and hunter in his day; sometimes going for long expeditions alone. There were many rumours and whisperings in the Indian village about the hidden treasure of which only the Great Chief knew the secret. Would the secret die with him, or would he reveal it? No one knew.

The Chief gathered his family together for a farewell message. He reminded them that he had been a great hunter, and many times he had gone alone to his happy hunting grounds. This time he was going on his last journey, and he was going alone. His family loved him, and were sad at these words. He then asked all his family to leave him except his two sons. At his request his sons went nearer to their father and he commenced to tell them the secret of where the hidden treasure lay. Both sons, after his departure, had to make the journey. He gave them explicit instructions telling them that after they had gone beyond their own happy hunting grounds they would come to a place where two ways met. One way led on up a narrow mountain trail that was steep and hard, the other way led through a most beautiful valley pleasing to the eyes. He cautioned his sons to take the narrow mountain trail at the end of which at the foot of the mountains on the other side was the hidden treasure.

Not long after this the Great Chief died, and after his burial his two sons with their favourite horses commenced their journey.

The second day they came to unfamiliar ground, but following their father's directions, in the late afternoon, they came to the place where the two ways met. The older son said to his brother, "It is just as our honourable father told us, here is the narrow mountain trail he has bidden us to take." The younger son did not answer; his eyes were towards the path leading into a most beautiful valley,—its green grass, trees and flowers looking so fresh and luxuriant. He felt a bit tired of the way, and here was something which was a delight to the eyes. His brother's voice again fell on his ears, "Come, it is getting late, let us continue our journey over the narrow mountain pass." The younger brother remonstrated, "Look," he said, "this valley leads over to the other side of the mountain, and it is much more pleasant, our honourable father never tried this way, but I shall take it, and meet you on the other side." The older brother endeavoured to persuade him, but to no avail, the younger brother was determined to have his own way. With sorrow the older son watched his brother gallop off into the beautiful valley, and then he turned and began to ascend the mountainous pathway. The way became more difficult and narrow the higher he ascended. He could no longer ride on his horse, but had to tether it and continue alone. There were large boulders in the way which he had to push aside. Part of the journey which cut through the mountains was very dark, but the older son pushed on, and was refreshed by cooling drinks from the mountain torrents. Finally he came to the end of the trail at the other side of the mountain, and located without any difficulty the cave in which was hidden the secret treasure. The reward was his for obeying his father's command.

The younger son continued at a wild gallop down through the valley paying no attention to the landmarks he was passing. He did not notice that the valley was no more luxuriant, but becoming barren. Sheer exhaustion finally brought this wild race to an end. He was tired and thirsty, and looking around for water he could see none. Fear clutched at his heart—why he was in a wilderness—how stupid he was not to have noticed this before! In vain he searched for water, but found none. He was lost. It was too late now to regret his mad choice. A carcase in the wilderness told the sad tale of this son's disobedience to his father's command.

You have also received a command for the path in life. The Lord Jesus has given this command to young people and others of to-day, who wish to make the "right choice" in life.

"Enter ye in by the narrow gate: for wide is the gate, and broad is the way, that leadeth to destruction, and many be they that enter in thereby.

For narrow is the gate, and straitened the way, that

As you look out on life as a young person, does this world with all its pleasures attract and allure you as did the valley the young Indian. Be not deceived as he was, for there is no real satisfaction, peace, joy, or eternal reward in the broad way which leadeth to destruction. If you want life with all its fulness—eternal life—choose the narrow way. The entrance to this way is through the Lord Jesus Christ, for He said, "I am the Way, and the Truth, and the Life, no one cometh unto the Father but by Me" (John 14. 6).

Are you anxious to know how your sins can be forgiven? how you can get right with God and live a godly life? Listen

to these words:-

The Lord Jesus, as the Lamb of God, became the atoning Sacrifice for sin on Calvary's cross. Through His death He satisfied Divine justice, and now God can righteously forgive all your sins, and give you eternal life if you will receive the Lord Jesus as your own Saviour (John 1. 12). You then enter the narrow way, and HAVING CHRIST you have God's unspeakable Gift.

A. N. URE.

## The New Life.

IMMIE was a little lad two years old, and was full of fun and mischief just like other little boys. One day he came running into the house with something clasped in his hand. "See what I'se got for you mum," he said, as he put his little surprise into mummy's hand. However, it did not stay there long, because his mother did not like furry caterpillars, so she dropped it on the floor.

Jimmie was rather disappointed, but his mother explained to him that little worms lived outside, and he should not pick them

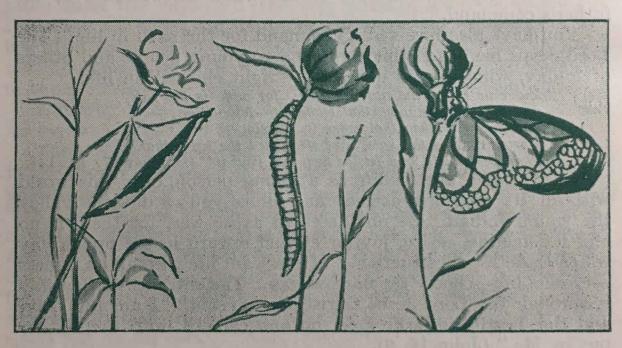
up.

Now let us see what happened to the little worm after mother

put him outside on the lawn.

Slowly he crawled up the bark of a tree, right up high among the leaves, and for a few weeks ate the leaves. This, Jimmie's father did not like. You see, this little worm was spoiling the tree.

One day he disappeared, but we found him hanging from the underside of one of the leaves. He had spun a little cocoon



Cocoon

Caterpillar

Butterfly

around himself, and was dangling there from a thin silken thread. He was in the cocoon for twelve days, and during this time did not eat. A great bodily change was taking place, he had life, but no liberty, therefore was a prisoner.

We know that nothing or no one likes to be a prisoner, but boys and girls, if as yet you have not accepted the Lord Jesus as your Saviour, you are a prisoner of Satan. You have natural life—yes! we agree with you, but you have not true life or liberty—if you have not eternal life. If you have not had your sins forgiven, you are sin's captive, you are in bondage to sin. But the Lord Jesus can give deliverance to the captive. Believe on the Lord Jesus Christ and thou shalt be saved.

One bright morning our little friend poked his head out of

one end of the cocoon and wriggled out.

Was he still a worm? Oh no! He had developed into a beautiful black and gold butterfly, so he spread out his wings and flew away.

This was the work of nature, and shows us how God provides

for all things that He has made.

When the Israelites were slaves in Egypt, held captive by Pharoah, the Lord made provision for them. He said, "I am come down to deliver them." They were saved by the blood of the Paschal lamb, which was sprinkled on the door posts and lintels, for God said, "When I see the blood I will pass over you." They were saved from judgment by the sprinkled blood, and afterwards freed from bondage by the power of God.

He also has made provision for us, to save us from sin and

its judgment, and that we might have life eternal.

You have heard many times in the Lord's Day school how God sent His only Son—the Lamb of God—to die on the cross of Calvary, where He bore the sin of the world. Those who believe can say, "He bore our sins there." Why not look to Him who on that cross died on your behalf, and by that look of faith you will have and know your sins forgiven. "If thou shalt confess with thy mouth Jesus as Lord, and shalt believe in thy heart that God raised Him from the dead, thou shalt be saved (Romans 10.9).

You will then have passed from death unto life—you who were prisoners of Satan, but now freed from Satan's bondage, will have become new creatures in Christ Jesus (2 Corinthians 5. 17).

We also read in John 14. 1-3 that the Lord Jesus has gone to Heaven to prepare a place for all who have believed on Him, and He will come back again to take them to be for ever with Himself. Like the cocoon who was changed into the butterfly, their bodies will be changed (to be like Christ's glorious body) in a moment, in the twinkling of an eye, and will be caught up to be with Him for all eternity.

If He should come to-day would you go? If you are saved you will. Boys and girls, do not neglect this great salvation, but

believe on the Lord Jesus and be saved TO-DAY.

HELEN YOUNG, HAMILTON, CANADA.

We much regret to learn that the names of Freda Holmes, of Leigh, Lancs. Margaret Briggs, Middleshorough, Betty Haudon and Thomas Hamilton of Bathgate were omitted from the names in Bible Searching Results. These will be included; in Honours List records.

## The Good Samaritan.

WHAT a lovely parable the Lord Jesus spoke, as given us in Luke 10. 30-35!

Firstly, we have the sad story of the man, who was going down from Jerusalem to Jericho—a steep, rocky road. Jerusalem was the city God had chosen, where His house was built, where He was worshipped. It is called "the city of the great King" (Psalm 48. 2), for it will be the capital from which the Lord Jesus will rule over the world. The man was going away from God, and



was pursuing a downward course. He fell among robbers, who stripped him and also robbed him, then beat him, and left him lying by the road side, half dead. He must have died if left to himself.

Presently a priest came along, saw him, and passed by on the other side. Then a Levite passed, and though he saw him, gave him no assistance.

How different the attitude and actions of the Samaritan! How beautifully the Lord describes

these, in a few graphic sentences! He, "as he journeyed, came where he was: and when he saw him, he was moved with compassion, a came to him, and bound up his wounds, pouring on them oil and wine; and he set him on his own beast, and brought him to an inn, and took care of him." Going away, he bade the inn-keeper to take care of the man, leaving some money with him, promising to repay him on his return should he spend more.

The man who fell among robbers is a picture of man, who was made in the image of God, after His likeness, and was given dominion here over fish, fowl, cattle and creeping things, as God's representative. He disobeyed God, and gave allegiance to the Devil. Thus he lost all; was stripped of his innocence, and has been beaten by Satan and sin until the likeness of God has been well nigh completely defaced. If left to himself, he must eternally perish.

The priest and the Levite speak of the law and service of God, which law commanded man to love God with all the heart, soul,

strength and mind; and to love his neighbour as himself; but gave him no power to do so. He had become so corrupt by the fall that this was impossible to him. God knew man could never keep his perfect law in his fallen state, but gave it to shew how weak and sinful man had become. It was "Our tutor to bring us unto Christ" (Galatians 3. 24). Learning his helplessness and hopelessness, the law brought him to realise his need of a Saviour.

Have you learned that you can do nothing for your own salvation? If so, you are just in the condition in which God will

save you.



He set him on his own beast, and brought him to an inn.

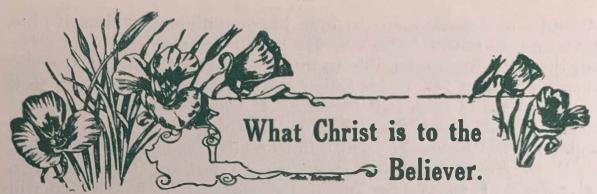
"For while we were yet weak, in due season Christ died for the ungodly" (Romans 5. 6).

Put your trust in Christ, and He will bind up those dreadful sinwounds; He will pour on the oil and wine. He will give you eternal life, and lift you up and seat you in heavenly places in Christ (Ephesians 2. 5, 6).

What is the inn a picture of to which the man was then taken, where he was taken care of? This surely suggests a church of God, wherein all saved sinners, after being baptized, should find a place (Acts 2.41). In such assemblies there are shepherds to feed and tend the sheep,

and to take special care of the young lambs. How lovely are the words concerning the good and great Shepherd in Isaiah 40. 11! "He shall gather the lambs in His arm, and carry them in His bosom." Oh, how He loves them! How tenderly He cares for them! This is the way He expects the under-shepherds to look after His lambs. Do not you, my young friend, long to be saved and in such keeping?

G. E. HORNE.



Christ is my Saviour, He saves for aye; Christ is my Manna—food for each day; Christ is my Healer, He giveth health; Christ is my Riches, He gives true wealth. Christ is my Shepherd, He loves His sheep; Christ is my Watchman, my soul He'll keep; Christ is my Lover, He's the best Friend; Christ is my Guide right on to the end. Christ is Creator—by what He spake; Christ is Sustainer—here all partake: Christ is Jehovah, the Covenant God; Christ is Redeemer—by precious blood. Christ means Messiah—to Israel sent:

Christ is the Witness, all should repent; Christ was the Offering, for sins He bled; Christ rose the Victor from 'mongst the dead.

Christ is the Day star, He'll come again; Christ is Almighty, o'er all He'll reign; Christ is the Amen, wonderful Name! Christ is Eternal, Christ is the same.

OVERSEAS BIBLE SEARCHING RESULTS.

SEPTEMBER, 1945, SEARCHING.

DUNEDIN (New Zealand).—Excellent—Francis King.

DECEMBER, 1945, SEARCHING.

BRANTFORD (Ontario, Canada).—Excellent—J. Bell (good paper Jeanette), K. Doholia,

\*D. Reid (well done Doren!), S. Reid, N. Seath, J. Thomas, M. Walker. Very Good—
P. McDonald, \*L. Pederson, J. Reid. HAMILTON (Ontario, Canada).—Excellent—L.

Sanderson, K. Smith, E. Cook. TORONTO (Canada).—Excellent.—\*C. Caulson, \*M. Hominuk,
B. Madill, J. Madill, M. Madill, R. Madill, J. Pairman, B. J. Paterson. Very Good—D. Hoolley,

\*G. Langford, \*M. Piper, \*S. Piper, A. Todd, E. Todd. VANCOUVER (B.G., Canada).—

Excellent.—J. Stirrat. VICTORIA (B.G., Canada).—Excellent.—B. Farndon, R. McLeman,
M. Merriman.

M. Merriman.

RATON (New Mexico, U.S.A.).—Excellent—A. Cox, D. Cox (welcome!).

PRATON (Australia).—Excellent—J. Irvine, \*G. Kennedy, \*R. Kennedy

(fine paper, Ruth!), J. Megaw, M. M. Pearson.

\* Denotes first attempt.

The Arch of Titus in Rome, which was built to commemorate the destruction of Jerusalem.



The Jews rejected the Lord Jesus as their Messiah and King, and He foretold the destruction of their City and Temple. Of the Temple He said, "There shall not be left here one stone upon another that shall not be thrown down" (Matthew 24. 2). They afterward cried "Away with Him, crucify Him, we have no king but Caesar."

## Travel Talk Mo. 30.

THE MEMORIAL ARCH TO A VICTORY MARCH.

WHEN the Roman Empire was very powerful in the early centuries, the various Emperors and Senate made a practice of building monuments and Arches as a reminder to later generations of important events during their reign, and Rome to-day is rich with the remains of many of these erections. One of them is the Arch of Titus (see picture on front cover), which was built specially to commemorate the destruction of Jerusalem in A.D.70, that is, about thirty-seven years after the Lord Jesus had spoken to His disciples about it.

We know that the word spoken by the Lord must come to pass, for His word had also the authority of His Father, and of God's word it is said, "Thy word is truth." We can read what the Lord Jesus said in the New Testament about the destruction of Jerusalem, in the words recorded in Luke 19. 41-44. The evidence of history, and the Arch of Titus which remains to-day as a memorial, show how completely the prophecies spoken by the Lord concerning the destruction of Jerusalem

have been fufilled.

The Roman Army was commanded by a General named Titus and it beseiged the city, cast a bank against it, and finally overcame and destroyed it. Hundreds of thousands of Jews died during these terrible times, and many thousands were taken away as slaves, events which are a lasting witness to the world of the penalty for sinfulness and rejection of the Lord Jesus Christ.

It is remarkable to read what happened to the Temple at this time, for the Lord had also spoken of it to His disciples, saying, "See ye not all these things? Verily I say unto you, there shall not be left here one stone upon another, that shall not be thrown down" (Matthew 24. 1, 2). We realise afresh how the Lord's words must come to pass, as we learn that the Roman General had given instructions that the Temple was to be spared, but the Lord had spoken, and man's word is powerless when opposed to God's will. The Temple was first set on fire by the soldiers, and afterwards pulled down. Eventually the site on which the Temple was built was entirely cleared, so that there was not one stone left upon another, and in its place a Moslem Mosque has been built.

The terrible judgment which came upon the Jews should be a solemn reminder to all those who reject the Lord Jesus Christ to-day, and continue in their sinful ways. "He that believeth on the Son hath everlasting life, but he that believeth not the Son shall not see life; but the wrath of God abideth on him" (John

3. 36 A.V.). If every sinner could only realise to a greater extent what the wrath of God means, there would be an urgent desire to accept the way of escape. Any person young or old can know the mercy of God now, and be assured of eternal life by believing on the Saviour.



The Golden Lampstand, taken by the Romans from the Temple in Jerusalem. This picture is taken from the carving on the Arch of Titus.

At the time that Jerusalem and the Temple were destroyed, some of the furniture from the Temple was brought away, including the golden lampstand. These relics were evidently carried in a triumphal victory march through the streets of Rome when Titus returned. The Arch of Titus which was built to commemorate the event has on the inside of the stone arch some sculptures in relief which include a view of the golden lampstand being carried in the procession. This is the only known pictorial record of the lampstand, and any pictures or models of it today are fashioned according

to what is seen on the Arch of Titus, which agrees with the Scriptures.

Scripture tells us that in a future day another greater Temple will be built in Jerusalem, and the Lord Jesus Christ will come back from Heaven, and His feet shall stand in that day upon the mount of Olives, which is before Jerusalem (Zechariah 14. 4), and He will reign over the earth in righteousness (Isaiah 32. 1), but there is not time to say more about that now.

F.W.P.

#### THE LORD SHALL BE KING OVER ALL THE EARTH (Zechariah 14. 9).

Jesus shall reign where'er the sun Doth his successive journeys run; His kingdom stretch from shore to shore, Till moons shall wax and wane no more.

Peoples and realms of every tongue Dwell on His love with sweetest song; And infant voices shall proclaim Their early blessings on His name. For Him shall endless prayer be made, And endless praises crown His head; His name like sweet perfume shall rise With every morning sacrifice.

Then come, O Lord, to earth again, Come, take Thy mighty power and reign; Bid tumults, wars and conflicts cease, Rule far and wide, Thou Prince of Peace.



WAS about eight years old when I remember my mother teaching us to repeat a hymn while she was getting us ready for bed.

I felt I could not repeat the following words—

"Should death itself my sleep invade, Why should I be of death afraid?"

I was afraid, for I knew I was not saved, and if death came, I would be lost eternally.

Then there were another two lines that made me think, they

were:

"Teach me to live that so I may, Look forward to His Coming Day."

I was much concerned when I thought of His coming, knowing,

as I did, that I was not saved.

My father and mother were saved and often read the Scriptures and prayed with us when we were young. I knew I was a sinner and needed to be saved.

I was told that the Lord Jesus was coming to the air some day to take those who were saved to be for ever with Himself,

and if I remained unsaved I would be left behind.

When I was eight and a half years old, my mother was called to be with Christ. This caused me to think more seriously of eternal things, as I knew I must be born again or we would be parted for all eternity.

Father used to read to us the Scriptures, and once he read from "The Revelation" of the terrible judgments to come, and I

trembled at the thought of what was coming.

How I longed to escape the Great White Throne Judgement (Revelation 20. 11), where He, who sat on the Throne, would open the Book of Life, and whosoever was not found written in the Book of Life was cast into the lake of fire (Revelation 20. 15).

My brother was saved when he was ten years old, and he tried to explain to me how I could be saved by believing on the Lord

Jesus.

I couldn't understand what it meant to believe, as I thought I always believed, and yet I knew I was still "a stranger to grace and to God."

God's Holy Spirit was working in my young heart, seeking to bring me to the Saviour, who was waiting with outstretched arms to receive me.

One night I became very anxious to be saved and could not rest, nor could I understand how I could believe and be saved. I was so distressed that I wept.

It was then that father said to me, "Don't you want to be saved?" I said, "Yes!"

Then father repeated the words of John 6. 37, "Him that cometh to Me I will in no wise cast out."

So that night I said from my heart, "Lord Jesus, I come," and I rested on His promise, "Him that cometh to Me I will in no wise cast out."

"I came to Jesus as I was,
Weary, and worn, and sad;
I found in Him a resting place,
And He has made me glad."

I can with joy look back to that night when I passed out of death into life. I can truly sing—

"O happy day, that fixed my choice On Thee, my Saviour and my God."

Now I can, with other redeemed ones, look forward to the coming of the Lord, when He will take us home to be with Himself, and be like Him for ever.

I do long that my story may be used by God to awaken many to the danger of death and judgment which lies before all who are not saved. The Lord Jesus is coming for His own; will you be ready to go with Him? You can be by receiving Him as your own Saviour (John 1. 12).

M. E. FULTON.

## E TUISE Choice For young believers.

In the first book of Chronicles, chapter 4. verses 9 and 10, we read about a certain man. He was not a king, nor a great leader, nor had he won battles. He was not a prophet, nor a priest. We do not read of any mighty deeds that he did, nor of cities that he built. But he was a praying man, and just prayed for something that he considered very important. We do not even know the names of his father or his mother. But in verse 9 we can see that his mother had been very unhappy. When her baby was born she called him "Jabez," which means, sorrowful.

Well, little Jabez grew up and found out things, and then he made a decision. It is when we are growing up and understand more and more of the world around us that we have to make decisions and have to choose. Now Jabez saw that evil would cause sorrow and unhappiness in his own life. There are many kinds of sorrow, but the sorrow caused by evil and evil wavs is bitter and does not do anyone any good. So Jabez determined to ask God to keep him from evil, that it might not be to his sorrow. He knew that he could not keep himself, but he had confidence in God's power to do so. "And God granted him that which he requested." How simple! What a great thing he asked, and how readily it was granted. He asked according to God's will. But I think if we had lived beside Jabez we would have known the kind of man he was; a faithful, dependable sort, always putting God's things first, not popular perhaps with the crowd, but someone who was always there if you needed help. "Jabez was more honourable than his brethren," and he and his God must have had many precious secrets between them. He was in fellowship with God.

In John 17., the Lord Jesus is praying for His disciples whom He dearly loved. He was leaving them, and it is when people are leaving us that their last messages are extra important. He said to God—"I pray not that Thou shouldest take them from the world, but that Thou shouldest keep them from the evil." No one knew what evil was in the world so well as He did, though He was entirely apart from sin. All around us now we have uncertainties, troubles and fears of this and that, and are surrounded by evil, but if, like Jabez, we look up, knowing our own weakness, we shall find God all-sufficient.

Philippians 4. 6 gives us good advice, "Let your requests be made known unto God." How? "By prayer and supplication with thanksgiving," and the result will be that "the peace of God which passeth all understanding, shall guard your hearts and your thoughts in Christ Jesus." The word "guard" has in it the thought of "keeping as with a garrison," and when we think of a garrison we picture a company of soldiers in a fortified place ready to repel any assaults of adversaries. Imagine our very thoughts being garrisoned against the evil as well as our hearts. This marvellous protection can be ours by making our request in faith, and are we not foolish if we do not give effect to what verse 6 asks us to do?

"Kept, safely kept;
My fears away are swept;
In weakness to my God I cling,
Though foes be strong I calmly sing,
Kept, safely kept."

# Which means "To buy back." TWICE HIS.

YOUNG lad had learned wood carving. He had been at it for some time, making simple things first and then as his skill increased he began to make larger articles. One day he thought he would make a boat, and so he set to work as carefully and skilfully as he could. At last his little ship was



complete, and as it was a fine day he set off for the beach to sail his little boat for the first time. Can you think how thrilled he would be as he walked down the village with his treasure under his arm? Alas, his pleasure was short lived for although he knew quite a lot about wood carving, he did not know much about tides; and as the little barque sailed merrily on the waves, the tide gradually took it right out of reach. Dismay and consternation filled him and his young

heart was just broken, especially since the boat which he had

lost was his own workmanship.

Some time later he was passing along the village street, when he saw in a shop window, a boat for sale. Looking closer he recognised it—it was his very own boat, but alongside was a ticket marked 5/-. The incoming tide had washed it back on to the beach, where someone finding it had sold it to the shopman Nothing daunted, the lad went into the shop and asked to have his boat. He told his story to the shopman, but he replied, "I can't have all the village boys coming along with that story, if you want your boat back you must pay 5/-." He was very disappointed, but when he arrived at his home and poured out his story to his mother, she was very sympathetic and gave him 5/-. to buy back his boat.

He ran to the shop and paid the 5/- and received his little boat. How happy he was, the boat was doubly dear to him now, and as he grasped it firmly under his arm, he was heard to say, patting it tenderly, "Thou are twice mine, now!" How was this? Firstly, because he had made the little boat, and secondly because he had bought it back again after it had passed to another owner.

There are some boys and girls on whom God can look and say with great tenderness and love, "You are twice Mine now." Once His, because He was their Creator—their Maker, they were His creatures, but they were severed from Him through sin and drifted away and came into the possession of another, even Satan: but now because they have been REDEEMED, or BOUGHT BACK again by the precious blood of the Lord Jesus Christ, they are twice His. The apostle Peter, writing to some children of God, said, "Ye were redeemed, not with corruptible things, with silver or gold, . . . but with precious blood, . . . the blood of Christ." Five shillings could never have bought us back, nor ten shillings or thousands of pounds, for in the Bible these words are written, "None can by any means redeem his brother, nor give to God a ransom for him: For the redemption of their soul is costly, and must be let alone for ever " (Psalm 49. 7, 8).

Although He is our Creator, and we are the offspring of God, yet being His creatures will not avail us anything. Those who are not saved, who have not put faith in Christ as Redeemer, will

be lost for ever.

I am very glad that the Lord Jesus Christ paid the price for me, and now I can say that I am twice His, once as His creature, but now as a redeemed one. Can you say this? Will you as a lost sinner believe in your heart to-day that His precious Blood was poured out on Calvary that you might be BOUGHT BACK? Accept the Redeemer now!

### BIBLE EXERCISE (For older Scholars)

What good man sold his field, And gave the price away? A man who loved the world, And left the narrow way. Another man, though he was poor, Made men rich in his day.

Teachers should seek to find the answers themselves, and encourage their scholars to bring their answers to them. The answers will be given next month.

OVERSEAS BIBLE SEARCHING RESULTS.

DECEMBER, 1945, SEARCHING.

MELBOURNE (Australia).—Excellent—H. Carroll, F. Child, B. Heyden, D. Drew,
J. Le Huray, E. Martin, N. McKenzie, I. Turriff. Good—M. Carroll, \*J. Day, S. Le Huray.

HAMILTON (Canada).—Excellent—B. Gibson.

ROSLYN, DUNEDIN (New Zealand).—Excellent—F. King.

MARCH, 1946, SEARCHING.

TORONTO (Canada).—Excellent—B. Madill, B. Paterson, \*J. Scott, R. Wooley. Very Good—B. Browning, J. Madill, R. Madill, \*M. Ramshaw, \*R. Ramshaw, E. Todd, A. Todd, Good—M. Piper (well done Toronto!).

\* Denotes first attempt.

## EAGLES' WINGS MAR., 1946 BIBLE SEARCHING RESULTS.

(HIGHEST EVER !)



Once more the total number of searchings (1,167) exceeds one thousand, including 221 new searchers (to whom we give a hearty welcome). \* Denotes

It is regretted that a number of searchings have been lost in the post. If Superintendents will kindly compile lists of those who have submitted searchings and whose names do not appear below, these can be used for Honours Certificate purposes and a supplementary list published in due course. SEE PAGE 47.

purposes and a supplementary list published in due course. SEE PAGE 47.

ABERDEEN.—Excellent—\*D. Brown, A. Cowie, D. Cowie, H. Duncan, \*N. Gatt, \*E. Low, R. McLeod, J. Roberts, M. Roberts, F. Robertson, T. Robertson, E. Thomson, A. Thomson, \*S. Thomson. Very Good—L. Cowie, G. McLeod, A. Smith (well done Aberdeen!). ABERKENFIG.—Excellent—\*B. Chapman, \*J. Chapman, G. D. Williams. ADLINGTON.—Excellent—B. Edwards, E. Ford, J. Harding. ARMAGH.—Excellent—E. Clarke, G. Clarke, J. Clarke, John Clarke, Mc. Clarke, S. Lester, H. Lewis, A. Lockhart, B. McConnell, V. McKenna, M. Mills, C. Roleston, J. Short, D. Thompson, \*S. Thompson (well done Samuel!), M. Todd, C. Whilding. Very Good—J. Clare, H. Hodge, \*J. Livingstone, D. Lockhart, M. McKnight, E. Pallett, K. Pallett, \*A. Plock, D. Todd, J. Winder. Good—K. Murray. ASHGILL.—Excellent—\*D. Anderson, \*E. Anderson, J. Anderson, M. Anderson, \*C. Craw, H. McQueen, M. McQueen, M. Russell, B. Russell. Very Good—\*M. Barnes, \*A. Hughes, \*M. Russell. ATHERTON.—Excellent—R. Amos, L. Birchall, M. Birchall, E. Bolton, K. Brookes, R. Brown, A. Chadwick, E. Chadwick, M. Cunliffe, B. Eckersley, \*H. Eckersley, E. Grant, F. Harris, F. Hayes, N. Hewitt, B. Hodgkiss, D. Jones, K. Jones, D. Kenyon, L. Kenyon, G. Moores, B. Potts, \*S. Potts, D. Treacher (I hope you will recover well from your injury!), G. Treacher, M. Smith, I. Tryner, A. Weilding, J. Weilding. Very Good—A. Potts, F. Sale, K. Sale (well done Atherton!). AYR.—Excellent—J. Boon, Janet Boon, J. K. Porter.

BARROW-IN-FURNESS.—Excellent—D. Creasey, N. Creasey, B. Joughin, M. Joughin, \*F. Miller, D. Probert,

BARROW-IN-FURNESS.—Excellent—D. Creasey, N. Creasey, B. Joughin, M. Joughin, \*F. Miller, D. Probert, J. Probert, Y. Probert. BARRY.—Excellent—Mavis Jones, Mildred Jones. BELFAST.—Excellent—D. Clarke, J. Clarke, W. Clarke, C. Coyne, M. Coyne, E. T. Doran, M. Doran, W. Lewis, L. Lowry. Very Good—E. Clarke, \*P. Drain, B. Lewis, A. Mawhinney, D. Mawhinney. BEXHILL-ON-SEA.—Excellent—M. Andrews (fine paper Margaret!). BIRKENHEAD.—Excellent—B. Allen, D. Cottam, J. Dickinson, T. Doodson, G. Fairclough, J. Fletcher, M. Haygarth, A. Hyland, D. Hyland, D. Horne, K. J. Horne, M. G. Horne, \*O. Parry, M. Roberts, R. D. Williams. Very Good—E. Leigh, S. Moseley. BIRMINGHAM.—Excellent—\*G. Alcock, J. Bailey, P. Bardsley, R. Carty, \*A. Elson, M. Elson, P. Griffiths, G. Howl, W. Lambeth, D. Lees, P. Sutton, \*A. Taylor. Very Good—A. Brown, D. Brown, D. Harris, \*M. Harris, A. Kitching, A. Penn, G. Powell, \*M. Raybould. BLACKBURN.—Excellent—A. Cotton, K. M. Cotton, R. Hindle. BOLTON.—Excellent—D. Bickerstaffe, \*N. Bickerstaffe, B. Brookfield, \*E. Doubtfire, E. MacDonald, E. Parkinson, J. Sankey, J. Worthington. Very Good—J. Brookfield, \*E. Doubtfire, E. Handley, L. Isherwood, M. Isherwood, \*B. McClelland, \*L. McClelland, D. Molyneux, \*A. Sammon, \*L. Taylor, \*B. Worthington, C. Worthington (so glad to see so many new searchers!). BRADFORD.—Excellent—B. Smith. B. Smith.

B. Smith.

CARDIFF (Kings Road).—Excellent—M. Stockwell. Very Good—J. Butlin. (Ely).—Excellent—\*G. Banyard, \*J. Musgrave, V. Musgrave, R. Norris, R. Price, G. Saunders. Very Good—B. Edwards, J. Hall, B. Prynne, \*A. Smith, G. Venalles, J. Vicary, B. Waite, B. Wakely. Good—O. Dibble. CARLISLE.—Excellent—M. Johnston. CHEADLE.—Excellent—J. Salt, K. Salt, S. Salt. CLYDEBANK.—Excellent—C. Boyd, \*J. Campbell, B. Dow, G. Dyer, B. Hamilton, \*B. O'Neill, L. Tivendale, A. Wigmore. Very Good—E. Hamilton, M. Hamilton, A. McClure, N. McKinlay, P. Moore, I. Rac, J. Richmond, \*B. Wood. Good—\*F. McAlister, J. Gallagher, D. McAulay. COATBRIDGE.—Very Good—M. Barrie, \*S. Barrie, \*C. Stuart, \*M. Stewart. COOKSTOWN.—Excellent—A. Bell, W. D. Bell, W. H. Bell, E. Black (fine paper!), M. J. Charles, \*E. Loughlin, \*W. R. Loughlin. Very Good—C. Bell, F. Bell, J. Charles, \*C. Loughlin, M. Henry, \*R. Smith, M. Warwick. Good—M. Anderson, Muriel Charles. COWDENBEATH.—Excellent—E. Allan, I. Allan, R. Allan, M. Beveridge, A. Bowman, J. Bruce, M. Bruce, V. Duff, E. Haddow, \*J. Haddow, \*M. Haddow, J. Hunter, R. Hunter (excellent paper!), J. Melville, M. Park, Moira Park, J. Paterson, G. Ross, \*I. Ross, A. Thomson, B. Thomson, J. Winsborough, J. Wishart (fine set of papers Condenbeath!). CROSS-FORD.—Excellent—H. Brindle, \*R. Cox, \*G. Fleming, \*M. Milne, M. Rankin. Very Good—J. McWilliams, CULLEYBACKEY.—Excellent—D. Crabbe, E. Hutchinson, W. Hutchinson, A. Kirkpatrick, T. Mellroy, A. McKendry, Annie McKendry, A. McKeown, I. Millar, J. Stewart.

DERBY (Iron Tent).—Excellent—G. Fairholm, J. Granger, Julia Granger, S. Granger, B. Grattidge.

DERBY (Iron Tent).—Excellent—G. Fairholm, J. Granger, Julia Granger, S. Granger, B. Grattidge, A. Johnson, \*I). Jubb, G. Minard, M. Munday, S. Preston, E. Tomlinson, W. Wood. Very Good—J. Browning (well done John!), J. Cholerton, R. Cholerton, M. Cholerton, K. Johnson, M. Johnson, H. Joyce, B. Lowe, J. Whitbread, J. Wymer, S. Wymer, J. Rees. Good—\*A. Cholerton, \*G. Cholerton, \*R. Clifford, J. Irons, B. Hallas, D. Henshall, E. May, L. Slessor, A. Taylor, B. Whysall. Well Tried—\*1. White. (Sinfin).—Excellent—M. Gadsby, F. Gaskins, P. Gaskins, S. Hawley, A. Hine, B. Ince, S. Ince, \*D. Jones, I. Morrell, B. Neal, P. Neal, P. Whiteley (excellent papers!), I. Wooley. Very Good—S. Cook, \*J. Fisher, E. Gadsby, Miriam Gadsby. Good—A. Morrell, D. Shaw. (Well done Derby! Iron Tent and Sinfin). DOUGLAS (1.0.M.).—Excellent—D. Collister, J. Swain. Very Good—J. Kneale, J. Welford, M. Welford. Good—C. Cain. Well Tried—M. Bell. EDINBURGH.—Excellent—D. Bunting, W. Bunting, H. Campbell, \*R. Cull, J. Degnan, J. Doull, P. Duff, S. Duff, S. Hamilton, A. Hope, M. Hope, Campbell, N. Campbell, \*R. Cull, I. Degnan, J. Doull, P. Duff, S. Duff, S. Hamilton, A. Hope, M. Hope, R. McNeill, L. Short, W. Taylor. Very Good—J. Ireland, Y. Jardine, A. Loughlin, E. Loughlin, D. McNeill, (Dr. Guthrie's Boys' School).—Excellent—\*R. Herbert, \*A. Jaffray, \*W. Kirk, \*R. Martin, \*T. McCraw, \*D. McGarrity, \*W. McMaster, \*A. McNaughton, \*W. Mearns, \*R. Miller, \*A. Milne, \*J. Peacock, \*A. Reid, \*T. Speirs, \*W. Williamson, \*W. Wilson, \*D. Whitecross. (These papers are very welcome!).

GALSTON.—Excellent—J. F. Piper. GLASGOW (Balornock).—Excellent—A. Lynch, \*F. Lynch, Mestevenson (sorry your name was omitted!), \*J. McCallum. Good—\*C. McCallum. (Cathcart Road.—Excellent—M. Douglas. Good—W. Stewart. (Govan).—Excellent—J. Boyd. \*R. Brand, B. Brown, M. Brown, M. Calderhead, \*N. Eadie, S. Heaney, \*J. Kenneway, C. Laverty, D. Laverty, \*A. Malloy, Melvenna, C. McIntyre, I. McIntyre, \*R. McGunn, H. McKim, A. Murdoch, B. Paterson, M. Purse, H. Smith, E. Wallace, W. Wallace, S. Young. Very Good—H. Lawson, N. McCart, D. McIlreavy, B. Young. Good—M. Hillhouse. (Kirkintilloch).—Excellent—\*J. Alston, W. Alston, D. Anderson, E. Anderson, \*M. Blackwood, A. Brown, M. Brown, A. Caldwell, \*C. Campbell, \*H. Darroch, M. Hogg, \*M. Hinde, R. Mathieson, \*A. Marshall, \*Alice Marshall, M. Muir, F. Storrie, M. Watson, \*B. Weir, J. Whitelaw (fine set of papers Kirkintilloch!). (Parkhead).—Excellent—\*R. Grant, R. Hamilton, S. Heggie, N. Hunter, \*D. Kilgour (so glad to hear the good news David!), L. Shaw, R. Shaw, I. Wright, \*A. Hunter. Very Good—\*C. Kelso, M. McClymont, I. Money, J. Money, M. Mitchie, M. Parker. (Partick).—Excellent—J. W. Archibald, K. L. Archibald, J. Baxter, M. Carson, A. Disher, W. Disher, \*A. Fotheringham, J. Galloway, A. Gibson, S. Gouch, A. Hyslop, J. Hyslop, L. Jackson, F. Jennings, D. McDonald, F. NacDonald, M. McDonald, Martha MacDonald, N. MacDonald, J. McKenzie, Jim McKenzie, J. McLay, P. Mirrlees, J. Rodgers, G. Scott, M. Scott, \*H. Thomson, I. Warnock, S. White. Very Good—B. Dale, I. Dale, J. Florence, A. Forbes, I. Hyslop, A. Laird, B. McGaffin, M. McGaffin, R. McEwan, D. McKenzie, A. Ramsay, J. Todd. (Mearnskirk Hospital).—Excellent—R. Fields, A. Gallacher, K. Gallen, C. McGibbon, A. McGonagle, E. McLeish, GALSTON.—Excellent—J. F. Piper. GLASGOW (Balornock).—Excellent—A. Lynch, \*F. Lynch, M. Hospital).—Excellent—R. Fields, A. Gallacher, K. Gallen, C. McGibbon, A. McGonagle, E. McLeish, M. Wolfenden. (Springburn).—Excellent—\*A. Davidson, M. Davidson, F. Low, J. Low, C. Mooney, \*A. Morris, \*M. Wilson. Very Good—\*H. Boyd, \*J. Hamilton, \*J. Innes, \*G. McCallum, \*A. McKane. E. Mooney (so glad to see so many first attempts!). GREENOCK.—Excellent—N. Bethel, \*G. Calder, I. Duggan, Isobel Duggan, J. Duggan, G. Fry, I. Higgins, M. Lafferty, I. Marshall, F. McCafferty, G. McCrindle, B. McDiarmid, R. McDiarmid, R. McKaig, M. McKeig, M. McKechnie, B. McKeeman, G. Millar, D. Mullen, C. Piggott, E. J. Renfrew, E. McReiferey, C. Sandy, M. Watt. Very Good—Ruby Macdonald, M. McKerstene, R. MacKerlane, R. McNiese, N. T. Ponfrey, E. Podgory. M. MacFarlane, R. MacFarlane, I. McNiece, N. T. Renfrew, E. Rodgers.

HALIFAX.—Excellent—A. Appleyard, \*B. Canning, \*G. Canning, J. Coward, J. A. Kirkman, B. Greenwood. Very Good—M. Kendell, F. Naylor. HAMILTON.—Excellent—\*L. Brooks, C. Cunningham, S. Cunningham, \*A. Dunn, \*J. Dunn, \*G. Lawson, B. Lindsay. Very Good—N. Cameron, J. Mackie, \*E. Miller, J. Park (glad to see increased interest). HARTHILL.—Excellent—B. Arnott, A. Cooper, J. Cooper, J. Marshall, S. Marshall, \*A. McKendrick, \*H. McMullan, J. McMullan. HAYES.—Excellent—H. Eade, J. Eade, S. Geere, J. E. Lewin, C. Weston, W. Wright. Very Good—D. Sivier, E. Sivier, R. Sivier. HEREFORD.—Excellent—\*D. Rees, E. Rees, Edward Rees, P. Rees.

Livermore, C. Norris, \*S. Onslow, P. Pleasant, J. Smith, J. Stringer, B. Tracey, E. Tracey, R. Wright. Very Good—S. Gilbert, \*R. Lynch, P. Smith, J. Webb. Good—J. Walpole. INNERLEITHEN.—Excellent—\*D. Brunton, \*I. Brunton, \*B. Clifford, \*J. Eckford, \*B. Gardiner, \*R. Heaney, \*I. Lunn, L. Notman, S. Pearce, \*L. Robson, I. Tait, \*N. Whiteford. Very Good—\*C. Eckford, \*J. Notman, T. Scott, J. Wilson. Good—\*N. Heaney (welcome first attempts!).

\*R. Harding, \*J. Pearce, \*B. Stevenson. (Bonner Hill).—Excellent—P. Andrews, D. Bourne, M. G. Bourne, Mary Bourne, P. Cummings, I. V. Ferguson. Very Good—P. Warren.

KNOCKNACLOY.—Excellent—N. Busby, G. Thompson.

KNOCKNACLOY.—Excellent—N. Busby, G. Thompson.

LEICESTER (Broomfield Hall).—Excellent—\*J. Almey, M. Balcombe, B. Barsby, M. Barsby, S. Barsby, A. Briggs, Mary Brown (glad you are continuing Mary!), \*M. Brown, C. Calladine, B. Chapman, Betty Chapman, M. Chapman, R. Chapman, M. Chapm

MACDUFF.—Excellent—\*A. Downie, J. F. Downie, B. Gould, V. Gould, G. D. McKay, \*B. McKay, D. Patience, E. Robertson, J. Sellar, A. Stuart, D. Watt, J. Watt, Jean Watt, Joseph Watt, M. Watt, R. Watt, E. Wilson, D. Wilson. MAIDSTONE (Assembly Hall).—Excellent—E. Dann, D. Lee, J. Lee, S. Lee, A. Stewart, N. Stewart, A. Woodsell, M. Woodsell, E. Yates. Very Good—E. Newing, \*B. Sills, \*B. Vidler. Good—\*N. Judson. (North Down Glose).—Excellent—J. Dadd. Very Good—M. Owen, A. Rillie, F. Wickins. MANCHESTER.—Excellent—E. Bowker, J. Bowker, M. Jones, J. Singleton, R. Spence, L. Turner (I am looking into the question of your Certificate!). Very Good—V. Bentley. MATLOCK.—Excellent—\*J. Derbyshire, \*S. Gratton, \*B. Millar, \*J. Towndrow. Very Good—\*J. Gratton, \*M. Thompson (welcome Matlock!). METHIL.—Excellent—I. Reilly. MOUNTAIN ASH—Excellent—J. Beddow, M. Mortimer. MUSSELBURGH.—Excellent—J. Glen, \*H. Lindsay, M. Ramage, I. Swanston. Very Good—B. Auld, M. Courtney, J. Forrest, M. Forrest, I. Lindsay, J. Lindsay, A. McVvatt, G. Steedman, N. Swanston.

NEWHALL.—Excellent—R. Bowler, G. E. Matthews, J. Ward, C. Young, F. Young, OLLABERRY.—Excellent—J. Peterson, K. Peterson.

PENYGRAIG.—Very Good—E. Dalby, K. Lee, R. Lee, I. Mitchell, K. Sheppard, B. Webber. PORT GLASGOW.—Excellent—I. Callander, P. Clabby, W. Clark, M. Cook, N. Cunningham, B. Dixon, M. Hall, A. Hoey, B. Hoey, M. Hoey, R. Hoey, M. Hudson, W. Jackson, B. Martin, \*A. McGhee, G. McFarlane, R. McFarlane, M. McKeever, W. L. McLellan, J. Miller, M. Miller, M. Mitchell, G. Moore, I. Renfrew, N. Renfrew, Rene Renfrew, J. Richie, J. Ross, B. Semple, A. Smith. Very Good—Mattie Hall, K. Kirkwood, J. McConnachie, I. Ross (well done Iris!), R. Scullion. PORTSLADE.—Excellent—J. Elliott, K. Elliott. RUNCTON HOLME.—Excellent—C. Lambert.

SHIRLEYWICH.—Excellent—M. Hydes, O. Jones. SHOTTS.—Excellent—\*J. Lambie, A. Pearson, \*E. Taylor. Very Good—J. Taylor. SOUTHPORT.—Excellent—\*C. Bamber, C. Hafez, E. Hodson, B. Scott. SOUTH SHIELDS.—Excellent—R. Atkinson, M. Brown, R. Tomlinson. Very Good—\*M. Tyrrell, J. Walker. STANMORE.—Excellent—J. Griffin (see Authorised Version John!). ST. HELENS.—Excellent—M. Barnes, J. Barrett, J. Battersby, J. Bowes, D. Gerrard, J. Farrar, J. Hill, R. Hurst, John Barrett, J. Lightfoot, M. M. Smith, J. Molyneux, John Molyneux, B. Thelwell. Very Good.—\*R. Brownbill, V. Brownbill, G. Lightfoot. Good—\*S. Chisnall, \*D. Dohngoe. SPALDING.—Excellent—F. E. Spindler. STOKE-ON-TRENT.—Excellent—J. Adams, D. Adams, M. Adams, G. Bennison, H. Bennison, M. Bennison, M. Brady, B. Knox, I. Parker, D. Tranter, \*M. Tranter, E. Wilson. Very Good—E. Hilton, B. Loach. Good—E. Anstey, M. Dorricott, G. Edmondson, N. Edmondson, I. Ford, G. Key, M. Rushton. Well Tried—A. Timmis, P. Timmis. (The Mount School).—Excellent—\*L. Ackley, \*E. Cartwright, R. Connor, H. J. Cope, \*J. Darlington, K. Davies, \*E. Dean (in Braille!), T. Downing, B. Foxall (in Braille!), \*V. Lawson, J. Merrick, M. Nixon, J. Plant, \*R. Reeves (in Braille!), S. Ridge, C. Runnalls, R. Watts (splendid effort, welcome new searchers!).

TROEDYRHIW.— Excellent—B. Jones.

WEMBLEY.—Excellent—J. Caterer, \*E. Hilton, A. G. Hobley, D. S. Hobley, E. Hobley, R. Hobley, P. O'Neill. Very Good—\*R. Parker. Good—\*P. Hooper, D. Jones. WILLOWS GREEN (Essex).—Excellent—R. Amos. WISHAW.—Excellent—S. Armstrong.

YEOVIL.—Excellent—J. Boobier, D. Finch, E. Finch, P. Finch, J. Francis, M. Francis, J. Hancock, M. Lodge, J. Parsons, I. Sartin, D. Shore, P. Tuck, \*J. White, J. Wright. Very Good—Janet Boobier, M. H. Brice, R. Eglen, R. Foyle, Raymond Francis, P. Parsons, Ann Sartin, K. Stone. Good—\*S. Finch. Well Tried—P. W. Bown.

Please Note.—Since going to press the missing packet of names has arrived, and the following are particulars of same :—

SUPPLEMENTARY LIST OF MARCH, 1946, BIBLE SEARCHING RESULTS.

(Additional 164 searchings, and 23 new searchings.)

ABERDEEN.—Excellent—R. Robertson.

ARMAGH.—Excellent—K. Adams, M. Latimer, D. Magill.

BATHGATE.—Excellent—M. Cameron, Mary Cameron, J. Fisher, R. Fisher, A. Fransen, H. Fransen, I. Gilbert, E. Haddow, \*H. Haddow, P. Haddow, D. Hamilton, H. Haston, \*E. Kearney, J. Kearney, W. McIntyre, M. Ramsay, M. Smith, S. Smith, \*J. Wilson.

CARDIFF (Ely Children's Homes).—Excellent—J. Pocock. (Kings Road).—Excellent—M. Burgess, R. Cross, \*S. Dewey, \*F. Hurley, R. Jones, S. Laho, \*M. Palmer, \*C. Powell (well done, Colin!), \*P. Solomon, M. Toms, \*P. Toms, R. Toms, P. Tucker, B. Webb. Very Good—D. Knott, D. M. Walsh, \*D. Williams. (Wilson Road, Ely).—Excellent—B. Blow, A. Edwards, D. Edwards, \*J. Frost, \*E. Norris, R. Palmer, R. Saunders, M. Talbot, \*M. Taylor. Very Good—A. Harbidge, K. Richards, \*R. Wakely.

CHEADLE.—Excellent—B. Pattinson, J. Pattinson. COATBRIDGE.—Excellent—D. Scott, J. Scott. Very Good—L. Lees. CROWBOROUGH.—Excellent—A. French, B. French, J. French, R. Taylor.

DOUGLAS (I.O.M.).—Excellent—D. Carey. DUNDEE.—Excellent—E. Batchelor, M. Callander, \*D. Lorimer, J. Young.

EDINBURGH.—Excellent—K. Hope.

GLASGOW (Cathcart Road).—Excellent—L. Beattie, C. Bowie, J. M. Brown, B. Cassidy, R. Cassidy, D. Gordan, \*I. Ferguson, M. Macdonald, M. Martin, B. McLean, N. McLean, S. McNeil, J. Meechan, John Meechan, M. Munro, M. Parker, A. Postlethwaite, D. A. Renfrew, M. Stewart, C. Traynor, M. Traynor, J. Wilson. Very Good—F. Archibald, Chrissie Bowie, B. Clements, M. Clements, D. Ferguson, J. Gordon, D. Graham, H. Graham, B. Head, R. Lees, T. Marks, E. Windle. Good—B. Allan. (Govan).—Good—Mary MacLean. GREENOCK.—Excellent—M. Mitchell. Very Good—W. Johnston.

HAMILTON.—Excellent—C. Brooks. HAYDOCK.—Excellent—B. J. Dixon, D. Hazeldine, L. Hazeldine, D. Seddon, M. Seddon. Very Good—\*D. Harrison, I. Hughes, W. Hughes, H. Leyland, J. Leyland, K. Leyland.

LEICESTER (Broomfield Hall).—Excellent—M. Armsden. (Uppingham Road).—Excellent—J. Pereira, \*G. Woodman.

MAIDSTONE (North Down Close).—Excellent—J. Mutimer. MATLOCK.—Excellent—\*C. Underwood. METHIL.—Excellent—A. Baird, G. Baird, C. Montgomery, I. Montgomery, John Montgomery, J. B. Paton (sorry your name was not correct last time!), M. Paton, B. Philp, D. Philp, J. Reid, E. Thomson. Very Good—\*R. Surgeon. MOUNTAIN ASH.—Excellent—T. Hughes, C. Organ, M. Organ. Very Good—M. Perry.

PENYGRAIG.— Excellent—R. Amos.

SOUTH SHIELDS .- Excellent - R. Jarwick. STOKE-ON-TRENT .- Very Good - S. Sutton.

WIGAN.—Excellent.—N. Bentham, A. Caldwell, J. Howarth, N. T. D. Martin, H. Ollerton, D. Oxley, N. Oxley, S. Roberts, P. Saxon. Very Good.—N. Ollerton, G. Roberts, R. Roberts. WILLINGTON QUAY.—Excellent.—\*R. Anderson, E. Birkley, M. Chambers, \*M. Fuller, M. Kemp, P. Nellist, M. Patterson, M. Sayers. Very Good.—\*R. Keeler.

## A SUMMARY OF THE MARCH, 1946 BIBLE SEARCHING RESULTS. (Alphabetically according to Town).

| TOWN.            |        | Total No. of<br>Searchers. | New<br>Searchers. | TOWN.                      |       | Total No. of<br>Searchers | New<br>Searchers. | TOWN.                        | Total No. of<br>Searchers. | New<br>Searchers. |
|------------------|--------|----------------------------|-------------------|----------------------------|-------|---------------------------|-------------------|------------------------------|----------------------------|-------------------|
| ABERDEEN         | ***    | 18                         | 4                 | EDINBURGH                  |       | 21                        | 1                 | MAIDSTONE-                   |                            |                   |
| ABERKENFIG       |        | 3                          | 2                 | EDINBURGH—                 |       |                           |                   | (Assembly Hall)              | 13                         | 3                 |
| ADJINGTON        | ***    | 8                          | 1                 | (Dr. Guthries)             |       | 17                        | 17                | (N.D.C.)                     | 5                          | 11                |
| ARMAGH           | 112    | 32                         | 3                 | GALSTON                    | 3.930 | 1                         | -                 | MANCHESTER                   | 8                          | 7                 |
| A myrmmony       | ***    | 13<br>33                   | 6 2               | GLASGOW—                   |       | _                         | 0                 | MATLOCK                      | 13                         | í                 |
| ATT              | 200    | 3                          |                   | (Balornoch)                |       | 5<br>38                   | 3                 | METHIL MOUNTAIN ASH          | 6                          | -                 |
| BARROW           | ***    | 8                          | 1                 | (Cathcart Road)<br>(Govan) | ***   | 29                        | 5                 | MUSSELBURGH                  | 13                         | 1                 |
| BARRY            |        | 2                          | - I               | (Kirkintilloch)            | ***   | 20                        | 8                 | NEWHALL                      | 5                          |                   |
| BATHGATE         |        | 19                         | 3                 | (Parkhead)                 | ***   | 15                        | 4                 | OLLABERRY                    | 2                          |                   |
| BELFAST          |        | 14                         | 1                 | (Partick)                  | ***   | 41                        | 2                 | PENYGRAIG                    | 7                          | _                 |
| *BEXHILL         | ***    | 1                          | -                 | (Mearnskirk Hos            |       | 100                       | 1000              | PORT GLASGOW                 | 35                         | 1                 |
| BIRKENHEAD       | 100    | 17                         | - 1               | tal)                       |       | 7                         | -                 | PORTSLADE                    | 2                          | _                 |
| BIRMINGHAM       | ***    | 20                         | 5                 | *(Springburn)              | 434   | 13                        | 8                 | *RUNCTON HOLME               | 1                          | -                 |
| BLACKBURN        | 400    | 3                          | -                 | GREENOCK                   | ***   | 33                        | 1                 | SHIRLEYWICH                  | 2                          | -                 |
| BOLTON           | 18.9.5 | 21                         | 8                 | HALIFAX                    |       | 8                         | 2                 | SHOTTS                       | 4                          | 2                 |
| BRADFORD         | 444    | 1                          | 1                 | HAMILTON                   | 252   | 12                        | 5                 | SOUTHPORT                    | 4                          |                   |
| CARDIFF—         |        | 10                         | -                 | HARTHILL                   | ***   | 8                         | 2                 | SOUTH SHIELDS                | 6                          | 1                 |
| (Kings Road)     |        | 19                         | 7                 | HAYDOCK                    | ***   | 11                        | -                 | ST. HELENS                   | 19                         | 4                 |
| (Ely, Children's |        | 10                         | 3                 | HAYES                      |       | 9                         | -                 | *SPALDING                    | 1                          |                   |
| Home)            | 16     | 16<br>12                   | 4                 | HEREFORD                   |       | 4                         | 1                 | *STANMORE                    | 1                          | -                 |
| (Ely, Wilson Roa |        | 1                          | 4                 | ILFORD                     | ***   | 20                        | 4                 | STOKE—                       | 24                         | 1                 |
| CHEADLE          | 77.5   | 5                          |                   | INNERLEITHEN               | ***   | 17                        | 12                | (Assembly Hall) (Mt. School) | 17                         | 6                 |
| CLYDEBANK        | 111    | 19                         | 4                 | KINGSTON—                  |       |                           |                   | TROEDRHIW                    | 1                          | -0                |
| COATBRIDGE       | ***    | 7                          | 3                 | (Burritt Hall)             | 355   | 7                         | 5                 | WEMBLEY                      | 10                         | 3                 |
| COOKSTOWN        | 200    | 16                         | 4                 | (Bonner Hill)              | 444   | 7                         | -                 | WIGAN                        | 12                         |                   |
| COWDENBEATH      |        | 23                         | 3                 | KNOCKNACLOY                | ***   | 2                         | _                 | WILLINGTON QUAY              | 9                          | 3                 |
| CROSSFORD        |        | 6                          | 3                 | LEICESTER—                 |       |                           |                   | *WILLOW GREEN                | 1                          | -                 |
| CROWBOROUGH      |        | 4                          | -                 | (Broomfield)               | 555   | 52                        | 7                 | WISHAW                       | î                          | -                 |
| CULLYBACKEY      | 199    | 10                         | =                 | (Northfield)               |       | 45                        | 11                | YEOVIL                       | 24                         | 2                 |
| DERRY—           |        |                            |                   | (Uppingham Ros             |       | 4                         | 1                 | -                            | -                          |                   |
| (Iron Tent)      | 222    | 35                         | 5                 | LEIGH                      | ***   | 5                         | 4                 | TOTALS 1                     | ,167                       | 221               |
| (Sinfin)         | 142    | 19                         | 2                 | LIVERPOOL                  | 5,575 | 14                        | 1                 |                              |                            |                   |
| Douglas          | ***    | 8                          | -                 | LONDON                     | 4.4.4 | 11                        | 1                 |                              |                            |                   |
| DUNDEE           | ***    | 4                          | 1                 | MACDUFF                    | ***   | 18                        | 2                 | * Denotes from indiv         | idual                      | 5.                |

#### NEXT BIBLE SEARCHING.

| 1. | Trust in the Lord with all thine   |        | 222  | ***  |     | *** | *** | Proverbs Chap. 3. |
|----|------------------------------------|--------|------|------|-----|-----|-----|-------------------|
| 2. | Incline thine unto My sayings      | 1882   | 555  | ***  | *** | *** | *** | Proverbs Chap. 4. |
| 3. | My shall praise Thee               | 222    | 1555 | ***  | *** | 100 | *** | Psalm 63.         |
| 4. | Ye may with (one mind and) one     |        |      |      |     |     |     |                   |
|    | Lord Jesus Christ                  |        |      |      |     |     |     | Romans Chap. 15.  |
|    | For my are unto Thee, O God th     |        |      |      |     |     |     | Psalm 141.        |
| 6. | Mouth filled with laughter and our | . with | sing | ging | *** |     | *** | Psalm 126.        |

#### INSTRUCTIONS.

For those of Ten years of age and over. (A) Search the chapters or Psalms given, and find the missing words of the sentences. Then: (B) Write out the sentences in full, together with the missing words, and give Book, chapter and verse where found. (C) The first letters of the missing words, when put together, make up one of the most important parts of the armour of God described in Ephesians chapter 6. Print the word in CAPITALS, adding also, what it is described as, in the verse where found. (D) What does this verse tell us to do with it, and what does this really mean?

(Note.—Please attempt all that is asked for, but send in your answers even if you are not able to complete all.)

Those under ten years of of age need only fulfil instructions A, B and C.

GOD SO LOVED THE WORLD THAT

God loved the World, and gave His Son, And Christ came down the willing One, He came God's purpose to fulfill, With joy to do His Father's will.

#### HE GAVE HIS ONLY BEGOTTEN SON,

God loved the World, and gave His Son: A gift more costly there is none, God's love is boundless, full and free, And in God's gift, His love we see.

#### THAT WHOSOEVER

God loved the World, and gave His Son. That whosoever—anyone, Believes on Him—of Adam's race. At any time, shall know His grace.

#### BELIEVETH ON HIM

God loved the World, and gave His Son, The Object He of faith alone. That whosoever Him believes, By simple trust, God's gift receives.

#### SHOULD NOT PERISH,

God loved the World, and gave His Son, By Him, salvation's work is done. He came to seek and save the lost. Salvation's free—no works—no cost.

#### BUT HAVE ETERNAL LIFE.

God loved the World, and gave His Son,
By Him, ETERNAL LIFE is won,
And as a gift, God offers free,
Take it by faith, it is for thee.

A.F.

## Moliday Musings.

Holiday season which many of us have looked forward to so much is now here. What a joy it is to think that you will soon be going to the seaside or into the country. What a lot of preparation we make for this great event, our annual Holidays! Some travelling



A holiday at the seaside.

to the seaside (see front picture), some to the country, all bent on getting away from the towns for a change. I was very interested recently, watching the people in a very crowded Railway Station, all hurrying to get a good place in the queue, and to find the right

platform from which their train would leave; and some even leaving it to the last minute to get their tickets, although the announcer was calling out instructions about the trains; where they were bound for, where to change, and telling them to get into the train as it was due to leave at once. There were still quite a number of people who were in the wrong portion of the train, or in the wrong train, and some were even left behind. Some people did not appear to be at all worried because they were in the wrong train, and others would not believe it when they were told. I thought, is it not just the same concerning eternal things? In the great journey of life to eternity how many are travelling on the wrong road (like those in the wrong train), expecting to reach Heaven in the end, when God has so plainly declared that there is only one Way. There are some inquirers who want to know the way, there are also many who will not heed the warnings when told that they are on the wrong road, they still go on carelessly. In John 14.6 we read, Jesus saith . . . "I am the Way, and the Truth, and the Life, no one cometh unto the Father but by Me." There is no other way, there is no other name, as it is written, "And in none other is there salvation: for there is none other name under heaven, . . . wherein we must be saved " (Acts 4. 12).

The first thing to do when you go on a journey is to get your ticket, which gives you the right to travel on the train. So boys and girls see to it that you come early, while you are young, and put your faith in the Lord Jesus Christ, who died on the cross to put away sin by the sacrifice of Himself. He shed His precious blood on account of our sin, and paid all the debt we owed to God, now if you come to Him as a lost and needy sinner you can receive salvation and forgiveness of your sins. In figure your ticket is entirely free, and you can start on your heavenward journey to-day. Don't forget, now is the time to be saved, for we know not what a day may bring forth. Below is a little recitation I learned years ago, perhaps some of you might like to learn it too.

H. SCOTT.

#### THE SPIRITUAL RAILWAY.

1.

The line to Heaven by Christ was made, With Heavenly truths the rails are laid, From earth to Heaven the line extends, To life eternal—where it ends.

2.

Repentance is the station then Where passengers are taken in, No fee for them is there to pay, For Jesus is Himself the Way.

3.

The Bible is the Engineer, It points the way to Heaven, so clear. Through tunnels dark and dreary here, It doth the way to glory steer.

4.

God's love the fire, His truth the steam Which drives the engine and the train. All ye who would to glory ride Must come to Christ,—in Him abide.

5.

Come then young people, now's the time At any station on the line, If you believe, and trust in Him, The train will stop and take you in.

#### BIBLE EXERCISE (For older Scholars).

What giver gave two mites, Yet gave more than the rest? What people brought their gifts, But gave not God the best? Who was the man that gave his son, And is for ever blest?

Teachers should seek to find the answers themselves, and encourage their scholars to bring their answers to them. The answers will be given next month.

## The Window.

(THINGS OF THE HOME).

NOTHER very important thing in the home is the window. How very dark we would find it if we had no windows, for by them enters the light so that we may see! Sitting at home, looking out of the window, what do I see? Opposite are some houses, away in the distance rises a big chimney belonging to a cotton factory, and right underneath the window lies our

garden, in which, in summer time grow quite a lot of beautiful flowers. It is quite a pleasure to see the flowers when in bloom with all the different colours blending so well. There are some trees too, with dark green leaves, making altogether a pretty picture. In winter time the scene is different. Sometimes everything is all white with snow or frost. Sometimes the rain is seen falling, with dark clouds filling the sky, and no sunshine to cheer. And sometimes on looking out I can see nothing at all. Why? A very thick fog has come down



As we gaze through the window it is nice to see the rain refresh the drooping flowers.

and blotted everything out. Let me tell you of another window through which can be seen many wonderful things, far more wonderful, more beautiful things and persons than through any house window. It is the Bible. Through it we may see that God is holy, we may see our own sinfulness, we may see that we need a Saviour, we may see God in His love and grace sending the Saviour from heaven, we may see the Saviour in love coming into this world to be the Sacrifice for sin, and through the Bible window we may see

... a green hill far away, Outside a city wall, Where Christ the Lord was crucified, Who died to save us all."

This is the most important scene. Look at it well, look believingly and realise that there on the cross the Lord Jesus was dying for your sin, and if you believe on Him you can say, He died in my room and stead. Satan, you know, doesn't want you to see this at all, and so he does his best to make it "foggy," so that you cannot see. In other words, he brings before your minds anything that will stop you from thinking of the Lord Jesus, anything that will becloud the scene of Calvary. But as the sun is able to break through the fog and dispel it, so the Holy Spirit is able to defeat Satan, and give you a clear view of

Calvary. Do not let Satan blot out Christ, but let the light of the glorious gospel of Christ shine in upon your hearts (2 Corinthians 4. 4). Remember the fog only hides, it can never do away with the houses, gardens and trees. Even so, Satan may try and hide the Gospel from you and blind your eyes, but he can never do away with the fact that :-

"God so loved the world, that He gave His only begotten Son. that whosoever believeth in Him should not perish, but have eternal life" (John 3. 16).

J. LEE.

## Travel Talk Ho. 31.

Holes in the Earth (The Catacombs).

E learn from the accounts in the Acts of the Apostles, that persecution of the disciples of the Lord Jesus commenced almost immediately after Jesus had left them to return to His home in Heaven. Their love for their Lord was such that they rejoiced that they were counted worthy to suffer dishonour for the Name. When the Lord was with them He said. "Blessed are ye when men shall reproach you, and persecute you, and say all manner of evil against you falsely, for My sake. Rejoice and be exceeding glad: for great is your reward in heaven: for so persecuted they the prophets which were before you" (Matthew 5. 11, 12). Since those words were spoken, persecution in many forms has continued to this day, although we hear very little of violence, compared with that of other days.

In Hebrews 11, 38 we read of men and women who were made to wander in the deserts and mountains and caves, and the holes of the earth, because of their faithfulness to God. Something like that experience was repeated in the early centuries A.D., when persecution forced the Christians at Rome to find refuge beneath the ground in what are known as the Catacombs. These still exist to-day a few miles distant from Rome, and consist of a complicated network of underground tunnels cut in the soft rock. It is thought they were made when rock was excavated for use as building material in Rome. They are so extensive that it is possible to walk underground for many miles, and people have been lost in them at various times, through being unable to find their way out.

It was in this underground maze that many of the early followers of Christ found refuge, and were able to meet together for prayer and worship, and disciples of the Lord Jesus to-day could take a lesson from their noble example, for their devotion to their Lord was shown by the way in which they obeyed the word which we read in Hebrews 10. 25, "not forsaking the

assembling of ourselves together."



In the Calacombs at Rome.
A Gallery with Tombs.

To visit the catacombs is rather an eerie business, and it is not safe to go without a guide. A lighted taper was all that was provided to light up the darkness, and at times when this was temporarily extinguished, it seemed impossible to make any progress until it was relighted. The remains of many of the early martyrs were laid to rest in these underground tunnels, and even today some of the human remains can be seen placed in niches in the rock. It was a great relief to come out into daylight again after making such a visit, reminding us of the experience of the sinner when saved, being

brought out of darkness into the marvellous light. If you have not known the experience of being saved through faith in the Lord Jesus Christ, you are rather like the people who were lost in the darkness of the catacombs, and who could not find their way out without the light. You can come out of the darkness and know the light shining in your heart, and then one day know the constant light of His presence.

F.W.P.

## Meard in a Sunday School.

NE Sunday afternoon, a gathering of children had been singing very heartily the well-known chorus: "Jesus wants me for a sunbeam." It was an "open school," and for the benefit of the juniors the teacher asked the question,

"Can anyone tell me what a sunbeam is?" There was a pause, and then one of the elder boys gave an apt but very simple answer. "A beam from the sun." "Yes," said the teacher, "It simply means, the Lord Jesus wants us, each one, to be

like a ray of light from the sun, which brings warmth, and shines in what would otherwise be a dark world, as in the words of another chorus:

"In this world of darkness

"In this world of darkness
So we must shine,
You in your small corner,
And I in mine.

The teacher then pointed out that the last line of the chorus, which says, "Yes! a bright sunbeam for Him," might mean that sunbeams are not always bright, and asked the question, "I wonder why?" Once again there was a pause, and soon the same boy who answered before, said, "Because a cloud may come in between." "Yes," the teacher replied, "a dark cloud may cause a sunbeam to become blurred and may even dim the sun's rays. But the Lord Jesus wants to save boys and girls so that they may be bright and happy, that even the clouds may be dispersed." You must remember that before you can be a sunbeam, before you can reflect the Light of the Lord Jesus, you must have life. You must be born again and become a child of God. Read what John 1. 12 says. It is also written, In Him was Life; and the Life was the Light of men (verse 4).

Jesus is calling boys,
To give them lasting joys,
Still Jesus calls.
Calls them from sinful ways,
To live true lives of praise,
To bless them all their days,
Still Jesus calls.

Jesus is calling girls,
Love's banner He unfurls,
Still Jesus calls.
Look and the Saviour see
Who died on Calvary,
Then you will happy be,
Still Jesus calls.

S.J.J.

In England To-day.

### GIRL OF 9 HAD NOT EVEN HEARD OF THE BIBLE.

"T is time we had a new Education Bill," said Mr. Justice Croom-Johnson at the Old Bailey on February 6th, 1946, after the following conversation had taken place between him and a nine-year-old girl whom he was testing to see if she understood what the oath was.

The Judge: Do you learn about the Bible at school?—No.

Do you learn about the Bible anywhere?—No.

Do you know who God is?
The girl did not answer.

The Judge: Are you taught by anyone to tell the truth?—No.

"And this," observed the Judge, "is England in the 20th Century."



There is a Book, a holy Book,
By God to sinners given,
To shew the way of life and peace,
And mark the path to heaven.

It tells me of the Lamb of God,
Who died upon the Tree;
To bear the wrath and curse of God,
And set the sinner free.

(Continued on next page).

This report, which appeared in a London Evening Newspaper, makes very sad reading. It is almost unbelievable and yet we cannot doubt its truth. I wonder if you were asked questions similar to those of this nine year old girl, what would your answers be. I do trust your answers would be an affirmative "Yes," and not "No."

This story reminded me of the hymn we sometimes sing in Sunday School, "When mothers of Salem," which is a favourite with children. One verse is worded as follows:—

"How kind was the Saviour to bid those children welcome, For there are many thousands who have never heard His name.

The Bible they have never read.

They know not that the Saviour said,

"Suffer the children to come unto Me."

God has been pleased to give us the Bible, which is the Word of God. No doubt you carry your Bible with you to the Sunday School, but do you know there is something better than carrying the Bible, and that is reading the Bible. There is something even better still, and that is believing it, and doing what the Bible tells you, for it points you to the Saviour of lost sinners, and calls upon you to receive this Saviour as yours. Through His death on the Cross you may receive forgiveness of all your sins, and then you will love Him and seek to please Him.

Paul wrote to Timothy and said:

"From a child thou hast known the Holy Scriptures, which are able to make thee wise unto salvation through faith which is in Christ Jesus" (2 Timothy 3. 15).

CONTRIBUTED BY S. J. J.

#### "FOR ME."

1

The God who made the Heavens
The Earth, the deep, deep Sea,
Has love for all His creatures
And He has love for me.

9

The Christ who died in anguish Upon Golgotha's tree,
Has surely died for sinners
And He has died for me.

2

The Blessed Holy Spirit,
Came down so graciously,
To guide the Saints to glory,
Will be a Guide for me.

4.

Thus Father, Son and Spirit,
The Blessed Trinity,
That I might be in Heaven,
Salvation wrought for me.
JOHN MAWHINNEY.

## To SUPERINTENDENTS, TEACHERS and SCHOLARS. Concerning Bible Searching in June issue.

We are sorry we omitted to state in instructions for Bible Searching that all answers are to be sent (as usual) to:—

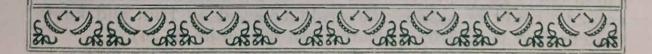
Mr. GORDAN TAYLOR, 94, FREEMAN ROAD NORTH, LEICESTER; marked B.S., in an unsealed envelope, postage Id. not 2½d.

All answers to be sent in NOT LATER than July 10th (overseas later).

## Christ.

- Christ is the God-anointed One,
  The Father's co-eternal Son;
  Made flesh in David's royal line,
  He came in God's appointed time.
- His was the throne of God on high,
  Far, far above the bright blue sky;
  Yet down to this dark world He came
  To bear man's grief and sin and shame.
- Rough was His path, and great the load Carried by Him, the Son of God:
  He was with grief acquainted well,
  His sorrows never tongue can tell.
- In town and village see Him go
  Giving relief to human woe,
  To child and parent, great and small,
  He gave His blessing unto all.
- Small was the gratitude received
  By Him, from such as had believed:
  Yet unto Him, the Son of Man,
  Bowed down the cleansed Samaritan.
- This is the Christ who on the throne
  Rules till all earth His sway shall own;
  Millions of men of every land
  Shall then be blessed by His pierced Hand.

J. MILLER.



## John.

Another of our saved Bible Searchers called " Home."

JOHN was a bright Australian boy of ten years, a real boy, diligent at his lessons, and keen at school games. How he loved to roam amongst the rocks in the Bush near his home! Sometimes he would take his little sister Helen with him, and when she was tired would carry her home "pick-a-back," much to her delight, they were such pals and so happy together.



John Megaw.

#### EDITOR'S NOTE.

John Megaw of Willoughby, Australia, was one of our most diligent Bible Searchers. John was the first overseas searcher to send his Bible Searching answer to us by Air Mail. We learn from his father (who sent us John's photo), that John kept, and much prized, a letter sent to him from the editor telling him of this.

"BE YE ALSO READY."

It was indeed true of John that from a child he had known the Holy Scriptures and through them he became wise unto salvation, for though so young he had learned, through hearing them read and explained in his home and in the Sunday School, that he was a sinner in God's sight and needed a Saviour; his young heart longed to know that Saviour, and in his anxiety about this he spoke to his father, who was only too pleased to point out to him that if he would believe on the Lord Jesus Christ (Acts 16. 31) as the One who died for his sin on Calvary's cross he could be saved. He truly believed on Him and knew that he had passed from death unto life (John 5. 24).

This was a very real experience to John, and from that time his Bible became a well-loved book. How he loved its beautiful stories, and in the evenings he would often come and ask for one to be read! As the story was opened up, he would listen intently, and the questions asked would shew his interest, the memory of those talks have left a lasting fragrance.

As he grew older the Bible Searchings in "Eagles' Wings" were a real pleasure to him, and when his name appeared amongst the successful searchers he was very thrilled. The arrival of our little magazine from overseas was always looked forward to by him.

It was only a short time ago that John opened the fly-leaf of his Bible and pointed to the date, March 15th, 1943, written on it below his name. There was such a bright smile on his face as he remarked, "It is three years ago since I was saved."

We little thought that bright young life which was opening up with such promise was so soon to close.

On Easter Monday he was out with his parents, but was not well, so an early return home was made. Three days later he was taken from those who loved him so dearly, to be with his Saviour.

During the last Gospel meeting at which he was present, that beautiful hymn was sung :—

Theres a land that is fairer than day,
And by faith we can see it afar,
For the Saviour waits over the way,
To prepare us a dwelling place there.

We shall sing on that beautiful shore
The melodious songs of the blest;
And our spirits shall sorrow no more—
Not a sigh for the blessing of rest.

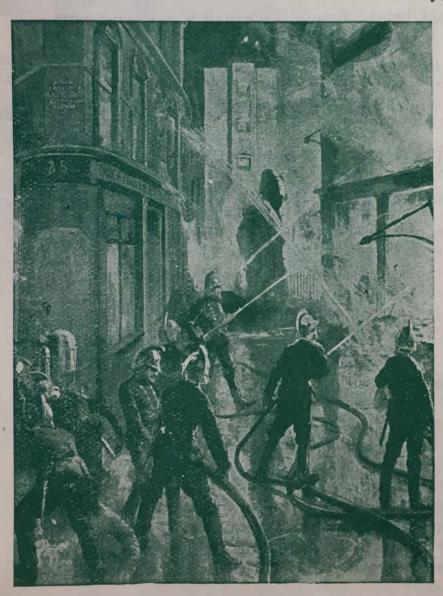
On reaching home, he remarked to his mother that this was his favourite hymn. As we laid the precious body to rest in the cemetery, under the shadow of the gum trees, we sang that hymn, being comforted in our sorrow that the parting was only "Till He come."

Like other boys (and girls, too) John often thought of the time when he would be "grown up," and expressed the wish to be a preacher of the Gospel. But this was not to be. His passing away to be with his Saviour has reminded us again of the uncertainty of life, and if others who read this record are stirred up to realise their need of a Saviour, and accept His offer of salvation, believing that he is willing and able to save them, they, like John, will know the assurance of salvation and the joy that Christ alone can give in this life, be it short or long, and can look forward to the hope of spending eternity with Christ in that land "That is fairer than day."

<sup>&</sup>quot;For the Saviour waits over the way,
To prepare us a dwelling place there."

## Are the Children Safe?

The snow, driven by a wind, was blinding. And coupled to the "black-out" conditions, it was dangerous to be out of doors. Persons loomed out of the darkness like phantoms, and disappeared in silence. The thought of home, with a warm welcome and a cheery fire, hastened our weary footsteps. When all at once the clanging bell of the fire-engine riveted our attention, and caused that strange inward surge of concern and fear. The smell of burning indicated that the fire was not far away. We turned and struggled through the snow in pursuit of the firemen. The sight that presented itself, when we reached the place, was one which we can never forget, perhaps the most tense and dramatic in a lifetime. The top flat of a big house, which had been converted into a children's nursery, was a raging inferno.



The top flat of a big house, which was a children's nursery was a raging inferno.

And there, at the door of the house, with one or two children in each arm, were nurses. shouting and screaming. It was only a matter of seconds before those who were first on the scene had grasped bundles of little ones, and stumbling over the rough ground, deposited them safely into the fire van. The excitement increased: nurses almost in hysterics, children cold and crying, firemen shouting out commands, and frantically digging in the snow in search for the hidden hydrants. The conditions were really frightful. The nurses heroically rushed out and in carrying the children whom a little while before they had

been bathing, and putting to bed, and gave them to the helpers. Oh! would the fire win the race? Self and safety were alike forgotten. One thing only filled the mind. Save the children! Oh,

#### SAVE THE CHILDREN!

At last it was announced that all the children were out, but no one could be certain. By this time kindly neighbours had taken the children, dried them, and wrapped them in whatever they could procure. Then a count was taken. With what a sigh of relief, we heard that not one was missing. We returned to the fire, to render any assistance we could. With strained faces, each new arrival asked the same question,

#### "ARE THE CHILDREN SAFE?"

Thank God! thank God! they were. The house was ruined, but nobody minded that so long as the children were safe. What might have been, but for the bravery of those nurses and firemen is too awful to contemplate.

As we wended our way homewards, we could not dispel the scene from our minds. We thought of our own dear children in the Lord's Day school. We thought of the danger that our boys and girls were in, regarding the future, and eternal judgment, and we resolved that we would brave whatever came in an endeavour to save the children. More earnestly we would tell the young of the Lord Jesus, Who alone would save them from Hell, and take them to Heaven when they died. Shortly after we met with the children, and sang that sweet old hymn:—

"Safe in the arms of Jesus, Safe on His gentle breast: There by His love o'er shaded Sweetly my soul shall rest."

And as we watched the expression on their different faces, we wondered how many were really resting in the strong arms of the Lord Jesus. Reader are you? "Oh," said a boy, with big tears in his eyes and sobbing sorely, "I want to be saved; I want to be saved." Reader, another question, "Would you like to be saved? "Yes," you say, "I would like to be saved." Then just now, go into some place where you can be alone, and bowing your knees tell the Lord Jesus that you want to be saved. Just tell Him all that is in your heart. Tell Him in truth that you believe that He died for you on the Cross. Yes, Jesus loved you, and died on account of your sin, and He wants to save you now.

# "Only trust Him, only trust Him, HE will save you NOW."

His words in John 6. 37 can be relied upon. "Him that cometh to Me I will in no wise cast out." W. STEWART.

# Bearing Fruit.

(FOR BELIEVERS).

Can be sung to Hymn 12 in P.H.S.S.

The bees are droning overhead, The skies are blue, the clouds are shed, The flow'rs and birds all speak of spring, So we should all rejoice and sing.

Fair nature's promises are good For bringing forth her bounteous food, And all her good and perfect fruits Come forth from hidden buried roots.



The apple tree with pinky bloom,
Doth all our hearts with hope illume;
Then come the fruits all hanging red,
When Autumn's here, when Summer's fled.

And thus may we our lives compare With this; that God may have His share From these poor barren hearts; our own In which the seed, His Word, was sown.

How fruitless we in every quest When we rely on our own best! But God will make the fruit abound, If in His word our roots we ground.

And from this ground much fruit we'll bear, Sweet, full, eternal fruit and fair. So let us seek His holy face Much fruit to bear, in His good grace.

### A School boy Substitute.

WOULD like to relate a touching story of my father's school days.

A small boy, frail of body, in a large school class of boys, one day possessed, like most boys, with a mischievous urge, com-

mitted an offence against the rules of the school.

He was duly called to account by the school master, and being guilty was to receive his punishment. The use of the cane in those days was indeed a painful experience, as my father assured me.

A big sturdy lad at the back of the room watched with pitying eyes his classmate going up to take his punishment. He looked so weak and frail beneath the stern countenance of the master, who held the cane in readiness to lay on the painful strokes.

All at once the big lad broke the silence of the classroom scene, where all waited for the strokes to fall, and cried out, "I'll take his punishment for him!" He was a noble boy indeed to go willingly up before all present and bear the guilty lad's thrashing. How grateful the weakling was when he stepped aside and watched the strokes fall on his willing substitute! The master could not turn and punish him too, for another had borne it all for him.

This is just a classroom scene, but it reminds me of Another who descended from heaven's throne to take the place of the guilty. The Lord Jesus is the One who came, and we were the ones who were guilty. Let us remember that God's word tells us that "all have sinned and come short of the glory of God" (Romans 3. 23), therefore all are guilty before Him. Remember also that God is so pure and holy that one sin, (be it a lie, a theft, an evil thought, an unclean habit) is sin in God's holy sight, and is sufficient to keep us out of heaven for ever. What a dreadful thought!

The Lord Jesus knew all this, and because He loved us so much, and knew also the great love of God His Father, He willingly stepped from His lofty throne in heaven and came down as the atoning Sacrifice for sin, and on Calvary's Cross God laid

on Him the iniquity of us all.

Like the noble lad of our story, God knew that we were weak and sinful, and needed One who was without sin to become the Sinbearer, to bear our sin and judgment. Please read Romans 5. 6-9.

Our sins could not be forgiven apart from the shedding of His precious blood, so this is just the reason, as the Bible tells us, that the Lord Jesus made His way up the hill of Calvary that day so long ago, to be crucified. Please read John 19.

It was during those dreadful three hours of darkness when He hung there, nailed hand and foot to the cross, that God laid the

fearful stroke of punishment due to us upon Him. "The Lord made to meet upon Him the iniquity of us all" (Isaiah 53. 6). The believer can say, "He was wounded for our transgressions, He was bruised for our iniquities" (verse 5).

> He knew how wicked man had been, And knew that God must punish sin; So out of pity Jesus said He'd bear the punishment instead.

It is God's desire for every dear boy and girl to look by faith to that scene, and see the Saviour giving His precious life that you might be saved. Receive Him to-day as your own Saviour, and you will know all your sins forgiven.

Do not put off accepting Jesus as your Saviour till another day. Death comes to some when least expecting, and you may be too late. "Behold, now is the accepted time; behold, now is the day of salvation" (2 Corinthians 6. 2). Believe on the Lord Jesus Christ and thou shalt be saved."

> R. Armstrong, Vancouver, Canada.

#### EXERCISE (For older Scholars).

Who was it for his sin became A wanderer and a fugitive?
Who though death-doomed, was by his God Forgiven, and told that he would live?
Who was it sinned and hanged himself?—
A suicide without a hope!
And who when he had sinned he fled,
Hung in a tree without a rope? Hung in a tree without a rope?

Teachers should seek to find the answers themselves, and encourage their scholars to bring their answers to them. The answers will be given next month.

Answers to July Bible Exercise.

A widow, Mark 12. 41-44. Israel in Malachi, Malachi 1. 7, 8. Abraham, Genesis 22. 16-18

#### OVERSEAS, MARCH, 1946, BIBLE SEARCHING RESULTS.

BRANTFORD (Ontario, Canada).—Excellent—J. Bell, G. Doholis, H. Doholis, K. Doholis (well done Katie!), R. MacFarlane, J. Reid, S. Reid, N. Scath, J. Thomas, M. Walker, D. Wiggins. Very Good—\*E. Doholis, \*D. Hodgson, \*J. Hodgson, P. Michell, C. Reid. Good—E. Cook, M. Mitchell, \*L. Pederson, \*J. Seath (well done Brantford, glad to see this increase!).

HAMILTON (Ontario, Canada).—Excellent—A. Curran, E. Curran, J. Petrie, K. Smith (nice paper Kay!), B. Tilson. Very Good—S. A. Burden, M. Coates, E. Sinker, G. Sinker,

IBADAN (Nigeria).—Very Good—A. Adeaglis, E. Odejokc (glad you are continuing!), D. A. Okeyode.

**SYDNEY** (Australia).—Excellent—J. Irvine, K. Irvine, G. Kennedy, R. Kennedy, B. Quigly (well done Barry!).

TORONTO (Ontario, Canada).—Excellent—Jean Pairman.

VICTORIA (British Columbia, Canada).—Excellent—A. M. Cave, S. Cave, B. Farndon, F. Farndon, M. Mars, R. McLeman, F. Merriman, M. Merriman.

Denotes First Attempt.

All communications for Eagles' Wings to be sent to Mr. J. Dorricott, "Fairhaven," 18, Arlington Road, Derby. Bible Searching answers to be sent to Mr. Gordan Taylor, 94, Freeman Road North, Leicester.

#### AN ARMY OF ANTS ON THE MARCH IN AFRICA



GO TO THE ANT THOU SLUGGARD; CONSIDER HER WAYS AND BE WISE. Proverbs 6. 6. (See next bage)

#### The Wisdom of the Ants.

THE wisdom of the Ant is proverbial. Solomon, the great and wise king, tells us, "There are four things which are little upon the earth, but they are exceeding wise. He mentions the ants first.

"The ants are a people not strong, Yet they provide their meat in the summer" (Proverbs 30. 24).



Their weakness and smallness is brought before us, yet these are no hindrance to them in making provision for their need in the coming winter. The wisdom with which they are endowed leads them to provide their meat in summer, for the time when they

can no longer send out their foraging parties (for so they do) to bring into their larders their winter store. For if they idle the summer away they must starve to death. The lesson in this we will shew later. Before we write more on this, we draw your attention to our picture on the front page. Here we see an army of ants on the march in Africa. In very hot countries they are seen in much greater numbers than in cooler climates. Their skill and wisdom is almost unbelievable! An eminent authority on ants says:—

"When an army goes forth to battle, to forage, or on a slave-making expedition, the engineers accompany it, because their expert services may

be required at any moment.

When studying and carefully watching an army of ants on the march, I saw them halt on the margin of a small stream. Scouts were sent along the banks to see if there were any means of crossing by a fallen branch, or perchance two trees on the opposite bank joining branches. The scouts returned reporting negative results. The leaders were seen to confer with others. Then a messenger hurried off to summon the engineers. After much serious talk, they left the presence of the anxious group and proceeded to investigate. Selecting a spot where the ground was soft, they sent for the workmen, and a tunnel was begun. Meantime the army camped out, and foraging parties disappeared into the herbage, to secure food for the resting army. Rapidly the tunnel was driven. The workmen staggered out in droves, each laden with a lump of soil, or a pebble. After casting this aside, they hurried into the tunnel for another load. Slowly but surely the tunnel was driven under the little stream's bed until an exit appeared on the opposite bank. Meanwhile the foraging parties of ants returned laden with provisions."

They have sentries, doctors, nurses, scouts, and slaves to do the heavy work. They have almost an uncanny knowledge of coming rain, and send out foraging parties to gather material to block their doorway to shelter them. So we are not surprised that they know of a coming winter and provide their food in summer. May we not pause and learn a lesson from the ants? There is a severe winter coming. There is a day of judgment

ahead. The summer of God's mercy and grace will soon be past. Some day, if you are not saved, you will hear or read the Gospel for the last time. The wintry day of death will hold you in its cold relentless power. How sad, how bitter will be the cry, if you put off salvation till it is too late and you say:—

"The harvest is past; the summer is ended and we are

not saved!"

This need not be. God has, through the atoning death of the Lamb of God (the Lord Jesus), provided salvation for you. By receiving Christ (who is the Bread of Life), in this day which is the summer of God's grace, you will thus prepare and be protected against the winter of God's righteous judgment.

The ants go out and collect what God graciously provides for them, and thus prepare against winter. Will you arise, and in all your need take God's rich provision for you, even salvation

through the Saviour, the Lord Jesus Christ?

Take salvation, take salvation, Take it now and happy be.

Go to the Ant, . . . Consider her ways, and be wise: Which having no chief, overseer, or ruler, Provideth her meat in the summer, And gathereth her food in the harvest.

(Proverbs 6. 6-8).

J. DORRICOTT.

The Lightning Conductor.

PERHAPS our young friends have noticed a strip of copper running up steeples, tall chimney stacks, and high buildings. If you look carefully you will see that it comes out of the ground, runs right up the building, finishing like an arrow above the highest point of the building.

You will say, "I wonder what this is for?" Let me explain. It is called a lightning conductor, so called because, in times of storm when there is thunder and lightning, the arrow attracts the lightning, conducts it down the copper band into the earth, and so saves the building from damage. The lightning thus conducted is what is known as "earthed."

Let me tell you what I think this is a picture of.

You know, those who refuse to believe in the Lord Jesus as their Saviour, are like a building without a lightning conductor,

which has the possibility of being damaged by a storm.

You also, may be struck down by the hand of death, unprepared for what is said in John 3. 36, "He that believeth not shall not see life, but the wrath of God abideth on him." That wrath may burst forth at any moment if you continue in your unbelieving state. But God has provided a righteous way whereby His

wrath against you may be diverted, or, as we say in the case of a lightning conductor, "earthed." The Lord Jesus died on Calvary's cross as the Sin Bearer, and because of having made atonement for sin through His death, the wrath of God can be diverted from you, if you, as a lost sinner will believe on His Son. Yes, that wrath can be "earthed" for you if you receive Him as your Saviour.

How terrible was the storm of God's wrath that Christ endured on account of sin, when the Lord laid upon Him the iniquity of us all (Isaiah 53. 6). Read this verse and note it well. It begins with "All" and ends with "All." If you, from your heart, apply the first "all" to yourself (all... gone astray), you may go in at this first "all," then if you truly believe the last "all," as myriads have done before you, you can come out of this

a saved sinner.

Remember the lesson of the lightning conductor.

He that believeth on the Son hath eternal life;

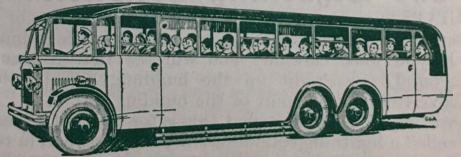
But he that believeth not the Son shall not see life,

But the wrath of God abideth on him.

(John 3. 36 margin). T. RYLANCE.

#### The Bus Driver.

ANY of you will have seen him very often. You can tell him by the clothes that he wears, especially by his cap which often bears upon it the word, "Driver."



But I want to tell you of a great surprise I got one day. I had just got into a 'Bus and was waiting for it to start, when through the window I saw a man; a cripple too he was, and strange to say, he was dressed as a Bus driver. I had seen him many times before, and I now wondered and asked myself, can he be a "bus-driver"? His legs were short, out of all proportion to his long, strong back. So I just waited and watched. At last the driver's door opened and into the cab got another man. "Oh, here's the driver," I thought, but I was wrong; for this man went over to the further side of the cab, and up stepped the cripple and took the driver's seat. What a surprise! The cripple was to drive the Bus after all. He's on test, and with

interest I settled to watch how he fared. I thought, can I trust myself to this cripple? Will he be a safe driver? At last the journey commenced. Slowly at first, as he took the corner, then he quickened his pace a little. Slowly again as he approaches a bend. Then he comes to open road and away he goes. I also took note of his stops to alight and take on passengers. After we had covered a journey of four miles, I came to the conclusion that the crippled driver did very well indeed, and would certainly pass his test.

As the bus sped along, I thought of another journey—a more important one. It is the journey to Heaven. Are you travelling, boys and girls, this way? Have you placed yourself into the SAFE hands of the One who can take you there? Unlike our crippled driver, the Lord Jesus is without any imperfections. There is no possibility of failure with Him. His perfect work on the cross, and His exaltation to God's right hand as a Prince and a

Saviour is all-availing for you.

Being very curious to know if the cripple had passed his test, I was very pleased to see him one day dressed still as a bus driver, though off duty. This confirmed my view that he would be a safe, reliable driver. Yes! we are prepared to board the bus and trust the driver. We take the train, and again put ourselves into the hands of the engine driver. Many people too in journeying use the aeroplane, and calmly trust the pilot. Will you not then by faith calmly place yourself into the hand of the loving Saviour who is able and willing to safely pilot you to Heaven? In wondrous love for you and me He died as the Sacrifice for sin upon the cross. Now He lives in Heaven and is able to save all who believe on Him. By receiving Him as your Saviour you can avail yourself of His precious promise.

"I come again, and will receive you unto Myself:
That where I am, there ye may be also" (John 14. 3).

G. A. JONES.

#### BIBLE EXERCISE (For older Scholars)

What city was for Palm trees famed?
Its waters were a thing of naught:
Its walls fell at the trumpets' blast,
When they 'gainst Israel would have fought.
There too the blind received their sight:
A household there was saved by grace:
It was the city of the curse.
Now give the Scriptures and the place!

Teachers should seek to find the answers themselves, and encourage their scholars to bring their answers to them. The answers will be given next month.

Answers to August Bible Exercise.

Cain, Genesis 4. 11-14. David, 2 Samuel 12. 13. Judas, Matthew 27. 3-5.

Absalom, 2 Samuel 18. 9, 10.

JUNE BIBLE SEARCHING RESULTS. (From Overseas).

RATON (New Mexico). -Excellent—Ralph Higgins, Alex Cox, D. B. Cox (very neat). Very Good—I. Ulibarri, M. Ulibarri. (Please Note.—Some did not give their age). TORONTO (Ganada).—Excellent—B. Paterson. BRANTFORD (Canada).—Very Good—E. Cook.

### Our Pert Pictorial Bible Seaching.



There is something about Flies in Ecclesiastes. Between 8th and 10th chapters.



Search the Scriptures.

This verse is found between the 4th and 6th chapters of John.



Find a verse about Bees. Between Psalms 115 and 118.



You will find a verse about the Cock in the Gospel of John between 12th and 14th chapter.



Foxes are mentioned between 7th and 9th chapters in Matthew.



A hen and chickens are mentioned in Luke, between 12th and 15th chapters.



Something is said about the LIVING Bread in 6th chapter of John's Gospel; what is it?

10



A bird's nest is spoken of between Deuteronomy 20th and 23rd chapters.



We are told of someone who is "as a roaring lion" in the first epistle of Peter. Not in the first three chapters.



There was One who was so poor that He said "Shew Me a penny." This verse is found between Luke 19th and 22nd chapters.



There is something that GOD SO LOVED. Find the verse in early part of the Gospel by John.



In Peter's second epistle a Sow is mentioned, find the verse.

J.D.

### The Cross of Lorraine.

URING the war years a large number of French sailors were stationed in our district. These members of the French Navy were a familiar sight in our town, their uniform being quite different from that of sailors from other countries who used the port. Of course, now that peace has come, most of these Frenchmen have returned to their native land.

However, so that their stay in this part of the country will not be forgotten a memorial has been erected. This takes the form of a massive cross—a replica of what was the badge of the Free French people—and it has been erected on a hill overlooking the

Firth of Clyde.



The anchor Cross of Lorraine stands on a hill overlooking the Firth of Clyde.

As you look up, this Cross of Lorraine attracts your attention, and when you have climbed the hill to the monument you find the meaning of it, for, written in French and English is the story of the deeds of French sailors who were based here. We read of happenings, which were but rumours many months ago, and are now revealed as facts.

But I would like to bring to your notice another cross which also stood on a hill; and upon it also was written the explanation. This time in three languages, Hebrew, Greek and Latin. Nailed above the cross were these words:—
"This is Jesus of Nazareth the King of the Jews."

In this case it is not sufficient to think of the cross alone, for this was only a Roman method of putting to death. The Person crucified thereon demands our attention.

The Cross in itself is of no avail. All our hopes for time and eternity lie in the Saviour who there was crucified and on the third day rose again.

John Bunyan could write:-

Blest Cross! Blest Sepulchre!
Blest rather be

The One that there was put to death for me Can you, will you look unto Him and be saved?

#### The Deserter.

WAS walking through one of the streets in G—— recently, when my attention was drawn to a large crowd of people, who seemed very interested in something very unusual that was taking place.

I enquired from a lady what was the matter, and she told me that it concerned a young man who was a deserter from the British Army. A policeman had arrested him and placed him in a police box.

I joined the crowd to see what would happen, when suddenly a police van appeared, and some military men came out, and

handcuffed the young man, and took him away.

My thoughts followed this young man who would have to appear before a military tribunal, and receive his sentence for his offence against his King and Country. He had committed a crime, and he would have to pay the penalty. No one could suffer for him he must bear it himself.

This incident caused me to think of our state and condition in God's sight. We have deserted and sinned against God. For "All have sinned and fall short of the glory of God" (Romans 3. 23). We stand condemned and ought to be punished. But unlike the young man who had none to take him from the penalty of the law, we can speak of One who was delivered for our offences, and raised again for our justification (Romans 5.).

We can speak of the wages of sin, but we can also tell of One who has borne the full penalty for our sin at Calvary, even the Lord Jesus Christ. Through His atoning death you can be pardoned

and go free.

We would impress upon each reader the necessity of accepting the free pardon which He willingly offers. If you refuse this, you will receive the wages of sin which is eternal death, even the lake of fire. We would warn our readers too, that God has appointed a day, in the which He will judge the world in righteousness by the Man whom He hath ordained (even Jesus Christ); whereof He hath given assurance unto all men, in that He hath raised Him from the dead (Acts 17.).

With this warning we would also give you the precious words of the Gospel in John 3. 16, "For God so loved the world, that He gave His only begotten Son, that whosoever believeth on Him

should not perish, but have Eternal Life.

We plead with you dear reader (if you have not already done so) to believe this wonderful message of love, and turn from the world's fleeting pleasures and remember that

> Christ bore the penalty, He suffered on the Tree, To set the captive free, We praise His name.

MYRTLE HYDE.

#### EAGLES' WINGS JUNE 1946 BIBLE SEARCHING RESULTS.



Bringing in results.

The holiday season has reduced our numbers somewhat this time. The total number of searchings received was 896, and we give a hearty welcome to 69 new searchers. \* Denotes first attempt. If your name does not appear in the list, and you have posted a searching, please write at once to Mr. J. Dorricott, Fairhaven, 18, Arlington Road, Derby, but please remember that ALL BIBLE SEARCHING ANSWERS MUST BE SENT TO MR. GORDON TAYLOR, 94, FREEMAN ROAD NORTH, LEICESTER.

ABERDEEN.—Excellent—B. Burnett, R. McLeod, J. Roberts, M. Roberts, F. Robertson, R. Robertson, T. Robertson, A. R. Smith, S. Thomson. Very Good—A. Cowie, D. Cowie, H. Duncan, G. McLeod, A. Thomson, E. W. Thomson. ABERKENFIG.—Very Good—G. D. Williams. ADLINGTON (Lancs.).—Very

Good—J. Harding, P. Hodgson. ARMAGH.—Excellent—K. Adams, L. Cahill, E. Clarke, J. Clarke, John Clarke, Mc. Clarke, N. Gillespie, M. Killen, E. F. Pallett, S. Thompson. Very Good—G. Clarke, D. Thompson. ASHGILL.—Excellent—\*H. Anderson, \*A. Kerr, \*H. Kerr, M. McQueen, Margaret McQueen, One no name! Very Good—J. Anderson, H. R. McQueen. ATHERTON.—Excellent—L. Birchall, M. Birchall, A. Chadwick, E. Chadwick, M. Cunliffe, D. Jones, K. Jones, G. Moores, M. Smith, G. Treacher, M. Treacher, A. Weilding. Very Good—R. Amos, \*J. Baker, E. Grant, F. Harris, F. Hayes, \*Keith Jones, B. Potts, D. Treacher, I. Fryner. Good—A. Potts. AYR.—Excellent—J. Boon, J. Hainey, J. Kellie. Very Good—John Hainey.

BARRY.—Excellent—Mavis Jones, Mildred Jones. BARROW-IN-FURNESS.—Excellent—N. Creasey, M. Joughin, D. Probert, J. Probert, Y. Probert, A. Wilcock. Very Good-J. Bourne, D. Creasey, B. Joughin, \*B. Murray, \*G. Murray. Good—E. Shepherd. BATHGATE.—Excellent—A. Cameron, M. Cameron, J. Fisher, R. Fisher, A. Franssen, H. Franssen, E. Haddow, H. Haddow, M. Ramsay, M. Smith, S. Smith, \*W. Wark. Good—P. Haddow, E. McIntyre. BELFAST.—Excellent—D. Clarke, Jim Clarke, W. Clarke, C. Coyne, M. Coyne, P. Drain, D. Mawhinney. Very Good-E. Clarke, E. Doran, M. Doran, \*J. Harper, \*G. Macdonald, N. Macdonald, \*K. Moffatt, A. Smyth. Good-\*J. Bittles, \*G. Harper. BEXHILL-ON-SEA .- Excellent - M. Andrews (very good explanation!). BIRKENHEAD .- Excellent - J. Dickinson, J. Fletcher, P. Hill, D. Horne, D. Hyland, E. Leigh, S. Moseley, M. Roberts, R. Williams. Very Good—T. Doodson, A. Lyland. BIRMINGHAM.—Excellent—M. Carty, R. Carty, M. Elson, \*R. Fellons, P. Griffiths, M. Harris, A. Taylor, G. Teal, \*D. Watson. Very Good-A. Brown, D. Brown. Good-G. Alcock, P. Bardsley, B. Draper, G. Howl, A. Kitching, D. Lees. Well Tried-D. Harris. BLACK BURN.—Excellent-K. Cotton. Very Good-A. Cotton, P. Hindle. BOLTON.-Excellent-E. Doubtfire, M. Johnson, J. McClelland, E. McDonald, N. Moores, E. Parkinson, J. Sankey, C. Worthington. Very Good-A. Sammon. CARDIFF (Kings Road).—Excellent—M. Burgess, J. Butlin, S. Dewey, F. Hurley, R. Jones, S. Laho, M. Palmer, M. Stockwell, M. Toms, P. Toms, R. Toms, B. Webb. Very Good-\*I. Collier (well done Irene!), R. Palmer, \*E. Saville. (Ely).—Excellent—B. Chick, A. Edwards, Z. Edwards, A. Jones, J. Musgrave, V. Musgrave, J. Norris, R. Norris, R. Price, J. Simpson, M. Taylor. Very Good—B. Edwards, D. Edwards, J. Frost, K. Richards, T. Richards, R. Saunders, F. Talbot, M. Talbot. Good—R. Wakely. CARLISLE.— Excellent—M. Johnston (well done Margaret!). CHEADLE.—Excellent—B. Pattinson, J. Salt, K. Balt S. Salt (very neat paper Shirley!). CLYDEBANK .- Excellent - A. Boyd, G. Dyer, \*I. Parker. Very Good -C. Boyd, \*E. Dick, B. Dow, M. Dow, J. Gallacher, M. Hamilton, F. McCallister, \*B. McCarte, A. McClure, N. McKinlay, P. Moore, \*N. Parker, L. Tivendale, H. White. Good-J. Campbell. COOKSTOWN. Excellent—A. S. Bell, C. W. Bell, F. E. Bell, E. Black, M. J. Charles. Very Good—M. Anderson, W. H. Bell, M. Henry, C. Loughlin, E. R. Loughlin, W. R. Loughlin, R. Smith (no age!), M. E. Warwick. Good-W. D. Bell, Jean Charles. COWDENBEATH.—Excellent—\*M. Aitken, E. Allan, I. Allan, R. Allan, M. Beveridge, A. Bowman, J. Bruce, M. Bruce, \*M. Cowan, E. Haddow, J. Haddow, M. Haddow, J. Hunter, R. Hunter, M. S. B. Park, M. Park, J. Paterson, I. Ross, G. Ross, \*M. Watters, J. Winsborough, M. Winsborough, \*W. Winsborough, J. Wishart, \*B. Woodman. Very Good-A. Thomson. CROSSFORD.-Excellent-M. Milne. Very Good-H. Brindle, M. Rankine, \*M. Thomson. CROWBOROUGH.-Excellent-B. French. J. French, R. Taylor. CULLEYBACKEY .- Excellent-J. Baxter, D. Crabbe, E. Hutchinson, W. Hutchinson. A. Kirkpatrick, A. McKendry, Annie McKendry, A. McKeown, E. Mitchell, J. Stewart. Very Good-W. Campbell, A. Millar.

DERBY (Iron Tent).—Excellent—G. W. Fairholm, B. Grattidge, B. Lowe, S. Preston, \*J. Webb, J. Wymer. Very Good—J. Browning, S. Granger, D. Henshall, A. Johnson, B. Johnson, K. A. Johnson, K. Johnson, M. Johnson, H. Joyce, \*J. Rawlings, J. Rees, E. M. Shardlow (sorry your name was given incorrectly last time Edna!), S. Wymer. Good—P. Barrington, B. Hallas, A. Heldreich, M. Joyce, \*E. Rees (well done Elaine!), M. Solway, R. Solway, \*B. Webb, R. Cholerton. (Sinfin).—Excellent—F. Gaskins, P. Gaskins, S. Hawley, B. Ince, S. Ince, P. Neal, P. Whiteley, I. Wooley. Very Good—M. Hawley, B. Kirk, P. Beebe. Well Tried—K. Harvey, K. Reedman, S. Page. DOUGLAS (I.O.M.).—Excellent—D. Collister, J. Welford. Very Good—J. Kneale, J. R. Swain, J. Welford. Good—R. Norman, M. Welford. Well Tried—D. Lawton (well done Douglas!).

EDINBURGH.—Excellent—D. A. Bunting, W. D. Bunting, H. Campbell, A. M. Hope, K. Hope, W. Taylor.

FAIRLIE (Ayrshire).—Excellent—\*S. A. Dorricott (well done Shirley!).

GLASGOW (Cathcart Road).—Excellent—F. Archibald, J. Ballantyne, L. Beattie, F. Borland, J. Borland, B. Cassidy, R. Cassidy, D. Graham, H. Graham, M. Martin, D. Renfrew, M. Stewart, J. Wilson, E. Windle. Very Good—H. Ballantyne, C. Bowie, Chrissie Bowie, J. M. Brown, M. Callaghan, R. Callaghan, B. Clements, M. Clements, I. Ferguson, \*J. Lewis, T. Marks, W. McBride, J. Meechan, W. Stewart, C. Stokes. Good— E. Allan, M. Evers, M. Gear, Matilda Gear, J. Gordon, D. Gould, M. Gould, B. Head, P. Kelly, B. McLean, M. Parker, C. Smart. (Govan).—Excellent—J. Boyd, \*J. Calderhead, A. Malloy, C. Laverty, D. Laverty, D. McIlreavy, C. McIntyre, R. McIntyre, J. McIlvenna, H. McKim, M. Purse, B. Young, S. Young, Very Good-C. Adie, R. Brand, B. Brown, M. Brown, R. Brown, J. Carmichael, B. Donaldson, W. Hodgson, H. Lawson, N. McCart, R. McGurn, I. McIntyre, B. Paterson, G. Robertson, J. Robertson, \*M. Stackpool, \*W. Stackpool, D. Wallace, W. Wallace. Good-J. Kenneway, E. Wallace, Walter Wallace. Well Tried-Betty Paterson (age 8). (Kirkintilloch).—Excellent—Joyce Alston (our youngest searcher, age 5), W. Alston, E. Anderson, M. Blackwood, J. Comrie, H. Darrock, C. Duncan, \*G. Gray, M. Hinde, M. Hogg, A. Marshall, Alice Marshall, M. Muir, \*H. Bass. Very Good—M. Ure. Good—\*J. Marshall. (Parkhead).—Excellent— R. Grant (well done Robin!), \*A. McLean, L. Shaw, R. Shaw. Very Good-T. Cardiff, R. Hamilton, S. Heggie, J. McGuire, M. Michie, I. Money. Good-\*M. McKechnie. Well Tried-one no name!! (Partick).-Excellent.—J. W. Archibald, W. Breslin, J. Rodgers, M. Thomson, S. White. Very Good—J. Baxter, I. Dale, A. Gibson, S. Gouch, E. Jennings, A. Laird, F. MacDonald, M. MacDonald, N. MacDonald, R. McEwan, P. Mirrlees, M. Scott. Good-M. Carson, I. Hyslop, B. McGaffin, M. McGaffin, A. Ramsay, J. Todd, I. Warnock. GREENOCK.—Excellent—M. McKaig, E. G. Renfrew, E. M. Renfrew. Very Good—J. Duggan, W.McFarlane, G.Millar, M. Mitchell.

HALIFAX.—Excellent—B. Cannings, G. Cannings, J. A. Kirkman. HAMILTON.—Excellent—C. Cunningham, S. Cunningham, B. Lindsay, George Lawson. HARTHILL.—Excellent—A. Cooper. Very Good—J. Cooper, J. Marshall, S. Marshall, A. McKendrick, H. McMullan, \*J. McMullan, \*D. McPhail. Good—\*B. McCarroll, J. McMullan. HAYDOCK.—Excellent—\*L. Berry, D. Harrison, D. Hazeldine. Very Good—L. Hazeldine, H. Leyland, J. Leyland, K. Leyland, E. Molyneux, D. Seddon. HAYES.—Excellent—B. Lewin, J. Lewin.

ILFORD.—Excellent—B. Buckland, J. Cubberley, P. Gilbert, J. Jordan, D. Livermore, E. Livermore, M. Livermore, R. Lynch, B. Tracey, E. Tracey, R. Wright. Very Good—K. Gardiner, S. Gilbert, B. Jones, K. Jones, J. Smith, P. Smith. Good—S. Onslow. INNERLEITHEN.—Excellent—I. Brunton, J. Eckford, L. Robson, I. Tait. Very Good—L. Notman, G. Salton, T. Scott, D. Brunton. Good—N. Heaney.

KINGSTON (Burritt Hall).—Excellent—C. Barnes, H. Bartlett, B. M. I. Beau, R. Crawt, J. Mires. Very Good—J. Barnes. Good—P. Harding, R. Harding, J. Pearce, S. Ryan. (Bonner Hill).—Excellent—V. Brown, P. Cummings, J. Harding. Very Good—J. Andrews, M. Bourne, I. Ferguson, P. Flack. Good—P. Andrews, D. Bourne, M. Bourne, D. Cooper, B. Furnell, \*W. Lale, M. Robinson. KNOCKNACLOY.—Excellent—G. Thompson.

LEICESTER (Broomfield Hall).—Excellent—B. Bates, P. Barnett, M. Balcombe, P. Chawner, A. Clarke, E. Clarke, M. Elliott, Mary Elliott, D. Fear, J. Harratt, C. Howard, D. Jones, M. Lamb, D. Luck, D. Parker, D. Roberts, N. Stapleton, M. Sutton, J. Tiplady, B. Upton, J. Upton. Very Good—J. Almey, B. Attewell, J. Barnett, B. Barsby, B. Breckon, A. Briggs, C. Camp, M. Chawner, S. Chawner, B. Cheltham, W. Flewitt B. Gould, L. Green, S. Hewitt, P. Oswin, R. Parker, L. Reeve. Good—G. Barnett, B. Chapman, G. Hastings, E. Keech, J. Rayns, T. Fryer. (Northfield Hall).—Excellent J. Adams, E. Burrows, E. Geary, J. Grocock, R. Kendrick, D. Kennell, S. Kennell, N. King, M. Parker, M. West, M. Whiteman. Very Good—H. Crane, J. Grocock, E. Hobbins, M. Norton, J. Royston, M. Royston, E. Rudden, B. Taylor, J. Welsh, S. Welsh.

Good—J. Farrar, J. Hill, H. Hines (no scriptures these last three!), K. Teagle, E. Fichett, P. Weston. Well Tried—L. Hart. (Uppingham Road).—Excellent—M. Dennison, P. M. Thompson. Very Good—J. Pereira. LEIGH.—Excellent—J. Fine, F. Holmes, A. Price. Very Good—J. Price. Liverpool.—Excellent—E. Banks, R. Butler (well done Robert!), Ruth Butler, \*E. Moore (well done Eva!), B. Plumb, E. Plumb, R. Plumb, K. Reid, R. Roughley, D. Wannop, J. Wannop. Very Good—K. Adcock, \*B. Gaskell, J. Leahey, S. Leahey, W. Mayor, M. Richards. Good—I. Hickson, J. Hobbs, \*N. Leahey, M. Murphy, E. Richards, \*D. Turton, \*C. Tyrer. LCNDON (Denmark Hill).—Excellent—J. Chedgy, A. Evans, D. Evans, R. Gewitzke, A. Reeve. Very Good.—\*M. Brown, \*S. Burgess, \*C. Capon.

MAGDUFF.—Excellent—V. Gould, G. McKay, E. Robertson, J. Sellar, J. Stuart, D. Watt, J. Watt, Joseph Watt, R. Watt, E. Wilson. Very Good—A. Downie, J. Downie, B. Gould, M. Watt, D. Wilson. MAIDSIONE (Assembly Hall).—Excellent—E. Dann, D. Lee, J. Lee, A. Stewart, E. Yates. Very Good—M. Woodsell. Good—T. Misson. (North Down Glose).—Excellent—J. Mutimer. Very Good—R. Bent, J. Dadd, H. Darley, M. Owen, A. Rillie, F. Wickens. Good—D. Richardson. MANGHESTER.—Excellent—E. Bowker, \*D. Dootson, M. Jones, P. Jones, L. Turner. Very Good—\*F. Dootson, E. Hardman, J. Singicton, R. Spence. Good—V. Bentley, M. Hardman. MATLOCK.—Excellent—F. Gould, J. Gratton, S. Gratton, B. Millar, M. Thompson, J. Towndrow, C. Underwood. METHIL.—Excellent—C. Montgomery, I. Montgomery, J. Montgomery, Janet Montgomery, M. Paton, B. Philp, D. Philp, I. Reilly, E. Thomson. Very Good—E. Ballingall, James Montgomery, J. Reid, Ella Thomson. Good—R. Surgeon. MIDDLESBROUGH.—Excellent—M. Briggs. MOTHERWELL (post mark!).—Excellent—No name. MOUNTAIN ASH.—Excellent—M. Organ, G. Thomas. Very Good—C. Organ. MUSSELBURGH.—Excellent—J. Forrest, J. Glen, J. Lindsay, A. McWatt. Very Good—B. Auld, M. Ramage, A. Steadman, one no name. Good—J. Peddie, G. Steedman, M. Steedman

NEWHALL.—Excellent—R. Bowler, G. Matthews, J. Ward.

OLLABERRY (Shetland).—Excellent—K. Peterson, J. Peterson.

PAISLEY.—Excellent—J. Cowden, T. Fellowes, W. Young. Very Good—G. Brown, J. Brown. Good—M. Campbell, J. Young. PENYGRAIG.—Excellent—R. Lee, H. Wellock. Very Good—K. Lee. PORT-SLADE.—Excellent—M. Davey. Very Good—A. Davey, K. Elliott, G. Fuller. PORT GLASGOW.—Excellent—A. Hoey, B. Hoey, M. Hoey, W. McClelland, R. Renfrew. Very Good—M. Airth, P. Clabby, B. Martin. Good—A. McConnachie.

SHIRLEYWICH (Stafford).—Excellent—M. Hydes, O. Jones. SHOTTS.—Excellent—A. Pearson. ST. HELENS.—Excellent—J. Battersby, J. Bowes, J. Farrar, G. Lightfoot, J. Lightfoot, G. Molyneux, D. Raspin. Very Good.—J. Barrett, S. Chisnall, F. Fairhurst, J. Hill, R. Hurst, J. Raspin, B. Thelwell. Good.—M. Barnes, J. Barrett, D. Lever (no scriptures!), R. Shanwood, I. Stringfellow, J. Stringfellow, \*B. Thompson. SOUTH-PORT.—Excellent—B. Scott. SOUTH SHIELDS.—Excellent—R. Atkinson, R. Tomlinson, M. Tyrrell. Very Good.—M. Brown, R. Jarwick, J. Walker, S. Young. SPALDING.—Excellent—F. Spindler. STANMORE.—Excellent—J. Griffin. STOKE-ON-TRENT.—Excellent—D. Adams, J. Adams (fine paper!), M. Adams, H. Bennison, B. Knox, D. Tranter, M. Tranter, P. Wareham. Very Good.—G. Bennison, M. Bennison. Good.—G. Edmondson, N. Edmondson, F. Griffiths, J. Griffiths, N. Griffiths, \*C. Guy, \*S. Guy, \*F. Wareham, G. Key. (Mount School).—Excellent—J. Merrick, B. Peace, D. Pickford, J. Darlington, B. Holloway, E. Cartwright, V. Lawson, \*I. Johnson, \*E. Rhodes, R. Watts, S. Ridge, J. Plant, K. Davies, R. Connor, \*H. Barnett, T. Downing, \*J. Badger, E. Dean, R. Reeves, \*R. Flanders (a very fine set of neat papers!).

TROEDYRHIW.—Excellent—B. Jones.

WEMBLEY.—Excellent—B. Avon, J. Caterer, \*D. Francis, \*J. Gaskin, \*J. Gulliver, E. Hilton, A. Hobley, D. Hobley, E. Hobley, R. Hobley, \*B. Jones, \*B. Massingham, \*J. Matthews, P. O'Neill, R. Parker, \*I. Samuel, \*J. Warner. Very Good—\*D. Causton (glad to see so many new searchers!). WIGAN.—Excellent—N. Bentham (very good explanation!), A. Caldwell, J. Howarth, N. Martin. Very Good—A. Bird, J. Bird, M. Bird, H. Ollerton, N. Ollerton. WILLINGTON QUAY.—Excellent—R. Anderson, Rose Anderson, M. Birkley, M. Chambers, G. Fuller, I. Fuller, M. Fuller, N. Joyce, S. Joyce, A. McKean, P. Nellist, M. Patterson, M. Sayers. Very Good—E. Birkley, J. Birkley, R. Fleming, R. Keeler (glad to see big increase in numbers!). WILLOWS GREEN (Chelmsford).—Excellent—R. Amos. WISHAW—Excellent—S. Armstrong.

YEOVIL.—Excellent—J. Boobier, D. Finch, E. Finch, P. Finch, J. Francis, M. Francis, M. Lodge, J. Parsons, P. Parsons, A. Sartin, V. Sartin, V. Scriven, D. Shaw, K. Stone, P. Tuck. Very Good—M. Fint. Well Tried—P. Bown (you have not yet completed a searching!).

STOP PRESS-BRITISH ISLES.

The following were received too late for classification in the June, 1946, results list:—BIRMINGHAM—

Excellent—A. Elson (you did not give your name, Arnold!). DERBY—Excellent—M. Munday. GLASGOW—

(Balornock)—Excellent—A. MacLeod. Very Good—\*M. Macleod. Good—A. Lynch, B. MacLeod, •N. MacLeod. GLASGOW (Springburn).—Excellent—C. Mooney, E. Mooney. Very Good—A. Davidson, M. Davidson, F. Low, M. Stevenson, M. Wilson. FINAL TOTAL NOW 910.

# A SUMMARY OF THE JUNE, 1946, BIBLE SEARCHING RESULTS. (Alphabetical according to Town).

| TOWN.  | Total No. of<br>Searchers.<br>New<br>Searchers.   | TOWN.   | Total No. of<br>Searchers.<br>New<br>Searchers.   | TOWN.  | Total No. of<br>Searchers.<br>New<br>Searchers.  |
|--|---|---|---|--|--|
| ABERDEEN ABERKENFIG ADLINGTON ARMAGH ASHGILL ATHERTON AYR BARRY BARROW BATHGATE BELFAST BEXHILL-ON-SEA BIRKENHEAD BIRMINGHAM BLACKBURN BOLTON CARDIFF— (Kings Road) (Ely) CARLISLE CHEADLE CLYDEBANK COOKSTOWN COWDENBEATH CROSSFORD CROWBOROUGH CULLEYBACKEY DERBY— (Iron Tent) | 15 — 1 — 2 — 12 — 8 3 22 2 4 — 2 — 12 2 14 1 17 5 1 — 11 — 18 2 3 — 9 — 15 2 20 — 1 — 18 4 15 — 18 4 15 — 26 5 4 1 3 — 12 — | *FAIRLIE GLASGOW— (Cathcart Road) (Govan) (Kirkintilloch) (Parkhead) (Partick) GREENOCK HALIFAX HAMILTON HARTSHILL HAYDOCK HAYES ILFORD INNERLEITHEN KINGSTON— (Burritt Hall) (Bonner Hill) KNOCKNACLOY LEICESTER— (Broomfield Hall) (Northfield Hall) (Uppingham Road) LEIGH LIVERPOOL LONDON Macduff MAIDSTONE— (Assembly Hall) | 1 1 41 1 36 3 16 3 11 2 24 7 7 3 4 10 3 9 1 10 7 18 9 10 1 11 1 11 1 11 1 11 1 11 1 11 1 11 | METHIL MIDDLESBROUGH MOTHERWELL MOUNTAIN ASH MUSSELBURGH NEWHALL OLLAFERRY PAISLEY PENYGRAIG PORTSLADE PORT GLASGOW SHIRLEYWICH SHOTTS ST. HELENS SOUTHPORT SOUTH SHIELDS *SPALDING *STANMORE STOKE (Mt. School) TROEDYRHIW WEMBLEY WIGAN WILLINGTON QUAY *WILLOWS GREEN WISHAW YEOVIL | 14 — 1 — 1 — 3 — 11 — 3 — 11 — 3 — 2 — 7 — 4 — 9 — 2 — 1 — 1 — 1 — 1 — 1 — 1 — 1 — 1 — 1 — 1 |
| (Sinfin) Douglas Edinburgh   | 28 4<br>14 —<br>8 —<br>6 —  | (Assembly Hall) (North D.C.) MANCHESTER MATLOCK   | 8 <del>-</del><br>11 2<br>7 -   | * Denotes from indiv   |  |

#### INSTRUCTIONS FOR OUR PICTORIAL BIBLE SEARCHING WHICH WULL BE FOUND ON PAGE 70 OF SEPTEMBER EAGLES' WINGS.

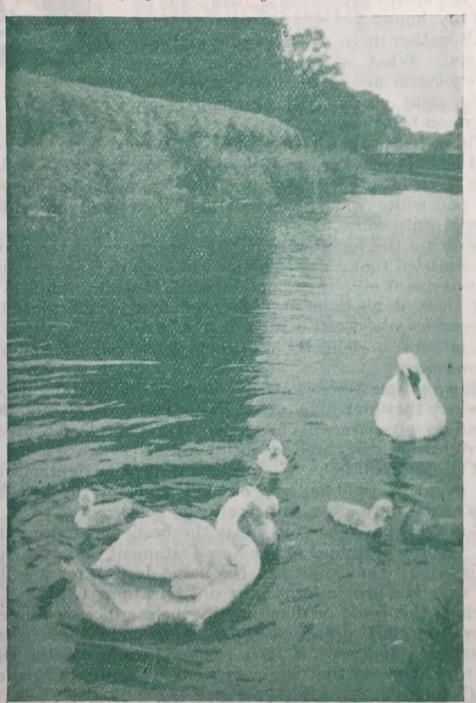
- (1) For those of Ten Years and over. Take the illustrations in their order as numbered. You will find and write out the verse (or the part of it that applies to the picture), giving Book, chapter and verse, also put the number of the illustration against each verse. Thus: Number 1. A Fly. Then write the verse.
- (2) For those of Eight and under Ten Years of age.—Choose any six of the illustrations (but one *must* be number 11), find and give the Book, chapter and verse of the six, but only write out the verse of number 11. Give the number against each reference.
- (3) Those under Eight to only find the verse of any six of the illustrations, and state the Book, chapter, and verse. No verse need be written out, but give the number of the picture against each reference.

#### The Pictorial Bible Searching will be found on page 70 of Eagles' Wings.

If this is your First Attempt please say so. Send in your answer not later than October 10th, the earlier the better (Overseas later), give your name, age, town and Sunday School; if not attending a Sunday School give your home address. Put your answer in an unsealed envelope, put B.S. on the left hand side and affix 1d. stamp (not 2½d.). Post your answers to Mr. G. Taylor, 94, Freeman Road North, Leicester, NOT to Mr. J. Dorricott.

# THE SWANS ON THE DAM

What a pretty sight it was as they swam across the water!



All things bright and beautiful, All creatures great and small. All things wise and wonderful, The Lord God made them all. He gave us eyes to see them,
And lips that we might tell
How great is God Almighty,
Who hath done all things well.

# The great change or Fit for Beaven.

POR several days I have been watching a number of swans that have come to spend the winter in a dam not far from my home.

Altogether there are five swans and four cygnets. What a pretty sight it was as they swam across the water, when they

caught sight of someone who had come to feed them! (See

picture on front cover).

These baby swans when they were born were as brown as could be. It was hard to believe that one day they would be as white as their parents, but, as the days passed, when they moult, first one white spot appeared, and then another, until they became quite white.

Noticing the big change in the appearance of these swans, I was reminded that a great change will have to take place in every unsaved one if ever they hope to reach Heaven. Sinners cannot enter there in all their sin, they need to be made white through

the precious blood of Christ.

God hates sin, and He has provided the way by which it may be removed.

Many people realise, of course, that sin must be got rid of, but where they go wrong is in their method of doing this. Nothing we can do ourselves will change us. Long ago Isaiah wrote, "All our righteousnesses are as filthy rags" (Isaiah 64. 6). These must all be discarded. We must be clothed in righteousness His own, even the righteousness of God which is through faith in Jesus Christ unto all and upon all who believe.

God's way of removing sin is the best, and indeed the only way. At the beginning of the New Testament God says, speaking of His Son, "Thou shalt call His name Jesus; for it is He that shall save His people from their sins (Matthew 1. 21). The way by which this could be done was by the sacrifice of Himself. As it is written, "He appeared to put away sin by the Sacrifice of Himself" (Hebrews 9. 26). "God commendeth His own love toward us, in that while we were yet sinners, Christ died for us" (Romans 5. 8). There is a city bright,

There is a city oright, Closed are its gates to sin, Naught that defileth Can ever enter in.

Would you like to be there?

Take God's way and all will be well. Jesus has died, sin has been atoned for, you can be righteously saved, cleansed and made white through the precious blood of the Lamb of God. G.M.J.

### An Autobiography.

(AN INTERESTING STUDY).

Please take your Bible and read each reference.

HE following was written by an old lady in a Somerset man's album:—

"I was naturally born in Psalm 51. verse 5, and walked for some years in Ephesians 2. 2. My conversation was like Ephesians 2. 3.

"A truthful description of me is in Isaiah 1.6, and Romans 3. 10-19. My wages, I found in Romans 6.23, was not enough to live upon.

"Not liking my master, I knocked at Matthew 7. 7, 8; and found "The Way" in John 14. 6. I made a discovery at John 3. 3, and heard of a "place" being prepared at John 14. 2, by One who lived at Hebrews 4. 14. I found where the building was at Hebrews 11. 10, and that it had but one Door, which was in John 10. 9, and one knocker, which I found in Luke 11. 9.

"My citizenship now will be found in Philippians 3. 20 (R.v.), and the cause of my rejoicing in Colossians 1. 13, 14. My present address is Ephesians 2. 6.

"Please attend to what the servant says in Luke 14. 17. Call any day at Proverbs 8. 33, 34, for instruction; and when 1 Thessalonians 4. 16, 17 comes to pass, I shall be caught up, and afterwards be at Revelation 19. 1, 7, 8, and found joining in the song of Revelation 5. 9.

"How all this comes to pass you will find in John 3. 16, and 1 Timothy 1. 15.

"I trust you may believe the record in 1 John 5. 11-13, and rely upon John 9. 25, for present joy, and future peace known in 1 Corinthians 15. 3, 4, and may you ever walk in Ephesians 5. 2."

SENT BY ROSE DYER.

### Grace for Me.

For by grace have ye been saved through faith (Ephesians 2. 8). Some hope at last in Heaven to stand,

Through works achieved by their own hand, Would set the grace of God at nought, But grace and works will ne'er agree,

And grace, the grace of God for me.

There's none can reach that holy place By works, 'tis only reached by grace. And grace and works will ne'er agree, And grace, the grace of God for me.

Salvation by what man has wrought, And grace and works will ne'er agree, And grace, the grace of God for me.

To strive by works is but to fail, To trust in Christ is to prevail. For grace and works will ne'er agree, And grace, the grace of God for me.

O sinner, hear the gracious call, There is no need for works at all. Since Jesus died on Calvary There's grace, the grace of God for thee.

J. MAWHINNEY.

"Good Looking.

HE sun was setting in the west like a great ball of fire, and the moon was beginning to peep from behind the trees; it was a beautiful evening, so we decided to stay down by the river and build a bonfire.

While some played baseball, the others were gathering twigs and wood for the fire, which we lit just as the moon began to shine across the water; we then sat around singing choruses and eating peaches.

Someone put a nice log on, making the fire quite bright, so by the light I picked out a good looking peach with no worm holes in it. I was really enjoying this delicious peach, but was soon disappointed to find a worm right in the centre. I felt I had been deceived by its outward appearance—How did it get there?

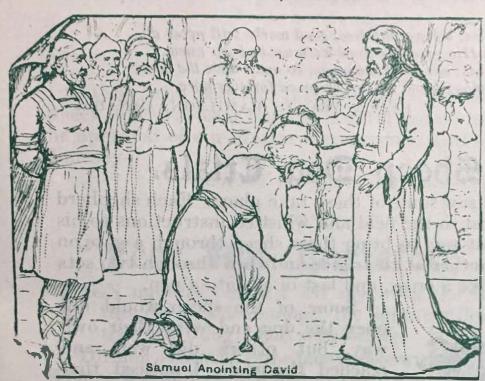
In the spring, this little worm found its way into the peach blossom in the form of an egg, and when the petals fell off the bud closed, keeping the egg inside. This soon developed into a worm which grew just as fast as the peach because it was feeding upon the inside. So you see we cannot tell a good peach from the outward appearance, no matter how "Good Looking" it is.

This little incident reminded me of sin. Sometimes you may wonder how a person can be a sinner when but a child, but God

tells us that we are born in sin (Psalm 51. 5).

Because Adam sinned, ALL are sinners. For, "Through one man sin entered into the world and death through sin; and so death passed unto all men, for that all sinned "(Romans 5. 12). You see sin is in our hearts when we are born, and as we grow sin also grows, and it soon shews itself in our life, for even a child is known by its doings.

I picked the peach because it was good looking on the outisde, and perhaps you think if you look good on the outside no one can tell what is in our heart, but God can.



You remember when God sent Samuel to Jesse to anoint one of his sons as king. Eliab the eldest son passed before him. Samuel thought, surely this is the Lord's anointed. God then told Samuel not to look on the countenance or the height of his stature, for He had rejected him, "for the LORD seeth not as man seeth: for

man looketh on the outward appearance, but the LORD looketh

on the heart " (1 Samuel 16.7).

In Jeremiah 17. 9 God gives us a picture of our hearts. He says "The heart is deceitful above all things, and is desperately wicked." There is none that doeth good, not not one, so that in this condition we cannot enter Heaven.

You must be born anew, and have your sins forgiven, for God cannot look upon sin. If you take your place as a sinner and confess your need to Him, He will shew you mercy for Christ's sake, for the blood of Jesus, His Son, cleanseth us from all sin

(1 John 1. 7-9).

Jesus died on Calvary that you and I might be saved, that our sins might be blotted out for ever. Saved from what? Saved from the penalty of your sins—an eternity of woe. But if you die in your sins where the Lord Jesus is you cannot go. If you believe in your heart that Jesus died for YOU on Calvary you will be SAVED. "If thou shalt confess with thy mouth Jesus as Lord, and shalt believe in thine heart that God raised Him from the dead, THOU SHALT BE SAVED" (Romans 10. 9).

Be warned in time, for time is fleeting, and we do not know how many more days we shall spend here on earth. If you should die to-day, are you prepared? Would it be well with your soul? If you cannot truly say that you know Jesus as your Saviour, will you read John 3.16? "For God so loved the world, that He gave His only begotten Son, that WHOSOEVER believeth on Him should not perish, but have eternal life. WHOSOEVER—Just means you, so if you as a lost sinner believe in the Saviour, you will be for ever saved.

Oh, come to Him, believe and live, good works will never do, God tells us in His precious word we must be born anew. Our hearts as ink, are black we know, so open wide the door, By Jesus' precious blood we can be saved for evermore.

HELEN YOUNG, HAMILTON, CANADA.

### The Sheep Dog Trials.

or long ago I saw some of these take place. Each shepherd stood at a post in the field and whistled instructions to his dog. The test was to bring three sheep through a gate on the left, through another at the right, and then through two sets of hurdles formed like a cross, and last of all into a pen.



Shepherd's Dog.

Some of the sheep would not obey the dog and went their own way, but others did well and reached the goal. I noticed that when a dog was successful the shepherd would stoop down and pat it. It reminded me of the words in Matthew 25. 23, "Well done, good and faithful servant." It is for those who are servants of Christ

to seek to get those who as sheep are going astray to be obedient to the call of the Lord Jesus, the Good Shepherd, who laid down His life for the sheep. He wishes them to come to Him as their Saviour and then to obey His commands, but just as the dogs had difficulty in getting the sheep at the trials to go in the way they wanted them, so we find when we try to influence people to accept Him as their own Saviour, they, lured by the pleasures of sin, persist in going their own way, a way that may seem right in their own eyes, but which, as we read in Proverbs 14. 12; 16. 25, ends in death. They will not come to Him, that they may have life. See John 5. 40.

We could learn a lesson from the persistence of the shepherds' dogs, which still kept at the wandering sheep no matter how often they turned aside from the right path. Oh, that we might be more earnest in seeking to tell of Him who on the Cross suffered for sins once, the righteous for the unrighteous, that He might bring us to God! (1 Peter 3. 18). Has the reader heard His voice and obeyed His call? He alone can save and satisfy. All who obey His call can say—

"I heard the voice of Jesus say,
Come unto Me and rest.
Lay down, thou weary one, lay down
Thy head upon My breast.
I came to Jesus as I was,
Weary and worn and sad,
I found in Him a resting place,
And He has made me glad."

May we, who have had this experience, be more eager than ever to seek others, so that like the faithful dog we may (as it did) earn the approval of our Master and be gladdened at the end to hear Him say—

"Well done, good and faithful servant"! M.A.

### "Fear Mot Therefore...."

TEN minutes before I left my work the storm broke. The thunder was deafening; the lightning flashed more fiercely than anything I had seen before. But I had to get home.

Turning a corner I came face to face with a woman. Poor soul! What a fearful look she had as she tried to get her baby's praminside a doorway. The baby was crying.

I looked at her, expecting some remark, but only a stony stare greeted me. With a terrified look at the sky she crossed herself with the sign of the cross. The sight of that terrified, though religious woman, sent a tremor running through me. I was not afraid of the storm. How could I be? My trust is in the living God; and in His Son, my Saviour (for I had been saved some time previously), and not in the sign of a cross.

As I proceeded homeward I thought of the many who live daily in such fear and uncertainty, who through fear of death are all their lifetime subject to bondage (Hebrews 2. 15). There is something beyond death for those who are not saved, for it is written, "after this cometh judgement" (Hebrews 9. 27).

I poured out my soul in thanksgiving to God for "so great salvation" which I had experienced. His peace filled my heart. My Lord and Saviour, Jesus Christ, had shed His precious blood when He died on the cross in my stead, and this filled my heart with joy.

Do not wait until you are older, receive the Saviour now and know your sins are forgiven, and have that peace which passeth all understanding.

To those who believe, the Lord said, "Fear not therefore; ye are of more value than many sparrows (Matthew 10. 31).

JEAN I. LOGAN.

### The Pound Mote.

WO small boys were very excited. They had a pound note given to them, and were told not to save it, as was their usual practice, but to spend it on whatever they wished. (Not very wise, was it?). Can you imagine the excitement as they discussed together what they should buy? They had never before had so much money to spend, and they kept wanting to take another look at this precious note that Mummy had put into her handbag for safety. A whole pound note! That meant ten shillings each. What a lot of money it seemed! Very soon they decided what they would

buy, and came running to tell Mummy, "We are going to buy a new bicycle each with our money." Mummy had to explain they would need many, many more pounds before they could buy two bicycles. They did

not realize how costly bicycles are.

This little incident brought to my mind the verse in Psalm 49. 8. "For the redemption of their soul is costly." Have you ever thought what it cost the Lord Jesus to purchase you? We are told in 1 Peter 1.18, 19, that believers are not redeemed with corruptible things such as silver and gold—but with the precious blood of Christ.



" Have you read the story of the cross, Where Jesus bled and died: Where the debt reas paid by His precious blood That flowed from His wounded side?"

You may read the "story of the cross" in the 19th chapter of the Gospel of John.

"The crown of thorns, the nails, the spear, The sorrows deep and sore."

They spat on Him and plucked the hair from His cheeks (Isaiah 50.6). In the 53rd chapter we read, "He was despised and rejected of men, a Man of sorrows", "Stricken, smitten of God and afflicted." "But He was wounded for our transgressions, He was bruised for our iniquities." Then turn to Psalm 22. (Read this all through if you can). Here we read that all His bones were out of joint, how they laughed Him to scorn, how He cried, "My God, My God, why has Thou forsaken Me?" Even God had to turn His face away. He was "as One by God abhorred," when He became the Sin Bearer. "Him who knew no sin He (God) made to be sin on our behalf; that we might become the righteousness of God in Him" (2 Corinthians 5.21).

How He must have loved us to bear so much for us! If you who do not belong to the Lord Jesus, can you still remain hard, cold and indifferent before such love? Should it not melt your heart and bring tears to your eyes?

Come to the Lord Jesus Christ now, and He will receive you. Then you can look forward to spending eternity with Him in Heaven.

> " Then, Lord, shall we fully know, Not till then, how much we owe."

IVY V. SHORE.

#### EXERCISE (For older Scholars).

Who said when he was sorely tried, "God will provide Himself the lamb?" And who, amidst a raging storm,
"I believe God"? and was most calm.
Who was it that God took from earth Through faith, and he was never found? But who was he, that for his sin The LORD God cursed the very ground?

Teachers should seek to find the answers themselves, and encourage their scholars to bring their answers to them. The answers will be given next month.

Lord, I would own Thy tender care,
And all Thy love to me;
The food I eat, the clothes I wear,
Are all bestow'd by Thee.

My health, and friends, and parents dear, To me by God are given; I have not any blessing here But what is sent from Heav'n.



By kind permission of Fox Photos Ltd.

"BE YE KIND." A KIND DEED

#### The Master is here.

NE morning, many years ago, a young man entered an old cathedral. This cathedral was famous for its organ, and the old man who had previously been the organist had achieved considerable fame in playing the instrument. He now was the Custodian of the Keys and to him the young man went to gain more information about the organ. The old man was enthusiastic. "It's the finest in the Fatherland," he exclaimed cagerly. "Yes, I have heard so," replied the stranger, "but I would like to try it. Will you loan me the keys?" "Oh, sir, I am very sorry, but it is a very fine organ and we are very careful who touches it. I could not give you the keys," said the custodian. The young man pleaded, he had come a long way and he loved music, might he not play it a little? At last the old man yielded. handed over the keys and stood back to listen. Oh the exquisite music which poured from the organ!—he was enraptured. He had never been able to draw forth such wonderful music. Who could this stranger be? The music ceased, and the young man locked the instrument and returned the keys to the custodian. "Who are you?" quavered the old man, "What is your name?" "Felix Mendelssohn" replied the young man quietly. The eyes of the old man filled with tears and he said with deep emotion, "To think that the MASTER was here, and I refused him the keys" (he was master of music in his day).

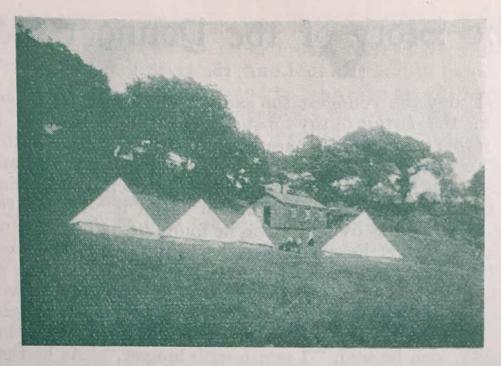
"THE MASTER IS HERE AND CALLETH FOR YOU."

I am writing particularly to young people who perhaps have just left school days behind and have entered their chosen trade or profession. Life is stretching out before you, visions of success in life fill your horizon, but pause a moment—What will be your response to the Master's call? He is calling to you very earnestly, "Come unto Me." If you ignore the Lord Jesus Christ, and His claims upon you, then one day you will feel something like the old organist when he realised that he had refused the keys of the organ to the greatest musician of his day. In your case, your regret will be so much deeper, and the effect of a refusal so much greater, because you have refused the Prince of Life—shutting Him out of your heart and life; your refusal of Him as your Saviour will lead you to eternal woe.

Agentleman was speaking to some schoolboys at a "good-night camp meeting" some years ago. He said to them, "Our hymn to-night is,

"I heard the voice of Jesus say,
"Come unto Me, and rest:
Lay down, thou weary one, lay down
Thy head upon My breast."

I came to Jesus as I was—
Weary, and worn, and sad;
I found in Him a resting-place,
And He has made me glad."



"Now boys, do not sing words without meaning what you are singing. Let us be truthful. Don't let anyone sing, 'I came to Jesus' who has not come to Him. Let us be straight in this Camp." Three days later, one of the boys about 17½ years of age came to the preacher. He said, "When you gave out that hymn I said to myself, 'I cannot sing it, and I will not;' but then I thought to myself, 'I see no reason why I should not come.' And I did come, and my life has been changed from that hour." The Master had called to him and he responded immediately. He calls to You. What is your response? You must choose.

Two years later, when this young man was an undergraduate at an English University, the preacher visited him. Anxiously he scanned the study walls for some text, but he saw none. He wondered what had happened during those two years. Then he said to his student friend, "How is it with you and the Master?" With joy he looked the preacher straight in the face and replied, "All right, sir." "But I see no text here," queried his friend. "I am the text" was his reply, "If people cannot read my character there is not much use having a text in my room." He was so aiming to live for the Lord that others could see clearly that he was a true Christian.

If you are not yet saved, Will you respond now to the Saviour's loving call to come to Him and take the gift of eternal life which He offers to you? After you are saved you will need His guidance every day if you are to live a truly happy and abundant life to His praise and glory.

S. TRAVERS.

Ibadan (Nigeria).—Very Good—Daniel A. Okeyode, Adekunle, Adeagho.

Sydney (Australia).—Excellent—F. Ebb, R. Fitzpatrick, J. Irvine, R. Irvine, G. Kennedy,

\*J. Kirkpatrick (well done Jeanette!), M. M. Pearson, B. Quigley (a fine set of papers).

# The Story of the Younger Son.

(READ LUKE 15. 11-32.)

NE day the youngest son said to his father, "Father, give me the portion of thy substance that falleth to me." So his father gave him his share. A few days later the son took his things and left his home. He travelled a long way into another country. There he found many things to spend his money on, and plenty of people to help him to spend it. He wasted his substance in riotous living. Soon he found he had neither money nor friends, in fact he spent all and had nothing. Then a worse thing happened. There was no food for anyone, as there was a great famine, and he began to be in want. One day he went to a man who lived in the town and he gave him work to feed the swine. The young man often felt like eating their food as he was so hungry, yea, he said, "I perish with hunger." As he thought

of his father and his father's home and the servants who had plenty of food and to spare, he said, "I will arise and go to my father, and will say unto him, Father, I have sinned, . . . make me as one of thy hired servants. And he arose and came to his father." His father had not ceased loving him, neither had he given up looking for him. Day after day he had watched and hoped to see him come up the path to the house. One day as he looked out he saw someone approaching In the the house.



He sent him into his fields to feed swine.

distance he saw it was his son. And while he was yet a great way off his father had seen him, was moved with compassion, and ran, and fell on his neck and kissed him. Now he sobbingly tells his father that he has sinned and is no more worthy to be called his son. But his happy father called his servants and said, "Bring forth quickly the best robe and put it on him; and

put a ring on his hand, and shoes on his feet; and bring the fatted calf, and kill it, and let us eat, and make merry; for this my son was dead, and is alive again; he was lost and is found." His elder brother was in the field, and he heard the music and dancing and wondered what had happened. So he called one of the servants to him to enquire what these things might be. And he said, "Thy brother is come; and thy father hath killed the fatted calf, because he hath received him safe and sound."

Instead of rejoicing the elder brother was very, very angry, and would not go into the house, so his father came out and entreated him to go in. But the son said to his father, Lo, "these many years do I serve thee, and I never transgressed a commandment of thine, and yet thou never gavest me a kid, that I might make merry with my friends: But when this thy son came home who devoured thy living . . . thou killedst for him the fatted calf.

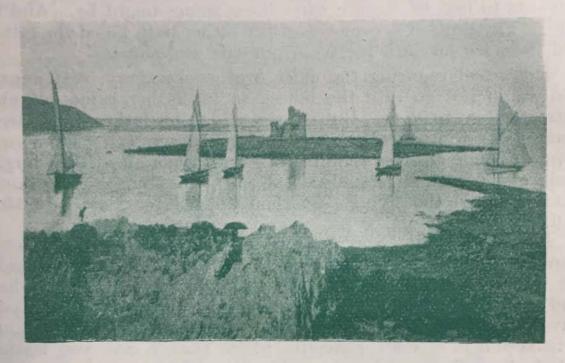
His father said, "Son, thou art ever with me, and all that is mine is thine. But it was meet to make merry and be glad: for this thy brother was dead, and is alive again; and was lost and is found." Are you like the younger son? If unsaved you have turned your back upon God, you are, perhaps, seeking satisfaction in worldly pleasures which cannot give you lasting satisfaction, they will leave you hungry and weary. Is this your state and condition? Is your cry "I perish."? If so, we would lovingly tell you that you need not perish, God is waiting to receive you; He is waiting to welcome you and give you the kiss of forgiveness, the robe of His righteousness will be yours, and the ring that denotes a son's place. Truly a feast of good things awaits you, and there will be joy in the presence of the angels of God if you come to repentance and turn to God.

M. Alderson.

### The Poisoned Sea Gull.

It was an isolated stretch of pebbles and shingle. How the lads enjoyed themselves, picking up this tin and that stick, etc., out of the flotsam and jetsam, and seeking to picture the stories that could be told about them! Many traces of the recent war could be seen, in the shape of burnt out incendiary bombs, etc. A warning was repeatedly given to leave things alone that might contain explosives, for "Boys will be boys." You can imagine how closely that coast was examined for items of interest, and many a little trophy was salvaged and with "Uncle's" permission taken to Camp.

Just as we were leaving, however, we saw one sad scene that has fixed itself on my mind. We found a dead fish, of unfamiliar species lying on the beach. It was black and repulsive looking, and we had no desire to linger near the putrefying body. At the side of it lay a seagull, a fine young bird, that had not assumed



adult plumage. Examination of the bird revealed that it had died just shortly before, for it was still warm. There on the beach we sought to reconstruct the story from the evidence before us. The young gull, in its inexperience, had come along, and curiously, perhaps nervously, had swooped on the decaying body. Then perhaps it had become more bold and had pecked away at the carease, rejoicing that the meal could be taken quietly, away from the intrusion of the older gulls. Ah! how soon the pains of poisoning began we could not tell, but ere the bird could leave the scene it falls in death. The hearts of the lads were all touched by the scene and many times since have I thought of it and the lessons it has for us.

The Word of God teaches those who are following the Lord Jesus to "Touch no unclean thing." Sometimes, like the young gull, young believers wander off away from older Christians, and find that which appears to them a tender morsel. It may be some pastime or pleasure that the world offers. In company with other Christians they might be warned of the danger, but alone or isolated, they take the chance, and very soon that which they thought would afford pleasure (perhaps, may we suggest—the cinema, the football match, the cigarette) proves their undoing and their spiritual life is ruined. To those in a backsliding condition such things may seem harmless, but those who have

experience in the Lord's things can testify how many promising young Christian lives have been blighted by these things and

by companionship with the unsaved!

The Epistle of John exhorts us to "Love Not the world, neither the things of the world." May we learn a lesson from the dead fish and link it with the "Things of the world," so that we may be delivered by God's grace from being poisoned by the evil things of the world. If you are ever tempted thus, dear young believer, think of the Fish and the Gull and "Touch Not, handle not, taste not." "A Camper."

#### CANADIAN BIBLE SEARCHING RESULTS.



Bringing in results.

Brantford (Ontario, Canada).—Excellent—E. Balog, J. Bell, R. Bell, Carol Buttenham, C. Reid, E. Doholis, J. Knight, \*J. Pennell, M. Searles, J. Seath, N. Seath, one no name. Very Good—F. Douglas, J. Hodgson, R. McGaw, P. Mitchell (so glad you are trusting the Saviour, Patsy), R. Wiggins. Good—J. Drinkwater, Jean Drinkwater.

Hamilton (Ontario, Canada).—Excellent—D. Bodington, N. Dodman, G. Doholis, A. Dryburgh, C. Meikle, T. Park, J. Petrie, F. Schiller, B. Smith. Very Good—Harry Meikle, M. McGaw, I. Petrie, R. Sanderson,

P. Spearing, J. Wood. Good—S. Miles, M. Vipond, E. Ramage, S. Burden. Toronto (Ontario, Canada).—Excellent—G. Madill, R. Woolley. Very Good—H. Barager, M. Lompart, E. Neely, L. Steer, R. Whitehead.

The above searchings are the result of a special effort made by the boys and girls of the three Schools at their Summer Camp at Rest Acres, near Brantford.



So glad to hear that seven boys and six girls professed faith in the Lord Jesus Christ while at camp, and that you all had a happy time together.

Your sincere friend, GORDON TAYLOR

### Electric Light.

N winter time when the nights are long, and days are dull, we often have to have a light in our homes. There are many different kinds of lights which people use to illume their homes. Some have electric light, others gas light, others



In the house where I live we have electric light.

have the oil lamp, and some may be so poor they cannot afford more than a candle. In the house where I live we have electric light. It is so easy to press the switch on the wall, and on comes the light. Men have been very clever to develop such a wonderful thing. Now, we who seek your eternal welfare are anxious that the right kind of light should

illume your heart and radiate by your words and acts through your body (for your body is really only the house in which you live). In other words, we would like you to be quite sure that it is the light of the glorious gospel of Christ which has entered into your heart, and that you are saved. You are in darkness and you need this glorious light to shine in. On the rocks around out coasts, lights are placed to warn ships of their danger. If those lights were wrongly placed, the ships, by following them, would founder on those rocks, and the lives of many would be lost.

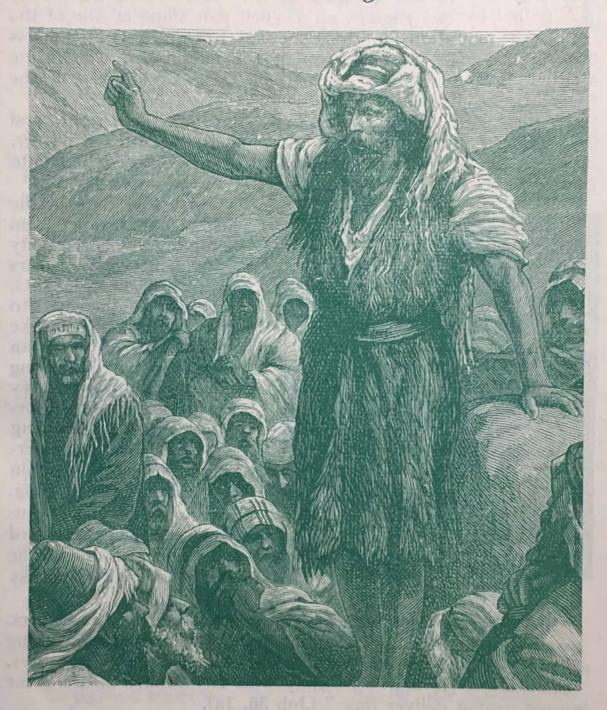
As we have said, men have been very clever to give us electric light, but alas, alas! others who profess to have light, have invented what some call "new light" or methods whereby we might be saved. They say, "Live a good life and you will get to heaven." "Do the best you can, and God will see to it at the end that you are all right." Those, dear readers, are "false lights." Do not follow them, for if you do, you will be eternally lost. Turn to your Bible and read the Gospel by John, chapter 1., verses 1 to 18, and there you will learn about the True Light, the only Light-giver. Open your heart to Him, and let the light shine in, for by no other way can you be saved. As the God-given sun exceeds the brilliance of electric light, so also does the God-given light of the gospel outshine the false theories of man. Jesus said:—

"I am the Light of the world: he that followeth Me shall not walk in the darkness, but shall have the Light of life.

(John 8. 12).

J. LEE.

# John the Baptist preaching in the wilderness of Judæa.



"Saying, Repent ye, . . . Flee from the wrath to come."

"Bring forth therefore fruit worthy of repentance" (Matthew 3. 2, 7, 8).

# One Step then Eternity.

Twas late in the morning as the train was being slowly pulled by two engines up a 5,000 foot slope of one of the great mountains in the Canadian Rockies. The sun was chasing the mist from the top of the mountains, which rose another 5,000 feet above us, making the snow on top of the rugged peaks glisten like jewels.

While sitting silently gazing at this marvellous sight, and marvelling at the handiwork of God and the beauties of nature, my attention was drawn to one peak which towered high into

the sky, and a huge glacier ran part of the way down.



A Scene in the Rockies.

I was told that in the glacier, some distance from the top lay the frozen body of a man who many years ago tried to scale its heights. His friends did their best to persuade him not to make the attempt of such an undertaking, and knowing the impending dangers they warned him of death overtaking him. Unheeding their warnings and persuasions, he set out to gain fame by mountain climbing.

Step by step he cautiously ascended the drifted snow, higher and higher he went, not knowing what lay

before him.

Before we proceed with our story we appeal to our readers, Are you careless and indifferent of what lies before you concerning eternity? if so, we would warn you to pause; consider thy ways. "Beware lest He take thee away with His stroke, then a great ransom cannot deliver thee" (Job 36. 18).

On and on he climbed, then taking another step, thinking it was quite safe, he was hurled forward and, alas! fell into the glacier.

How hopeless and helpless was his condition as he became embedded in the ice and no one near to help him as he lay there to die! What thoughts must have filled his mind for the few minutes he had left on this side of eternity! Thoughts of warnings passing unheeded, but it was now too late; he was perishing in the ice. This is a feeble picture of your condition if you have not accepted Jesus as your Saviour. You are hopeless, helpless, perishing. If you reject or neglect the pleadings of the Holy Spirit, you also will die without God, and without hope. You will spend eternity in the Lake of Fire which burneth with fire and brimstone, which is the second death (Revelation 19. 20, 20. 11, 15). What a dreadful thought! If you die without Christ thy soul will be for ever lost.

Had the mountain climber heeded the warnings he never would have ascended that mountain to take the risk he did. Some sinners to-day heed not the voice and warnings of God, for He warns sinners to flee from the wrath to come. How shall we escape if we neglect so great a salvation? (Hebrews 2. 3).

Will you not listen to these warnings and accept the Lord Jesus as your own Saviour, then you will know you are safe and

secure in the Rock of ages?

Think of the One who left Heaven above and came to die for guilty sinners such as we. "Him who knew no sin He made to be sin on our behalf; that we might become the righteousness of God in Him" (2 Corinthians 5. 21).

Hear that tender voice calling to-day, "Come unto Me, all ye that labour and are heavy laden, and I will give you rest"

(Matthew 11. 28).

Do not be like the mountain climber, who let the warnings go unheeded. Listen to the warnings of God and believe on His Son and live. Then you will dwell in the sunshine of His love throughout eternity.

H. Young, Hamilton, Canada.

#### "THE CROWD PASSED BY."

We went one day with one accord, Some other men and I. To speak a message for the Lord, Where the crowd passed by.

We stood just where the highways meet, And all could us espy, Within the town's most busy street,

As the crowd passed by.

We sang a hymn about "the Blood,"
This was the reason why,
We'd come to preach the word of God,

As the crowd passed by.

We had a message sweet to give, Yea, words from God on high, To tell how men tho' dead could live, But the crowd passed by. We told how One did lowly bow,
And oftentimes did cry
"Come unto Me," but as t'was then
Now the crowd passed by.

We told how, tho' He did no harm,
They led Him out to die,
And then beside His dying form
How the crowd passed by.

We spoke of death and coming pain,
And warned of judgment nigh,
We urged to flee, 'twas all in vain,
For the crowd passed by.

O sinner, pause, meet Him you must, And from His anger fly, Will you be saved, or will you just Like the crowd, pass by?

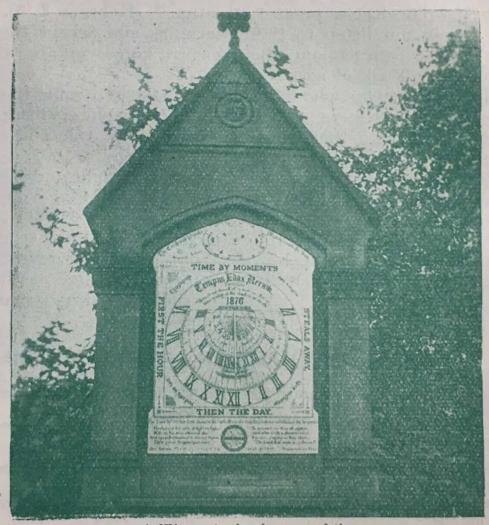
J. MAWHINNEY.

"Take Time by the Forelock."

Some have sought to bring this important matter to the notice of others in various ways. For instance, in the Holy Scriptures we read, "Time is short." And again, "Redeeming the time." Also sun-dials of various kinds and shapes are seen in towns, villages, and gardens, with their different inscriptions, all declaring to us the truth, that

"Time by moments steals away, First the hour, then the day."

Indeed, if you will look closely at the picture inserted with this article you will find these words thereon. God Himself has given



A Witness to the shortness of time.

us a warning too in His Word as to the shortness of time, and the uncertainty of life in the words:

" Boast not thyself of to-morrow,

For thou knowest not what a day may bring forth."

Indeed the Scripture says of all mankind, and this as you know includes the young:

"In the morning they are like grass which groweth up . . .

In the evening it is cut down and withered."

Perhaps you have stood and watched some man skilfully using a scythe, and have seen how that which was flourishing was cut down in a moment, reminding us again of the words:

"All flesh is AS GRASS,
And all the glory thereof as the flower of grass.
The grass WITHERETH and the flower FALLETH"

(1 Peter 1. 24).

How brief then is our life! As another writer has pointed out, seeking to shew forth the same truth:

"Life at best is VERY BRIEF, Like THE FALLING OF A LEAF."

We watch a pretty brown leaf falling from a tree during the Autumn. It takes but a few moments to reach the ground, but it forcibly reminds us that the summer is over, and that winter is not far off.

So time passes! How quickly time flies! We are now in the last month of the year. The rich farmer who said he had "much goods laid up for many years," and that he would "eat, drink" (and) "be merry," was told by God—

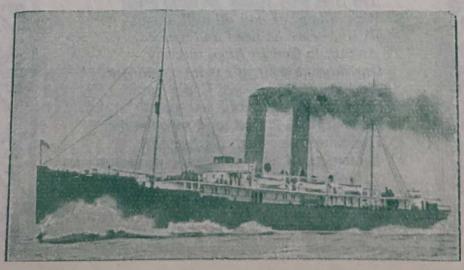
"THIS NIGHT IS THY SOUL REQUIRED OF THEE."
How unexpectedly and suddenly it all happened! But what of yourself? You too know not when your time on earth will be ended, so prepare now.

"Remember also thy Creator in the days of thy youth."
May each one of our readers make sure of possessing Eternal Life
by putting faith in Christ as their personal Saviour, and then
they will be sure that all is well with their soul.

GEO. E. STOCKWELL.

## Homeward Bound.

"HE great liner was ploughing majestically across the ocean; "Homeward bound." It was the last night on board, and a concert had been arranged for the children at which they were invited to sing.



Great was the applause as all the little singers sang their various pieces. At last one shy wee fellow got up on the platform, and, amidst a hushed silence, he sang through that beautiful hymn which all children love—" Jesus Loves Me."

And so he sang these words:

Jesus loves me, this I know, For the Bible tells me so; Little ones to Him belong, They are weak, but He is strong.

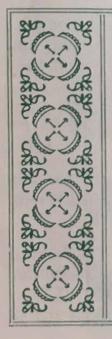
Jesus loves me, He who died, Heaven's gate to open wide; He will wash away my sin, Let a little child come in. Jesus loves me, He will stay Close beside me all the way; If I trust Him, should I die, He will take me home on high.

Chorus.
Yes, Jesus loves me,
Yes, Jesus loves me,
Yes, Jesus loves me,
The Bible tells me so.

There was no applause when he finished, and more than one handkerchief was used to wipe away the falling tears. No doubt the singing of that sweet, simple hymn reminded many of what, in childhood days, they had learned at their mother's knee, or had been taught in the Lord's Day school. Do the words of this hymn affect your heart? for they are blessedly true.

Do you realize like that little boy that "Jesus Loves You"?
Do you know Him as your own personal Saviour? Does that precious name, Jesus, mean anything to you? God has said, "And in none other is their salvation, for neither is there any other name under heaven, that is given among men, wherein we must be saved." Receive Him now as your own Saviour, and know the joy of having your sins forgiven. Then you will be "homeward bound"; not to any earthly port—but to Heaven itself, there to sing of Him—"The Son of God who LOVED me and gave Himself up for me."

ALEC. M'LUCKIE.



#### THE SECOND MAN.

(A brief recitation.)

The first man placed on earth below Was Adam, as you all well know. In innocence he lived and walked, And oft to God in Eden talked. One day the serpent's voice was heard, And then he disobeyed God's word. So Adam sinned, and you and I Have sinned as well, and so must dic, Unless we have our sins forgiven By trusting Christ who came from heaven. "The Second Man," in love for thee, Suffered for sin on Calvary.

G. GRATTIDGE.

## My Conversion.



N the Lord's Day school on May 23. 1943, my teacher, as so often before, urged upon the boys in the class the urgent need of being saved, to be ready should we be called into eternity. This afternoon he was telling us about the Israelites who were bitten by fiery serpents because they had sinned, also of their sorrow for their sin, and how God told Moses to make a serpent of brass and put it on a pole, and all who would look (believingly) at the uplifted serpent would live. And it came to pass all who did look

lived. See Numbers 21.5-9. The teacher then read John 3.14, 15. 
"And, as Moses lifted up the serpent in the wilderness, even so must the Son of Man (Jesus) be lifted up."

That whosoever believeth in Him should not perish, but have eternal life."

As I knew I was not saved, that afternoon I looked to Jesus who died on the Cross for me, and accepted Him as my own Saviour. So if the Lord Jesus comes, or, should I die. I shall go to Him in heaven, because through His blood my sins have been cleansed away.

Will you look and live, and be safe for eternity?

"Shut outside are gloom and terror,
Fearful death and dreadful dark;
All who are in Christ securely
Dwell within God's sheltering Ark."

JAMES WATT (age 13).

## BIBLE EXERCISE (For older Scholars).

What prophet told of Christ who'd lead His flock as Shepherd, and would feed, And in His arms keep? Who was that prophet of the LORD, Who saw that Shepherd by the sword Smitten for all His sheep?

Teachers should seek to find the answers themselves, and encourage their scholars to bring their answers to them. The answers will be given next month.

#### BETHLEHEM, WHERE THE LORD WAS BORN.



#### THE LORD OF HEAVEN.

- 1. THE LORD OF HEAV'N descended from above, Born as a Babe—to shew His Father's love; He healed the sick, and made the blind to see; He raised the dead, and set the sinner free.
- 2. THE LORD OF HEAV'N has died on Calv'ry's Tree; 'THE LORD OF HEAV'N has died for you and me: Do not delay, come, trust in Jesu's name, Who died for you in agony and shame.
- 3. THE LORD OF HEAV'N was taken from that scene; Laid in a tomb where never man had been. His loved ones mourned, for then they did not see, He'd won o'er sin a glorious victory.
- 4. THE LORD OF HEAV'N in triumph left the grave:
  He sits in heav'n, almighty now to save.
  On that third day He rose again to be
  The Living Lord, from death for ever free.
- 5. THE LORD OF HEAV'N will come again some day;
  THE LORD OF HEAV'N will take His own away,
  To dwell with Him, to see His glorious face,
  And there to learn the wonders of His grace.

K.H. & C.T.

on or other persons of the contract of the con

## EAGLES' WINGS SEPT. 1946 BIBLE SEARCHING RESULTS.

(The following numbers include the unclassified late arrivals. See bottom of page 103.)



Bringing in results.

Our numbers are reduced this time, but the standard of the searchings is very high. The total number received was 876, and we give a hearty welcome to 97 new searchers. \* Denotes first attempt. If your name does not appear in the list, and you have posted a searching, please write at once to Mr.J.Dorricott, Fairhaven, 18, Arlington Road, Derby, but all Bible Searching answers are to be sent to MR. G. TAYLOR, 99, THE DRIVE, BECKENHAM, KENT.

(Please note new address).

ABERDEEN.—Excellent.—H. Duncan, G. McLeod, R. McLeod, J. Roberts, M. Roberts, F. Robertson, T. Robertson, A. R. Smith, A. Thomson, E. Thomson, S. H. Thomson. ABERKENFIG.—Excellent.—G. D. Williams. ABERTRIDWR.—Excellent.—E. Johnson. ADLINGTON.—Very Good.—D. Forster (so sorry you

were not able to send the last searching!). ARMAGH.—Excellent—K. Adams, E. Clarke, J. Clarke, John Clarke, McB. Clarke, C. Gillespie, N. Gillespie, H. Gillespie, M. Latimer, J. McConnell, A. Plock, D. Thompson, S. Thompson, D. Todd, M. Todd. Very Good—L. Cahill, D. Lockhart, R. Morrison. Good—K. Pallett. ASHGILL.—Excellent—J. Anderson, M. Anderson, H. McQueen, Maisie McQueen, Margaret McQueen. ATHERTON.—Excellent—R. Amos, L. Birchall, M. Birchall, E. Grant, \*M. Higson, L. Kenyon, D. Jones (so pleased you can write "I do believe," David!), G. Moores, \*M. Nowell, \*M. Povah, M. Smith, D. Treacher, M. Treacher, A. Weilding, J. Weilding (sorry omitted last time Jack!). Very Good—\*J. Bailey, \*A. Cook, \*N. Farnworth, \*M. Nowell, B. Potts, G. Treacher. Good—\*M. Cunliffe, B. Eckersley (glad to see so many first attempts!). AYR.—Excellent—J. K. Porter (sorry your surname was omitted last time).

BARRY.—Excellent—Mavis Jones, Mildred Jones. BATHGATE.—Excellent—A. Cameron, M. Cameron, J. Fisher, R. Fisher, A. Franssen, H. Franssen, P. Haddon, M. Ramsay, M. Smith, S. Smith. Very Good—\*K. Pake. BARROW-IN-FURNESS.—Excellent—K. Cotton, D. Creasey, N. Creasey, B. Joughin, M. Joughin, B. Murray, G. Murray, D. Probert, J. Probert, Y. Probert, A. Wilcock. Very Good—F. Miller. BEXHILL-ON-SEA.—Excellent—M. Andrews. BELFAST.—Excellent—J. Bittles, D. Clarke, E. Clarke, J. Clarke, W. Clarke, C. Coyne, M. Coyne, E. Doran, M. Doran, \*N. Dougan, \*Terence Dougan, J. Harper, L. Lowry, A. Mawhinney, D. Mawhinney, \*J. McNarry, K. Moffatt, G. Moffatt, A. Smyth. Very Good—\*M. Bingham, G. Harpers, \*K. Mercer. BIRKENHEAD.—Excellent—T. Doodson. BIRMINGHAM.—Excellent—\*W. Birly (?), \*C. T. Bowman, A. Brown, D. Brown, A. Elson, M. Elson, M. Harris, A. Penn, J. W. Plant, G. Powell, P. Sutton, A. Taylor. Very Good—M. Arnold, \*E. Wright. BOLTON.—Excellent—E. Doubtfire, M. Johnson, E. McDonald (fine paper Eileen!), N. Moores, E. Parkinson, A. Sammon, J. Sankey, C. Worthington. BREDBURY (Cheshire).—Excellent—\*J. Forrester (so glad to receive this searching and to hear of your work!).

CARDIFF (Kings Road).—Excellent—J. Butlin, I. Collier, S. Dewey, \*G. Dodge, \*J. Dodge (two fine first attempts!), C. Hopkins, F. Hurley, R. Jones, S. Laho, M. Palmer, R. Palmer, M. Stockwell, M. Toms, P. Toms, R. Toms, B. Webb, G. Webb. (Ely).—Excellent—D. Edwards, J. Frost, G. James, A. Jones, R. Norris, R. Price, E. Pugsley. Very Good—\*D. Blackmore, P. Jones, J. Musgrave, V. Musgrave, J. Norris, R. Saunders, J. Simpson, M. Taylor. Good—J. Frost. CARLISLE.—Excellent—\*E. Johnston, M. Johnstone, \*K. Roper. CLYDEBANK.—Excellent—A. Boyd, C. Boyd, E. Dick, B. Dow, M. Dow, G. Dyer, J. Gallacher, B. Hamilton, I. Hamilton, M. Hamilton, F. McAlister, A. McClure, N. NcKinlay, \*J. McTavish, P. Moore, L. Tivendale. COWDENBEATH.—Excellent—M. Aitken, I. Allan, R. Allen, A. Bowman, J. Bruce, M. Cowan, \*J. Cruikshank, E. Haddon, J. Haddon, M. Haddon, \*I. Hutcheson, R. Hunter, M. S. B. Park, Moira Park, J. Paterson, G. Ross, I. Ross, A. Thomson, J. Winsborough, M. Winsborough, B. Woodman. CROWBOROUGH.—Excellent—J. Barton, P. Barton, B. French, J. French, M. Harman, R. Taylor. CULLEYBACKEY.—Excellent—D. Crabbe, E. Hutchinson, W. Hutchinson, H. McIlroy, J. McIlroy, A. McKeown, J. McKeown (well done John!), A. McKendry, Annie McKendry, L. Miller, M. Miller, H. Miller, J. Stewart.

DAGENHAM.—Excellent—Iris Neale. DERBY (Iron Tent).—Excellent—\*U. Broomhead, D. Caddick, G. W. Fairholm, J. Granger, S. Granger, B. Grattidge, S. Hewitt, H. Joyce, K. A. Johnson, M. Munday, S. Preston, \*I. Stubbs, O. Taylor, C. Ward, J. Whitbread, S. Wymer. Very Good—B. Lowe, \*M. Torr. Good—\*V. Thorne. (Sinfin).—Excellent—M. Bagley, F. Gaskins, J. Hopkins, P. Neal, P. Whiteley. Very Good—M. Gadsby, P. Gaskins, B. Ince, I. Morrell, I. Wooley. DOUGLAS (I.O.M.).—Excellent—D. Collister, J. Kneale, J. R. Swain.

EDINBURGH.—Excellent—D. A. Bunting, W. D. Bunting, A. M. Hope, K. Hope, W. Taylor.

FAIRLIE (Ayrshire).—Excellent—S. A. Dorricott (very neat paper !).

GLASGOW (Balornock).—Excellent—\*E. Strachan, R. Strachan. GLASGOW (Cathcart Road).— Excellent-F. Archibald, J. Ballantyne, \*B. Barrie, L. Beattie, C. Bowie, Chrissie Bowie, B. Cassidy, R. Cassidy, B. Clements, M. Clements, M. S. Douglas, I. Ferguson, M. Gould, D. Graham, H. Graham, M. Macdonald, M. Martin, W. McBride, S. McNeil, J. Meechan, M. Parker, D. A. Renfrew, D. Roberts, P. Roberts, M. Stewart, J. M. Wilson, E. Windle. Very Good—H. Ballantyne, D. Ferguson, J. Fleming, B. Head, D. Gould, \*J. Kaka, James Meechan, S. Rankine, G. Robertson, W. Robertson, W. Stewart. Good-S. Meiklejohn. (Govan).—Excellent-J. Boyd, R. Brand, \*B. Brown, Betty Brown (age 13), M. Brown, R. Brown, H. Calderhead, J. Calderhead, M. Cummings, \*B. Gillan, H. Gillan, I. Gracey \*C. Herson, J. Kenneway, C. Laverty, N. McCart, J. McIlvenna, C. McIntyre, I. McIntyre, H. McKim, M. Stackpool, W. Stackpool, C. Sunnucks, D. Wallace, E. Wallace, \*M. Watson, B. Young, S. Young. Very Good—H. Lawson, M. McLean, M. Nelson, \*J. Paterson, W. Wallace. Good—D. Laverty, A. Robertson. (Kirkintilloch).—Excellent—J. Alston, W. Alston, \*J. Bell, N. Caldwell, \*A. Colston, J. Conrie, \*E. Craig, H. Darrock, E. Doherty, M. Doherty, C. Duncan, \*R. Grant, G. Gray, M. Hogg, \*J. McCallum, \*K. Mitchell, H. Ross, J. Scott, M. Scott, \*M. Thomson, E. Weir. Very Good-M. Blackwood, \*C. Darrock, \*S. Reynolds (so glad to see so many first attempts!). (Parkhead).—Excellent—R. Hamilton, S. Heggie, \*M. O'Connor, T. Parker, M. Rennie, L. Shaw, R. Shaw, S. Steen, I. Wright. (Partick).-Excellent—R. Berry, M. Carson, A. Fotheringham, A. Gibson, M. MacDonald, N. MacDonald, B. McGaffin, M. McGatlin, J. Rodgers, C. Smith, R. Tait, J. Todd. GREENOCK.—Excellent—E. Boyle, W. Johnston, F. McAfferty, B. McDiarmid, R. McDonald, N. McGuigan, M. McKaig, G. Miller, M. Mitchell, C. Reid, E. J. Renfrew, E. M. Renfrew, N. T. Renfrew, E. Rodgers, M. Watt.

HAMILTON.—Excellent—N. Cameron, C. Cunningham, S. Cunningham, B. Lindsay. HARTHILL.—Excellent—B. Arnatt, J. Beattie, A. Cooper, J. Cooper, J. Marshall, S. Marshall, A. F. McKendrick, H. McMullan, J. McMullan, D. McPhail, \*R. Paterson, \*J. Livingstone. Very Good—\*A. Paterson. Haydock.—Excellent—B. J. Dixon, L. Hazeldine, W. Hughes, E. M. Molyneux, F. Molyneux, M. Seddon. HAYES.—Excellent—J. Eade, S. Geere, B. A. Lewin, J. E. Lewin, \*K. Webb. HEREFORD.—Excellent—\*R. Dovaston, \*J. D. M. Edwards, \*B. Jones, \*B. Nicholas, \*J. Nicholas, M. Rees, P. Rees, \*S. Woolley (happy to see so many first attempts!).

ILFORD.—Excellent—J. Cubberley, R. E. Davey, P. Gilbert, S. Gilbert, J. Jordan, E. Livermore, S. Onslow, J. Smith, E. Tracey, W. Tracey, J. Walpole, R. Wright. Very Good—K. Gardiner, P. Smith. INNERLEITHEN.—Excellent—A. Dickson, E. Eckford, L. Robson, G. Wilson, I. Burton. Very Good—C. Eckford, J. Eckford, N. Heaney.

\*V. Gregg (good paper Victor!), W. Lale. (Burritt Hall).—Excellent—H. Bartlett, P. Harding, R. Harding. KNOCKNACLOY.—Excellent—G. Thompson.

LEICESTER (Broomfield Hall).—Excellent—J. Almey, B. Attewell, M. Balcombe, B. Breckon, A. Briggs, G. Butlin, C. Camp, M. Chawner, P. Chawner, A. Clarke, E. Clarke, K. Dunnett, M. Elliott, Mary Elliott, D. J. Fear, B. Gould, C. Howard, \*A. Howlett, M. Jewell, D. Jones, M. Lamb, I. Marshall, T. Marshall, D. Parker, R. Parker, L. Reeve, P. Roadley, D. Roberts, B. Upton, J. Upton, J. Vernon. Very Good—H. Attewell, K. Bugby, E. Clark, J. Tiplady. Good—M. Spurling. (Northfield Hall).—Excellent—\*J. Aldred, S. M. Brown, R. E. Kendrick, D. Kennell, N. King, M. Parker, A. Pegg, J. Pole, E. Rudden, \*C. Teagle, K. Teagle, \*D. Teagle, T. Teagle, \*O. Walker, S. Welsh, M. Whiteman. Very Good—B. Collins, E. Knight, B. Pole, E. R. D. Young. (Uppingham Road).—Excellent—M. Dennison, P. M. Thompson. LEIGH.—Excellent—J. Fine, A. Price, J. Price. LIVERPOOL.—Excellent—Robert Butler, Ruth Butler, J. Hobbs, J. Leahey, N. Leahey, S. Leahey, E. Mayor, E. McKay, E. I. Moore, B. Plumb, E. Plumb, R. Plumb, K. Reid, M. Richards, A. Roughley, R. Roughley, A. Sands, D. Tyrer, J. Wannop. Very Good—W. Mayor. LONDON.—Excellent—J. Bartholomew, C. Capon, J. Chedgy, A. Evans, D. G. Evans, R. Gewitzke, M. O'Bryan, \*E. Penfold, A. Reeve, D. Tasker.

MACDUFF.—Excellent—A. Downie, J. F. Downie, B. Gould, B. McKay, G. D. McKay, E. Robertson, J. Sellar, D. Watt, Dorothy Watt, J. Watt, Joseph Watt, M. Watt, R. Watt, D. Patience, D. Wilson, E. Wilson. Maidstone (Assembly Hall).—Excellent—E. Dann, T. Misson, D. Palmer, A. Stewart, N. Stewart, E. Yates. Very Good.—C. Hadlow, E. Newing. (North Down Close).—Excellent—G. Evans, J. Mutimer, A. Rillie. Very Good.—H. Darley, D. M. Richardson. MANCHESTER.—Excellent—V. Bentley, D. Dootson, F. Dootson, S. Fallows, E. Hardman, S. Hellewell, M. Jones, P. Jones, J. Singleton, L. Turner. METHIL.—Excellent—C. Montgomery, I. Montgomery, J. Montgomery, John Montgomery.

J. Paton, \*John B. Paton, M. J. Paton, B. Philp, D. Philp, I. Reilly, R. C. Surgeon, E. Thomson. MOUNTAIN ASH.—Excellent—J. F. Beddow, M. Evans, M. Mortimer, M. Organ. MUSSELBURGH.—Excellent—J. Forrest, M. Forrest, J. Glen, J. Henderson, H. Lindsay, I. Lindsay, J. Lindsay, H. McKenzie, A. McWatt, J. Peddie, M. Ramage, G. Steedman, M. Steedman, N. Swanston, I. Swanston. Very Good—A. Lindsay.

NEWHALL.—Excellent—R. Bowler, F. Dent, D. Hazel, J. Redfern, L. Smithard, J. Ward, C. Young, F. Young.

OLLABERRY (Shetland).—Excellent—R. Peterson, J. Peterson. OXFORD.—Excellent—\*P. Topham (welcome Pauline!). PENYGRAIG.—Excellent—Ronald Amos. PONTYPRIDD.—Excellent—Sheila Sutor. PORT GLASGOW.—Excellent—I. Callander, \*J. Clabby, P. Clabby, W. Clark, M. Cook, E. Cunningham, B. Dixon, M. Hall, B. Hamilton, A. Hoey, B. Hoey, M. Hoey, R. Hoey, B. Martin, R. McFarlane, J. McKendrick, W. L. McLellan, M. Miller, H. Miscandlon, M. Mitchell, M. Purdie, A. Renfrew, C. Renfrew, I. Renfrew, R. Renfrew, I. Ross, J. Ross, M. Steel. Very Good—\*A. Blair, \*C. Blair, J. Craig, B. Dixon, M. Hall, W. Jackson, G. McFarlane.

PORTSLADE.—Excellent—J. Elliott, K. Elliott.

\*\*SHOTTS.—Excellent—A. Pearson, E. Taylor, J. Taylor. SOUTHPORT.—Excellent—E. R. Hodson, Brenda Scott, \*Brian Scott (well done Brian!). SOUTH SHIELDS.—Excellent—R. Atkinson, R. Tomlinson, J. Walker, \*M. Leedham, N. Leedham, M. Tyrrell. SPALDING.—Excellent—F. E. Spindler. SHIRLEYWIGH (Staffs.).—Excellent—Mary Hydes. STANMORE (Middlesex).—Excellent—John Griffin. ST. HELENS.—Excellent—J. Battersby, J. Bowes, J. Farrar, J. Hill, R. Hurst, G. Lightfoot, J. A. Lightfoot, J. Molyneux, D. Raspin, J. Raspin. STOKE-ON-TRENT.—Excellent—D. Adams, M. Adams, B. Amison, G. Bennison, H. Bennison, M. Bennison, G. Cooper, \*F. Grimley, S. Grimley, A. Guy, J. Guy, S. Guy, E. Hilton, G. Key, B. Knox, D. Tranter, M. Tranter (hope your colds are now better Mavis and D.). (Mount School).—Excellent—L. Ackley, J. Badger, H. S. Barnett, E. Cartwright, R. Connor, J. Darlington, K. Davies, E. Dean, R. Flanders, B. Holloway, I. Johnson, J. Merrick, B. Peace, D. Pickford, J. Plant, R. Reeves, S. Ridge, \*W. Smith, E. Warrilow, R. Watts (another grand set of papers—well done!).

WEMBLEY.—Excellent—B. Avon, \*V. Bowdery, \*P. Cox, \*D. Francis, E. Hilton, \*V. Hosier, D. S. Hobley, M. E. Hobley. WEST HYDE (Herts).—Excellent—\*D. Bryant (welcome Doreen!). WIGAN.—Excellent—N. Bentham, A. Bird, J. Bird, A. Caldwell, J. Caldwell, J. Howarth, R. Johnson, K. Leigh, J. Leyland, T. Lord, N. T. D. Martin, H. Ollerton, N. Ollerton, D. Oxley, N. Oxley, L. Parr. Very Good—M. Bird, K. Unsworth, No name? WILLINGTON QUAY.—Excellent—E. Birkley, M. Chambers, G. Fuller, I. Fuller, M. Fuller (so glad you are getting better!), S. Joyce, P. Nellist, M. Patterson, M. Sayers, \*R. Sayers. WISHAW.—Excellent—S. Armstrong, \*M. Baird, N. Morton.

YEOVIL.—Excellent—R. Eglen, \*S. Evans, M. Flint, J. Francis, M. Francis, J. Hancock, M. Lodge, I. Sartin, D. Shore, K. Stone, P. Tuck, J. White. Very Good—M. H. Brice. Well Tried—R. Foyle.

#### LATE (BRITISH ISLES) BIBLE SEARCHING RESULTS. SEPTEMBER, 1946.

The following Results were received too late to be included in the classified list of results. Will Superintendents please note that results should be received not later than the 10th of the month following publication.

BIRKENHEAD.—Excellent—E. Banks, B. R. Cookson, J. Coppack, J. Dickinson, J. Fletcher, P. Hill, D. Horne, A. Hyland, S. Moseley, G. Roberts, A. Robinson, R. D. Williams. Very Good-R. Hill, E. Platt, \*D. Trenchard. CARDIFF (Ely).—Very Good—\*B. Huntley. COOKSTOWN.—Excellent—A. S. Bell, C. W. Bell, F. E. Bell, W. D. Bell, W. H. Bell, E. Black, J. Charles, M. J. Charles, C. Laughlin, E. R. Laughlin, W. R. Laughlin, R. J. Smith, E. Warwick. Very Good-Muriel Charles. COWDENBEATH-Excellent-M. Bruce. DUNDEE.-Excellent-\*John Downie, \*Tom Downie. DERBY (Iron Tent).-Excellent-G. Minard, J. Webb, J. Wymer. Very Good-B. Webb. GLASGOW (Balornoch).-Excellent-\*M. Dunn, A. MacLeod, \*J. MacLeod, M. MacLeod, \*A. Smith, M. Stevenson. Very Good-B. MacLeod. Good-N. MacLeod. GLASGOW (Govan). - Excellent-D. McIlreavy, M. Purse. GLASGOW (Partick). Excellent-J. W. Archibald, I. Hyslop, E. Jennings, B. Muir. Good-B. Brown, P. Mirlees. GLASGOW (Springburn).—Excellent—A. Davidson, M. Davidson, \*I. McLachlan, C. Mooney, E. Mooney. Very Good— \*E. Dallas, J. Fairley, \*M. Maclean. Good-F. Low, J. Low. HALIFAX.-Excellent-A. Appleyard, B. Canning, G. Canning, J. A. Kirkman. LEICESTER (Northfield Hall).-Very Good-S. Pellegrini, J. Whyley. Well Tried-no name. LEICESTER (Uppingham Road).—Excellent-J. Pereira. LIVERPOOL. Excellent—S. Richards. STOKE-ON-TRENT.—Excellent—E. Wilson. Very Good—G. Edmondson. WEST HYDE (Herts.) .- Excellent-\*I. Ash, \*R. Ash, \*E. Gray, \*G. Wheeler (very glad to receive these from a new school!).

#### A SUMMARY OF THE SEPTEMBER, 1946, BIBLE SEARCHING RESULTS. (Alphabetical according to Town).

Late arrivals, as on page 103, not included in this classified list.

| The state of the s |        |                            | Turicy cu         | out page 100, not n     |        | aou i                      |                   | 010001200 11001        |        | -                          | -                 |
|--|--------|----------------------------|-------------------|-------------------------|--------|----------------------------|-------------------|------------------------|--------|----------------------------|-------------------|
| TOWN.  |        | Total No. of<br>Searchers. | New<br>Searchers. | TOWN.                   |        | Total No. of<br>Searchers. | New<br>Searchers. | TOWN                   |        | Total No. of<br>Searchers. | New<br>Searchera. |
| ABERDEEN   |        | 11                         |                   | *FAIRLIE                | 122    | 1                          | _                 | MANCHESTER             | - 15   | 10                         | 1                 |
| ABERKENFIG   | 222    | 1                          | A SHARE THE       | GLASGOW—                | ***    |                            |                   | METHIL                 |        | 12                         | î                 |
| ABERTRIDWR   |        | 1                          |                   | *(Balornoch)            |        | 2                          | 1                 | MOUNTAIN ASH           |        | 4                          | T. T.             |
| *ADLINGTON   | 1000   | î                          | WILL              | (Cathcart Road)         |        | 39                         | 2                 | MUSSELBURGH            | ***    | 16                         | _                 |
| ARMAGH   |        | 19                         | -                 | (Govan)                 | All    | 35                         | 5                 | NEWHALL                |        | 8                          |                   |
| ACHOITT  | -3.53  | 5                          |                   | (Kirkintilloch)         | 3000   | 24                         | 9                 | OLLABERRY              |        | 2                          | _                 |
| AMUEDMON   |        | ຄຄ                         |                   | (The whole and )        | ***    | 9                          | 1                 | #OSEDODE:              | 272.0  | 1                          | 1                 |
| AVD  | ***    | 1                          |                   | (Parknead)<br>(Partick) | 18830  | 12                         |                   | PENYGRAIG              | ***    | 1                          |                   |
| RADDE  | 93.4   | 0                          |                   | Chronical               | 1.00   | 15                         |                   | *PONTYPRIDD            | 7.7.5  | 1                          | _                 |
| RATHCATE   | 7.50   | 11                         | 1                 | TT ( DETT MONT          | 13.50  | 4                          |                   | PORT GLASGOW           |        | 35                         | 3                 |
| BARROW   |        | 10                         |                   | IT . DOLLAR             | ***    | 13                         | 3                 | Donmarann              | 222    | 2                          | .,                |
| *BEXHILL   | ***    | 1                          | X 200             | HARTHILL.<br>HAYDOCK    | 1000   | 6                          | 0                 | SHOTTS                 | 1.7.75 | 3                          |                   |
| BELFAST  | 0.53   | 22                         |                   | HAYES                   | 0.916  | 5                          | 1                 | SOUTHPORT              | FFE    | 3                          | 1                 |
| RIDUENHEAD   |        | 1                          | 9                 | HEREFORD                | 0222   | 8                          | 6                 | SOUTH SHIELDS          | 166    | 6                          | 1                 |
| RIDMINOUAN   | 15.5.5 | 1 4                        | 3                 | ILFORD                  | 2555   | 14                         | 0                 | *SPALDING              | 5.0.0  | 1                          |                   |
| Dormon   | ***    | 0                          |                   | INNERLEITHEN            |        | 8                          |                   | *SHIRLEYWICH           | ***    | 1                          |                   |
|  |        |                            | 2 1               | KINGSTON-               | 1110   | .0                         |                   | #[]=                   | 1.1/1  | 1                          |                   |
| *BREDBURY CARDIFF—   | 1.4.4  | 1                          | 1                 |                         |        | 77                         | 1                 | N- TT                  | ***    | 10                         |                   |
|  |        | 17                         | 0                 | (Bonner Hill)           | 1887   | 3                          | 1                 | ST. HELENS             | 5.9.5  | TO                         |                   |
| (Kings Road)   | 3.55   |                            | 2                 | (Burritt Hall)          | 15.55  | 1                          |                   |                        |        | 17                         | 1                 |
| (Ely)  | 3.44   |                            |                   | KNOCKNACLOY             |        | 1                          |                   | (Assembly)             | 444    | 20                         | 1                 |
| CARLISLE   | 3.53   | 10                         |                   | LEICESTER—              |        | 90                         | 1                 | (Mount School) WEMBLEY | 2.2.5  |                            | 1                 |
| CLYDEBANK  |        | 01                         |                   | (Broomfield Hall)       | 1049.5 | 36                         | 1                 |                        | FFE.   | 8                          | 1                 |
| COWDENBEATH  | ***    |                            | 2                 | (Northfield)            | ****   | 20                         | 4                 | *WEST HYDE             | ***    | 10                         | 1                 |
| CROWBOROUGH  | 727    | 6                          |                   | (Uppingham Road         | 1)     | 2                          |                   | WIGAN                  | 100    | 19                         | -                 |
| CULLEYBACKEY   | 56.45  | 13                         |                   | LEIGH                   | 20.00  | 3                          | And the last      | WILLINGTON QUAY        |        | 10                         | 1                 |
| *DAGENHAM  | ***    | 1                          | -                 | LIVERPOOL               | ***    | 20                         | 1                 | WISHAW                 | 7/5/52 | 3                          | 1                 |
| DERBY—   |        | 10                         | 1                 | LONDON                  |        | 10                         | 1                 | YEOVIL                 | 8,8,63 | 14                         | 1                 |
| (Iron Tent)  |        | 19                         |                   | MACDUFF                 |        | 16                         |                   | Tomara                 | N W    | 200                        | 20                |
| (Sinfin)   | 227    |                            |                   | MAIDSTONE—              |        | 8                          |                   | TOTALS                 | 1000   | 799                        | 83                |
| DOUGLAS  | ***    |                            |                   | (Assembly)              | ***    |                            |                   | * Davietor from !-     | 4:     | duct                       |                   |
| EDINBURGH  | 2.25   | 5                          | 111               | (N.D.C.)                | 1.50   | 5                          |                   | * Denotes from in      | divi   | uuais                      | •                 |

Please note that all Bible Searching results are to be sent to Mr. G. Taylor's new address :-99, THE DRIVE, BECKENHAM, KENT.

#### NEXT BIBLE SEARCHING.

We want every one of our Searchers to do this Bible Searching. It is especially appropriate for season of the year. Read Matthew 2, 1-11.

| the season of the year. Iteau. | MT-ecolic M | - I  | 4       |          |                              |                              |
|--------------------------------|-------------|------|---------|----------|------------------------------|------------------------------|
| A of Him shall not be broke    | 100         | ***  |         | John.    | Between chapters 18. and 20. |                              |
| hated Jacob because of the     |             | ***  | ***     | Genesis. | Between chapters 27. and 28. |                              |
| He said arise                  |             |      | 104461  |          |                              | Between chapters 9. and 10.  |
| And wept sore                  | * ***       | 114  | ***     | 6.6.6    |                              | Between chapters 19. and 20. |
| And came up with Jacob         | 4440        |      | (4.404) |          | Genesis.                     | Between chapters 30. and 31. |
| Now was very old               | 111         | 550  | 16.66   |          |                              | Between chapters 1. and 2.   |
| and Pilate became friends      | . ***.      | 9.00 | 128.85  | 222      | Luke.                        | Between chapters 22. and 23. |
| The saw him no more            |             |      | ***     | 4.64     | Acts.                        | Between chapters 8. and 9.   |
| And, for he said,              | 1.00        | **** | 277     |          | Genesis.                     | Between chapters 31. and 32. |
|                                | - struction |      | ahava   | Rible    | Saarching                    |                              |

Instructions for above Bible Searching To find the word required fill in the missing words. Take the first letter of each word. This will give you the name of the town where Jesus was born. It is found in Matthew 2. 5.

For those under Ten Years of age. Write only the missing words, giving Book, chapter and verse where found. Write also the name of the Town giving Book, chapter and verse.

For those of Ten Years and over. Write the whole of the above sentences, filling in the missing word,

thus completing the sentence. Also stating Book, chapter and verse. Write out the name of the Town, also Book, chapter and verse where found.

If this is your First Attempt please say so. Send in your answer not later than January 10th, the earlier the better (Overseas later), give your name, age, town and Sunday School; if not attending a Sunday School give your home address. Put your answer in an unsealed envelope, put B.S. on the left hand side and affix 1d. stamp (not 2½d.). Post your answers to Mr. G. Taylor, 99, The Drive, Beckenham, Kent. (Note new address).

The Revised Version has been used for this Searching, but it will be quite in order to put what appears in Authorized Version. In some cases the words will be a little different.—Editor.



#### HOW TO HAVE A HAPPY NEW YEAR.

HEN I was a little boy, I used to hear my brothers and sisters say on January 1st, that they would turn over a new leaf and try to be good. What good resolutions they used to make!



I also tried to follow them, but it did not occur to them, or to me, that however much we might succeed, these could not take away the black spots of sin on the past pages of our former life. We also found that we had not gone far in the day before black spots of wrong doing appeared on our nice new page, and very soon, when these good resolutions passed away we went on as usual, and as day by day passed by our dirty pages increased.

So much for the New Years' resolves.

In time I learned from God's Word that "THERE IS NONE THAT DOETH GOOD, NO NOT SO MUCH AS ONE." Also, if the black spots on the past pages of my life were to be wiped away, this could only be done by the blood of Jesus (God's Son), which cleanseth us from all sin. In other words, it is through the Lord Jesus coming from heaven, and becoming the Sin-Offering on Calvary's tree, that God can rightly, through Him, forgive us all our sins.

He not only cleanses away past sins by His precious blood, but gives to the one who believes on Him a new book, a new life—

eternal life.

If you truly believe on Him, and receive Him as your Saviour, you will find this is the only way to have A HAPPY NEW YEAR. You will then be able to sing from your heart:—

Happy day! Happy day!
When Jesus washed my sins away!
He taught me how to watch and pray,
And live rejoicing every day;
Happy day! Happy day!
When Jesus washed my sins away!

Will you not commence the New Year this way, and find peace and joy in believing?

J.D.



And as Moses lifted up the serpent in the wilderness, even so must the Son of Man be lifted up; That whosoever believeth may in Him have eternal life John 3. 14, 15.

#### FIERY SERPENTS.

They glide along, and how quickly their fangs are ready to bite! Look! there are some snakes in the picture—fiery serpents, they are called. They have bitten some of the people lying there. God sent the serpents amongst the people because they had sinned. Many of them died of the snake bites. God says "The wages of sin is death." Then the rest of the people cried to God and told Him they had sinned, and God listened. God always hears those who cry to Him confessing that they are sinners. I wonder if you have ever told Him that you are a sinner.

So God told Moses to make a model of a serpent and set it up upon a pole so that everybody could see it. Then said He, "Every one that is bitten, when he seeth it, shall live." Any little boy who lies there dying, because he has been bitten, has only to believe God's word, and LOOK, and he will live. How easy it was! And how glad he would be to do it!

Is there a boy or girl who has sinned and knows that God's punishment for sin is death, who wants to know the way to be saved? It is just as easy as when Moses lifted up the serpent on the pole, for the Lord Jesus Christ was lifted up on the cross and was punished there for sins which were really yours and mine. God says, "Look on Him!—see in Him the One who died in your place, for your sin, and you go free."

See Him lifted on the tree,
Look and live! look and live!
Hear Him say, "Look unto Me!"
Look and live!

#### **BED-TIME**

FEW nights ago I was watching a little boy aged two and a half years playing very happily with his toys. He was not a little bit concerned with what was happening around him, and he was not at all interested in the conversation, but suddenly something happened that altered the smile on his little face to a very sad expression. He heard his mummy's voice saying, "Come along little man, it's time for bed now." "No bye-byes, mummie" was the prompt reply,—and then a very bright idea flashed into his little mind. "Me just put the toys away for mummie." If mummie had asked him to put the toys away during the day, he would not have felt very well pleased, but like most other boys and girls he is very thoughtful when bed time comes along, and to help mummie at seven o' clock is just grand.

Would it not be lovely to live in a land where night time was unheard of, then we should never have to go to bed? I have even seen little boys, yes and little girls, run away to play in another street when they think it is time for mummie to call them in for bed.

Well, do you know there is a land where there is no such thing as night time, and in that land there are many mansions, for the Lord Jesus Himself said, "In My Father's house are many mansions"; and He has gone to prepare a place for all boys and girls who are saved by His precious blood.

He died that we might be forgiven.
That we so void of good,
Might ever be with Him in heaven,
Saved by His precious blood.

M. M. BOOTHERSTONE.

#### IF I COME TO JESUS.

If I come to Jesus,

He will make me glad,
He will give me pleasure,

When my heart is sad.

He will bid me live;
He will love me dearly,
And my sins forgive.

If I come to Jesus,

He will take my hand,

He will kindly lead me

To a better land.

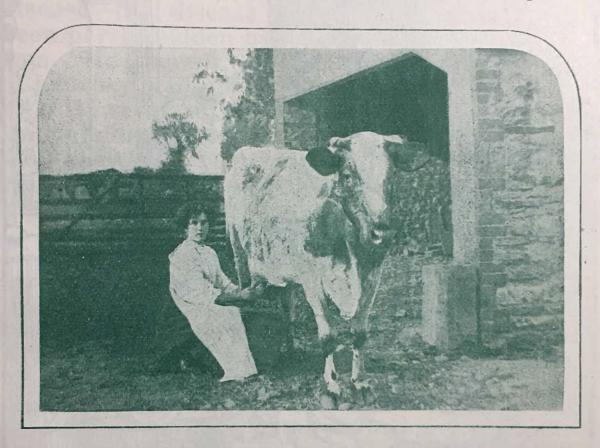
There with happy children,
Robed in snowy white,
I shall see the Saviour,
In that world so bright.

Chorus—If I come to Jesus, happy I shall be; He is gently calling little ones like me.

Try and learn these verses during the month of January, and sav one verse to your father or mother each Lord's day.

# FOR THE LITTLE ONES YES, JESUS LOVES ME.

Twas Lord's Day morning, but the woman in the dairy had overslept. Quite a lot of people had now gathered, and so they thought it better to form a queue—old men and women, fathers and mothers, boys and girls. One wee boy of about 4 years had accompanied his mother, and he now took his place at



The Dairymaid milking the Cow.

the end of the queue. It was cold and the people moved from one foot to the other to try and keep warm. Suddenly, someone began to sing, but the tune was not exactly correct and the words were a bit mixed up. It was a wee fellow at the end of the line. He was trying to sing "Yes, Jesus loves me,"

It sounded lovely early on the Lord's day morning, and this wee boy, although he might not understand very much, was singing of the love of Jesus. The older folk in the queue were

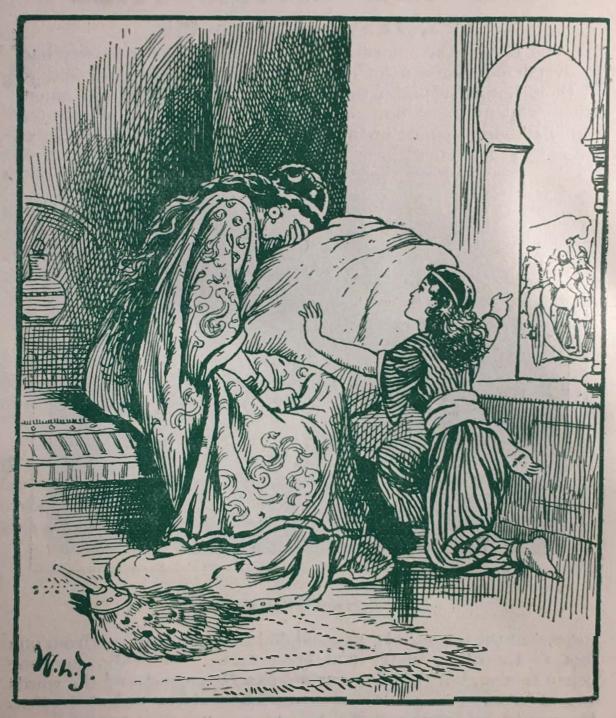
amused, and some smiled.

Boys and girls, I ask you,—Do you know and have you believed that Jesus loves you? Many times you may have heard and perhaps read the story of the life and death of the Lord Jesus Christ, and been told it was for sinners the Lord Jesus died.

But have you ever believed that it was FOR YOU HE DIED?

(See page viii.).

E. LOGAN.



And the Syrians . . . had brought away captive . . . a little maid; and she waited on Naaman's wife. And she said unto her mistress, Would God my lord were with the prophet that is in Samaria! for he would recover him of his leprosy (2 Kings 5. 2, 3.)

### THE LITTLE CAPTIVE MAID.

AAMAN was captain of the king of Syria's armies. No doubt he looked a fine figure in his splendid uniform, at the head of his soldiers. He was rich, too, and brave. But he was not really happy, because he had a dreadful disease—the disease of leprosy. It may have been partly hidden by his clothing; but there it was. He knew it, and God knew it—a leper!

Leprosy is like sin. There is sin in each one of us. However much you may try to hide it on the outside, there it is within—you know it, and God knows it. For God says, "All have sinned." And sin makes us unclean in God's sight and

unfit for heaven.

In Naaman's house was a little girl—a captive from Israel. She knew that God could cleanse lepers and she told Naaman's wife. When the great soldier heard, he set off with many presents to go to the land of Israel. At last he stood before the prophet's door and heard God's message, telling him how he could be cleansed. "Wash in Jordan seven times." At first he would not take God's way, but later on he yielded and went down into the Jordan seven times. Then, the Bible says, "He was clean." God's way was the only way in which he could have his leprosy cleansed. Back he went to the prophet's house with a present, but no present would he take, for God's cleansing was free.

There is only one way of having your sins cleansed away and that is God's way—by believing on the Lord Jesus Christ, who shed His precious blood when He suffered and died on the Cross. Will you, as a lost sinner, take God's way of

salvation now and be able to say

For my cleansing this I see,
Nothing but the blood of Jesus.
For my pardon this my plea
Nothing but the blood of Jesus.

YES, JESUS LOVES ME (Continued from page v.).

Jesus loves me this I know, For the Bible tells me so; Little ones to Him belong, They are weak, but He is strong.

Jesus loves me, He who died, Heaven's gate to open wide; He will wash away my sin, Let a little child come in. Jesus loves me He will stay Close beside me all the way; If I trust Him should I die, He will take me home on high.

> Yes, Jesus loves me, Yes, Jesus loves me, Yes, Jesus loves me, The Bible tells me so.

#### AS WHITE AS SNOW.

WHEN the countryside is covered with snow, the trees, the house-tops and the ground all lose their dirty appearance, and everywhere looks white and fresh and clean.

Now let us turn to the Bible and see what we can find about snow there.

Isaiah 1. 18 says, "Though your sins be as scarlet, they shall be as

sins be as scarlet, they shall be as white As snow." The Psalmist David prays to the Lord and says, "Wash me, and I shall be whiter than snow" (Psalm 51. 7).

We are all sinners, that is, sin dwells in each one of us, and what can be blacker than sin? and "The wages of sin is death; but the gift of God is eternal life through Jesus Christ our Lord." So if you are to be cleansed from your sins, and made whiter than snow, you must come to the Lord Jesus and accept the gift of God which is eternal life. You will then be able to thank Him for His beloved Son who died on the Cross of Calvary for your sins. We ask—

" Are your garments spotless, are they white as snow? Are you washed in the blood of the Lamb?"

Here is a short story. When I was a young girl, and as the snow lay thick on the ground one bleak November night, I was seated against a nice warm fire, reading Isaiah 53. 5, which says,—"He was wounded for our transgressions, He was bruised for our iniquities; the chastisement of our peace was upon Him; and with His stripes we are healed." I realised then that I was a sinner and that my sins were very black. It did not seem possible for me to become "whiter then snow," but upon putting my faith in the Lord Jesus I could say, by His stripes I am healed. I could then sing from a cleansed heart:—
"Happy night, happy night;

When Jesus washed my black heart white."

WINNIE GOLDIE.

## FOR THE LITTLE ONES.

#### "GOING TO SCHOOL."

NCE before I told you a story of a little boy who was very fond of engines. Now I would like to tell you about his little sister Joyce. Joyce was only 3 years old when Willie went to school. She thought he must be a very big boy to be at school, and wished she was big enough to go also.

Soon Willie got a reading book, and had lessons to do each night. Joyce loved the pictures in this school book. She listened carefully to the stories which Willie told her when doing his lessons. You can imagine how delighted she was when a friend gave her an old school book exactly like Willie's.

Time passed, and Joyce's little chum went off to school with a new school bag on her back.

Joyce looked at the little case that she was to take to school and wished that she could go now. Summer holidays came and Joyce knew that when they were over she would be a school girl.



Off to school:

At last the day came, and Joyce went off to school with her mother. There were a lot of other boys and girls waiting to be enrolled too. Some were crying, but others were like Joyce; they were delighted to look forward to the time when they would be sitting behind their little desks. Perhaps you remember your first day at school. When it came to Joyce's

turn, the teacher asked her name, her address, date of birth, her father's name, and what he worked at. All these particulars were written on a form, and then Joyce had her name written in the school register.

Now boys and girls, do you know that God has a register? God's register is called "The Book of Life," but how different it is to get your name written in God's Book of Life. God does not ask your age, or your father's name, or where he works. All God desires of you is to know your need of a Saviour and to believe on His Son, the Lord Jesus; and then your name will be written in the Book of Life. How simple that is! So simple that even little ones just beginning school may have their names written in God's Book of Life, and the Lord Jesus says "they will never perish." "For God so loved the world, that He gave His only begotten Son, that whosoever believeth on Him should not perish, but have everlasting life" (John 3. 16).

J.H.A.

Elisha, the prophet, giving the little boy (raised from the dead) back to his mother.



How glad she was to have her little son back again!

#### A LITTLE BOY WHO DIED.

(2 Kings 4.).

THE little boy of whom this Bible story tells, was looking forward to a happy day in the fields. It was harvest time, and off he ran one morning to help his father in the cornfield. But the day was very hot, and after being some time in the bright sunshine he felt a pain in his head. Then he ran to his father, saying, "My head, my head." His father saw that he was ill and sent him away to his mother at home. She took him on her knees, and there, very soon, he died. How very sad the mother was then! But in her trouble she knew that God's prophet could help her. So she saddled an ass and rode away to find Elisha. He returned with her to the house and when he saw the little boy lying dead on the bed he prayed to God. Then he lay upon the child. returned and walked to and fro, then lay down on him again, and the little boy opened his eyes. Then Elisha could call the boy's mother and give back the little boy to her again—alive!

In the picture you see his mother receiving him. How pleased she would be to have her little boy again! Do you think it was Elisha who brought the little boy back to life again? No, indeed, no man could do that. God is the only One who could bring a dead person back to life. And God is the only One who can give a dead sinner eternal life. For God says that each one of us have sinned and are dead in His sight. But if we own our sinner need before Him, He is willing to forgive our sins. This He does through the Lord Jesus Christ, who died as the Sacrifice for our sin on Calvary's cross. Now, if we believe in the Lord Jesus, all our sins are put away and we have eternal life. L. A. HICKLING.

#### SOMETHING FOR NOTHING.

South time ago at an Open Air Meeting in a large city in Scotland, there were some little boys and girls playing around. After a little while a gentleman went from the

EAGLES' WINGS.

A gentleman gave the boys and girls our monthly paper those children, of another (Eagles' Wings).

meeting with a small bundle of "Eagles" Wings" in his hand to give to the children. I watched him cross the road and start giving out the books to them. He had not been there long when the children started coming from all directions all eager to get a book; but as I told you before the gentleman only had a small number of "Eagles' Wings," and they were soon gone, and some boys and girls were disappointed. They were sent away empty handed, and the other boys and girls had got "something for nothing."

I was reminded, while I was standing watching those children, of another free gift which is being

offered by the Lord Jesus Christ, and how few are eager to accept the gift of Eternal Life! The Lord Jesus Christ offers that gift to ALL who will accept it by believing in Him. If you as a needy one come to Him and accept Him as your Saviour He will not turn you away empty. No, He will meet the need of ALL who will come to Him, and we would ask you to put your trust in Him now, and then you will be able to say that you are saved and safe, for He carries the lambs in His bosom. Remember the Scripture says:—"The wages of sin is death; but the free gift of God is eternal life through Jesus Christ our Lord (Romans 6.23).

Come to the Saviour make no delay,

Here in His Word He has shown us the way,

Here in our midst He's standing to-day,

Tenderly saying "Come."

# FOR THE LITTLE ONES

#### JESUS LOVES ME.

WOULD like to tell you about a little boy I know. This is how I first met him.

I, along with two other friends, was visiting a friend in a hospital near Glasgow. When we came up to the ward, we were met by a little boy. This wee laddie was not able to run about like the boys in our Sunday Schools, because he had a plaster cast right round his body. He told us he could sing and, after being asked to let us hear him, he sang in a soft little voice—

" Jesus loves me, this 1 know For the Bible tells me so."

How true this is! That wee laddie, who was far away from home and those he loved, could sing that Jesus loved him.

When we went in to see our friend, we found out that the wee boy's name was Joseph. He is just five years of age, and he often comes in to talk to this friend of ours, who was a Sunday School teacher before she went in to hospital, so she can tell him—and the other little boys and girls too—just how much the Lord Jesus does love them.

I think we can see the wonderful love of the Lord Jesus when we look at the scene on the Cross. It was there, while He hung on Calvary's tree, that He displayed His great love to us. He was there as the Bearer of sin in His own body on the tree (1 Peter 2. 24). We read in Isaiah 53. 5, "He was wounded for our transgressions, He was bruised for our iniquities, the chastisement of our peace was upon Him, and with His stripes we are healed."

I would like each boy and girl to ask themselves the question that the hymn-writer asks in the following verse—

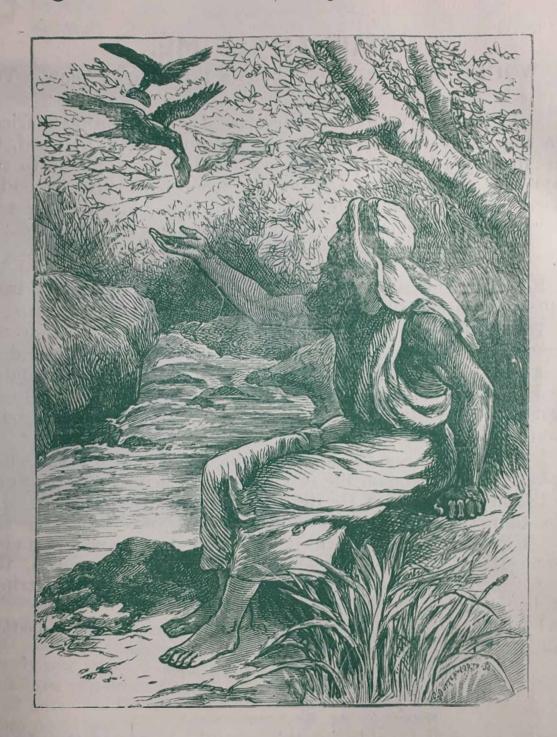
"Was it for me, He bowed His head Upon the Cross, and freely shed His precious blood—that crimson tide, Was it for me, the Saviour died?"

I trust you will be able to answer in the words of the chorus of the same hymn—

"It was for me, yes, all for me,
Oh love of God, so great, so free,
Oh wondrous love, I'll shout and sing,
He died for me, my Lord and King."

It is only by believing that the Lord Jesus died on the cross for you that you can have your sins forgiven. It is only then that you can really value how much the Lord Jesus loved you.

# Elijah fed by Ravens



And the word of the Lord came to him, saying, Get thee hence . . . and hide thyself by the brook Cherith . . . Thou shalt drink of the brook, and I have commanded the ravens to feed thee there. And the ravens brought him bread and flesh in the morning, and bread and flesh in the evening; and he drank of the brook.

### ELIJAH AND THE RAVENS.

(Read 1 Kings 17.).

70U have often put out some bread crumbs for the birds to eat, but have you ever seen the birds bringing bread for a man to eat? The Bible tells us of a man named Elijah who was fed by the birds. In the picture you see the big black birds—called ravens—bringing his food to him. This they did every day. You can guess who gave the food to the ravens and taught them to take it to Elijah. It was God, of course. For at that time God was punishing the people of the land for their sin by making them go short of food. But God loved Elijah and he told him of His plan to feed him and keep him alive. He said, "Hide thyself by the brook Cherith, . . . and I have commanded the ravens to feed thee there." Elijah heard what God said, and he obeyed and went. And God did as He promised, and sent the ravens to feed him.

God loves you too. He wants to save you, not just from going short of food, but from the punishment that your sins deserve, which is, being shut out of heaven for all eternity. He sent His only Son, the Lord Jesus Christ, who was the only One who never sinned, to bear your sin and mine when He died on the Cross.

There was no other good enough, To pay the price of sin.

Now God says, "Whosoever believeth on Him should not perish, but have eternal life." Will you be like Elijah: hear God's word and believe Him. Then God will give to you His promised gift—eternal life.

L. A. HICKLING.

#### YOUR OWN WAY.

Tour prize distribution one of the girls' books was called "Her own Way!" I have not read the book, but the title reminded me of a little paper I had written for "Eagles' Wings" on the same subject, but it was not posted. I have just come across it again in my old Bible, so I now send it in.

Going along the road one day, I saw a little girl and her mother having a spot of trouble. It was all because the little one wanted to wheel the pram all by herself, and Mummy would keep putting her hand to it. You see the girlie was only very tiny, and in the pram was a very precious new baby. At last Mummy said, "You are not going to have your own way," at which saying the little one began to cry very loudly, and make such a fuss, saying, "I want my way, I want my way." I don't think she really understood what "her way" meant, only that it was something she could not have. She wanted to do just as she liked, and is not this the way with most little tots, and big boys and girls too. They all want their own way. There is a verse in the Bible which says, "All we like sheep have gone astray, we have turned every one to his own way, and the LORD hath laid on Him the iniquity of us all" (Isaiah 53. 6). Going our "own way" is sin, and leads to trouble, not only for ourselves but for others too. It was because Adam went his own way, instead of doing God's will that brought sin into the world, and what a lot of trouble and sorrow this has caused! It was this that brought all that awful suffering to our Lord Jesus Christ, because on the cross He had to bear the sin of the world. He was the only One able and willing to do so, because He was the sinless One. He died that we might have our sins cleansed away by His precious blood.

"There was none other good enough,
To pay the price of sin,
He only could unlock the gate
Of Heaven, and let us in."

It is a good thing for children to be obedient to their parents as God has commanded them, also to obey His call to take the Lord Jesus as their Saviour.

H. SCOTT.



#### WHO MADE THE SEA.

The foaming waves, the rolling tide,
And all therein, that swim, or creep,
Or live—in pools or in the deep?
'Twas God who made the mighty sea,
And all the things that therein be. Psalm 95.5.



Who made the Sea ?



Who made the Sun?

Who made the Sun that shines so bright,
The source of heat and life and light?
Who sends the golden sunshine down,
The lovely summer days to crown?
'Twas made and placed by power divine,
'Tis God who makes His sun to shine.

Matt. 5. 45

Who formed the heavens and planned the sky, And placed at first the clouds on high, The silvery moon with its pale light, The twinkling stars that shine so bright? 'Twas God who all these works designed, Formed by His skill and might combined.





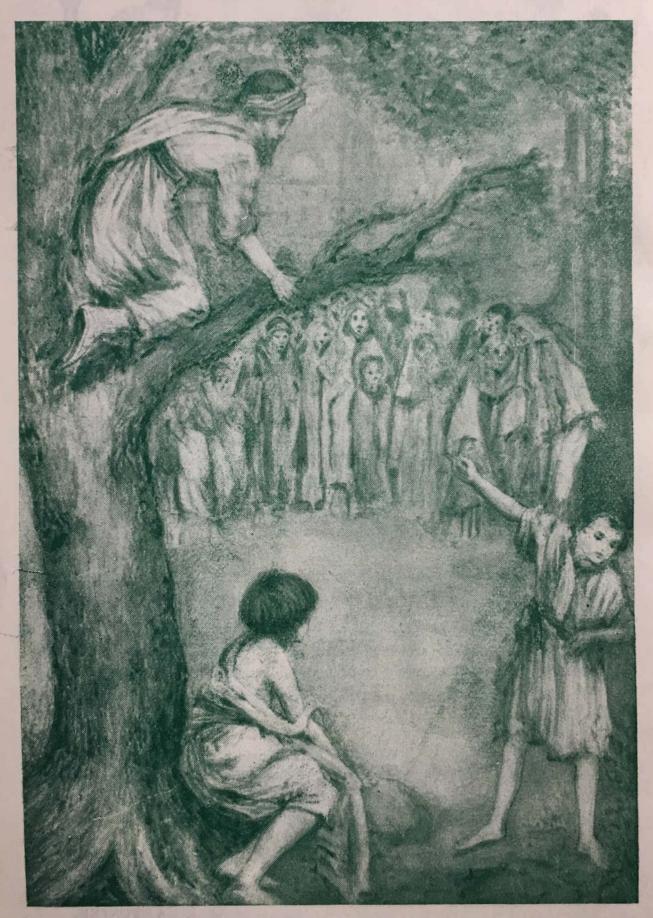
Who made the Stars!



Who loved the world?

Who loved the World? 'Twas God above, He gave His Son—proof of His love, That whosoever—anyone, Believes in Him—what He has done, Shall perish not but life receive, Do I upon God's Son believe? John 3. 16.

## THE CALL OF ZACCHÆUS.



"When Jesus came to the place, He looked up, and said unto him, Zacchæus, make haste, and come down."

#### ZACCHAEUS.

(Luke 19. 1-10).

ROWDS of people were in the street waiting , to see Jesus. Zacchaeus was there too, but he was only a little man, and as he looked around for a place where he could see Jesus, he found he was crowded out. There was nowhere he could peep through, so he ran on and quickly climbed up into the branches of a tree growing by the roadside. And there, right above the heads of the people, he waited to see Jesus. The people all around knew Zacchaeus quite well—they said he was a sinner. They were sinners themselves too, but some of them did not like to think that. And you are a sinner as well; for God says, "All have sinned." One little wrong action -or even a wrong thought, is enough to make you a sinner in the sight of God. Do you know that you are a sinner before God?

Well, Jesus came along the road and looked up into the tree at the sinner Zacchaeus. "Make haste," He said, "and come down."

So Zacchaeus made haste and came down and went along to his house and opened the door to let Jesus in. And Jesus went in, and that day Zacchaeus was made happier than he had ever been: the Saviour went into his house. Zacchaeus the sinner was just the one Jesus came to find on that day.

To-day Jesus is standing by your door. Though you are a sinner He says, "Sinner, will you let Me in?" If you will open your heart's door to Him, He will gladly come in and forgive all your sins—He can do that because He died on the cross to bear them away. Then you, like Zacchaeus, will be happier than you have ever been before.

## SOMETHING WE MUST DO OURSELVES.

SOME time ago I was telling my two little boys of a sad accident I had read of in the daily newspaper. A small child had run across the road and had been killed by a passing vehicle. Afterwards I told them how important it is to

look first right and then left before crossing the road.



"Look both ways before you cross."

This is something that I expect your mother is often telling you, as in these days we read of so many accidents, especially to children. Most of you will have been taught "kerb drill" either at home or school.

Father, who had been listening, then said to the little boys, "We are always telling you never to cross the road without first looking both ways, but this is something you have to do for yourself. When you are out alone I cannot look for you, neither can your mother, you must do it yourself if you want to be safe crossing the road."

"It's like salvation" father continued, "God has given His Son—our Lord Jesus Christ, who has given His life a ransom for all. He died, the Just for the unjust that He might bring us to God. We are all sinners (Romans 3. 23) and need a Saviour, and knowing our need, all we have to do is to accept the Lord Jesus Christ as our own Saviour. This is a simple thing to do is it not? Yet like the 'kerb drill,' it is something we must do ourselves. Our Mothers and Fathers cannot do this for us. We must believe on the Lord Jesus ourselves if we would be saved." (See Acts 16. 31).

The Hymn Writer says:—

"Oh, listen to the message,
God sendeth from above;
Believe the Gospel record,
Accept the Saviour's love."

# FOR THE LITTLE ONES.

#### FAVOURITES ALL.

TE are sure our young readers, far and wide, will be pleased

to see our photograph on this page.

What do you see! Oh yes. There are four little girls from Africa. How nice they look in their new hats. They are four little scholars from a Lord's Day school in Nigeria.

What are they holding in their hands? They are copies of

our monthly magazine—" Eagles' Wings."

And what is there between the little girls on the one side and

the two little girls on the other side?

Look carefully and you will see lots of ears, black and brown. and lots of little bright eyes showing! Whatever can they be? Ah, rabbits!



Real rabbits in Africa! Perhaps you might think Africa is too hot for rabbits with their thick fur. Well, they seem quite happy enough, and they are REAL FAVOURITES. Perhaps you have a pet rabbit at home? Is it like any of these in our picture? We feel sure you will all agree, that whether it is the four little girls, or the "Eagles' Wings" they are holding in their hands, or the rabbits, THEY ARE FAVOURITES ALL.

Speaking of favourites reminds me of that little girl who waited upon Naaman's wife. We do not know her name, but though she was a captive maid, she found favour with her master and her mistress.

(Continued on page xxiv.).



#### A LOST SHEEP.

NE day when people gathered to listen to Jesus, He told them a story about a lost sheep. You can read it in Luke 15. verses 3 to 7. A hundred sheep were all together, but one of them went away from the others and began to stray. Over the hills it went, eating the green grass. Then, as it turned to look for the others, they were not there and, try as it might, it could not find its way back. It was lost. But as the shepherd counted his sheep that day he soon found that one was not there, and do you think he would leave it away on the mountains? Oh no! He left the others and set out over the rocks and valleys until he heard the cry of his sheep in the distance. Then he found it where it was—tired and perhaps hurt, and he put it on his shoulders and carried it home. How glad the shepherd was! and we may be sure the sheep was glad too.

Boys and girls are like that sheep—they have gone astray from God and are lost. There is part of a verse in the Bible which says: "ALL WE LIKE SHEEP HAVE GONE ASTRAY" (Isaiah 53. 6). You should learn that verse. But Jesus, the Good Shepherd, left His home in heaven to seek lost boys and girls. He came to seek and to save YOU. And before He could save you He must needs die upon the cross at Calvary and there bear away your sin, so that you may now put your trust in Him and be saved and safe for eternity.

Oh dearly, dearly has He loved, Shall we not love Him too, And trust in His redeeming blood And seek His will to do?

#### **FAVOURITES ALL**

(Continued from page xxi.).

We love to think of that dear little girl, so far from her own home, and her own people, telling about THE GOD OF ISRAEL to her mistress.

Her master had leprosy, and she must have been very sorry for him, for she said one day to her mistress—"Would God my lord were with the prophet that is in Samaria! then would he recover him of his leprosy" (2nd Kings 5. 3).

Sometime later we find God's prophet sent the little girl's master to dip himself seven times in the river Jordan, and when he believed and obeyed the prophet ALL HIS LEPROSY WAS GONE.

The Bible shows us what great things even little girls and boys can do for the Lord, if they first know Him in the right way.

Some little boy or girl may be asking—"But how can I know Him in the right way?" The first thing is to know you are on the wrong way, and to know your need of the Saviour and to be put on the right way. In order that this might be, the Lord Jesus shed His precious blood and died on Calvary's cross that you may be saved, and He says:—"I am THE WAY, and THE TRUTH, and THE LIFE: no one cometh unto the Father, but by Me" (John 14. 6).

May it be that even while young, each one of our readers might TRUST HIM, and then be used of the Lord, and be happy in His love day by day.

GEO. E. STOCKWELL.

## THERE'S A FRIEND FOR LITTLE CHILDREN.

There's a Friend for little children
Above the bright blue sky,
A Friend that never changes,
Whose love will never die;
Unlike our friends by nature,
Who change with changing years,
This Friend is always worthy
The precious name He bears.



# FOR THE LITTLE ONES

SHEEP DIPPING AT THE FARM.

H! Mummy, the sheep are to be dipped up at the farm.

Do let us go and watch."

The children were so excited and eager to be off that we hurried along the road and up the hill after the sheep. What a noise! The sheep were basing and the sheep-dogs barking, all jostling and crowding together as they climbed the hill, with the sheepherds slowly plodding along with them. "What a lot of sheep! daddy ones and mummy ones, and wee baby lambs," said the little boy, excitedly.



When we got to the farm, the shepherds put all the sheep in a pen to let them rest and cool down after their long climb, while the "dip" was being prepared. This was a long trough, very deep at one end, shallower at the other, and nearly full of watery disinfectant.

It was just wide enough for one sheep at a time. Into the deep end the sheep were thrown backwards, one by one, pushed right under with a T-shaped pole. Then they struggled out, up

the slope at the shallow end, dripping-wet, but cleansed.

I noticed that the sheep had black patches and sores on their backs. I asked the farmer what caused them, and why the sheep had to be dipped. He told me that the sores were caused by insects and flies getting in the wool and biting the sheep, and that the "dip" killed the insects and helped to heal the sores. He

(Continued on page xxviii).

# SEARCH THE SCRIPTURES, . . . THEY ARE THEY WHICH TESTIFY OF ME

(John 5. 39).



TIMOTHY'S MOTHER TEACHING HIM THE HOLY SCRIPTURES.

### TIMOTHY.

(See 2 Timothy 3. 15).

In our picture this month you see the little boy Timothy standing by his mother's knee while she reads to him. Do you like your mother to read to you? Perhaps you like to hear a story before you go to bed. I wonder what stories you like. Timothy's mother is reading to him from the Scriptures, or, as we would say, the Bible. The Bible has in it all sorts of interesting stories. Do you ever read them? If you don't I should start to-night. Read a Bible story before you go to bed, or if you cannot read very well, ask mother to read

one to you.

Timothy's mother was not reading to him simply because the Bible had interesting stories in it. She read it because it showed God's way of salvation to him. Timothy, in one way at any rate, was like you—he was a sinner in God's sight, for God says, "All have sinned." But as Timothy heard the Bible read to him he learnt that God loves sinners, and to save them from their sins He sent His Son from heaven. Men hated Jesus when He came to earth, and they led Him away to Calvary and crucified Him. He allowed them to do this simply because He loved sinners—He loved you. More than that; He suffered punishment from God while He was on the cross on account of our sin. Jesus had never done any sin to deserve this punishment. We had done the sin, but "out of pity Jesus said, He'd bear the punishment instead."

That was the greatest story Timothy heard from the Bible, and he learnt that he could only be saved through "faith which is in Christ Jesus." He put his faith in Jesus (that is, he simply trusted Him for salvation) and he was saved.

#### SHEEP DIPPING AT THE FARM (Continued)

said, "They must be washed or they'll die. They must have

those black patches healed."

This made me think. For isn't that just what God says about us? Our hearts are black because of sin, and we must have them washed and cleansed by the blood of Christ or we shall perish. "We" means each one of us, Daddies, Mummies, and little children, just like the sheep and lambs; but, like them, we can't make ourselves clean. Another must cleanse us.

The Lord Jesus Christ in love came to this earth to save each one of us sinners. HE is spoken of as the Lamb of God, which taketh away the sin of the world. All the waters of God's wrath went over His Head when He died at Calvary on account of our

sın.

The sheep and lambs had to be dipped ONE BY ONE to make the black patches clean and to heal the sores, but believers can say, that the Lord Jesus Christ has taken all our sins away, and God says that He will remember them no more. But, and this is the important part, if we are to be healed and saved from sin we must from our heart believe that Jesus died for us, and ONE BY ONE take Him as our own Saviour.

#### THE SWEET STORY OF OLD.

(Will mothers and fathers teach these verses to their young?)

I think when I read that sweet story of old,
When Jesus was here among men,
How He called little children as lambs to His fold,
I should like to have been with Him then.

I wish that His hands had been placed on my head,
That His arms had been thrown around me,
And that I might have seen His kind look when He said.
Let the little ones come unto Me.

Yet still to Himself in true faith I may go,
And partake of a share of His love,
And if I thus lovingly trust Him below,
I shall see Him and hear Him above.

In that beautiful place He has gone to prepare
For all who are cleansed and forgiven;
And many dear children are gathering there,
"For of such is the kingdom of heaven."

## FOR THE LITTLE ONES.

#### REX.



She had a lovely dog called Rex.

UITE recently I went by bus with some friends to visit one of the camps. One of the friends had a lovely dog called Rex, and he was so quiet on the bus. When we got off and walked along the country lanes we had to pass some sheep and cows. As you know, sheep are very timid, and when they saw Rex coming along, they stared

and watched him, but the kind lady would not allow Rex to hurt or worry them, but kept him in control until we passed them.

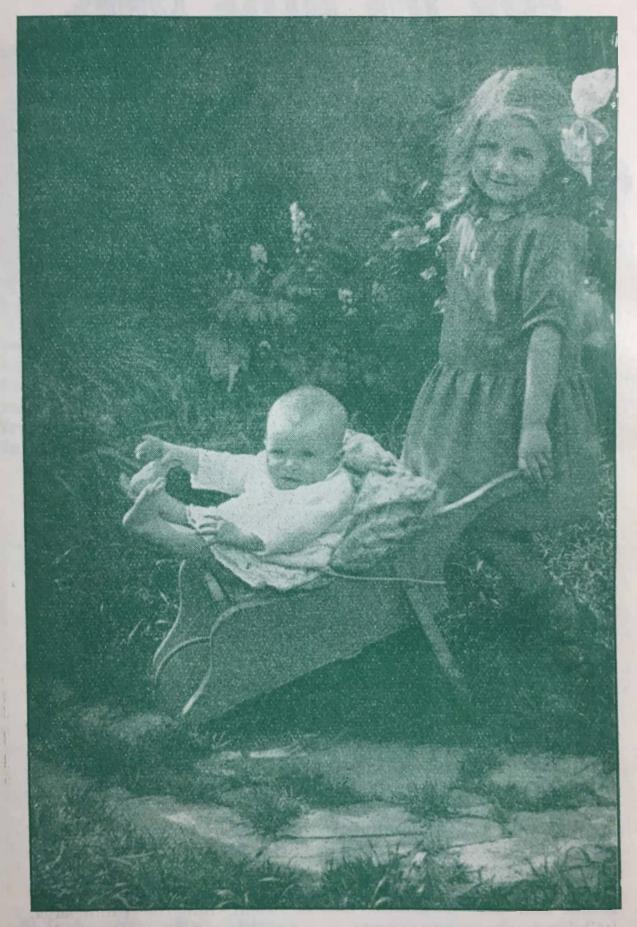


The Campers were having a happy time.

When we arrived at the Camp we saw tents, tables, pots and pans, all indicating that the campers were having a happy time. Soon Rex went off to enjoy himself, and it was not long before he was chasing the ball, but the only one who could get the ball from him was his mistress.

When she called Rex and told him to lie down he did so at once, then she released the ball. This dog was so trained that he did not need a second telling to lie down, he was an obedient dog. How many children have to be told many times to do things for father and mother before they do them, but the Bible says, "Children, obey your parents . . . for this is right. Honour thy

Continued on page xxxii.



JESUS LOVES THE LITTLE CHILDREN.

#### JESUS LOVES LITTLE CHILDREN.

One day I heard some children singing a chorus. These were the words they sang:

Jesus loves the little children,
All the children of the world.
Red and yellow, black and white,
All are precious in His sight,
Jesus loves the little children of the world.

Do you know that Jesus loves little children? While He was living here upon earth He called the little children to Him. Some of the men with Him would have sent them back, but He said, "Come," and as the little ones ran to His knee He laid His hand on them and blessed them.

You cannot see Jesus and feel His hands to-day, because He has gone back to His home in heaven. But He sees you all the same. He knows what you say and do and think. Sometimes you do things which displease Him, but He still loves you, though He does not like you doing naughty things. As He loved those children who were near Him on earth, so He loves you, and He wants to have you with Him in His home above. He still says "Come!" Remember though, that if you are to be with Him you must have all your sins washed away, for there can be no sin in His home. How can that be? Why, Jesus Himself can put them away. Before He went back to heaven He died upon the cross, bearing our sin so that we could go free. Now, as a lost one, all that you need to do is to believe in Him, trust in that work He did on the cross, then you will be able to say "Jesus died for ME."

REX. Continued from page xxix;

father and mother . . . that it may be well with thee, and thou mayest live long on the earth" (Ephesians 6. 1-3). To obey your parents at once is well pleasing to the Lord. Learn to obey at the first word. Also, if you love your parents you will obey them, you will be sorry to grieve them.

May you dear children come to know the Lord Jesus as your Saviour, and then learn to obey Him. He was subject to His parents, as we read in Luke 2.51, He is our Example and we should

follow His steps.

I'm glad the blessed Saviour
Was once a Child like me,
To show how pure and holy
His little one should be.
And I will try to follow
His footsteps here below,
For He will ne'er forget me,
Because He loves me so.

M. PARRY.

## I HOPE IT DOESN'T HURT ME.

A LITTLE while ago we spent a Saturday afternoon with a few Lord's Day School children in a nearby field. After a very enjoyable afternoon together we sat down on the grass to have

our tea, and after one of our friends had thanked the Lord for the food which He had given to us, we noticed a little boy playing very near to where we were sitting. One of our friends asked him whether he would like a cup of tea. I expect you can guess what his answer was. Like all the other little boys that I know, he said, "Yes." Our friend then offered a sandwich to him which he readily accepted. But do you know, his answer was not "Thank you," but he looked at it and said—"I hope it doesn't hurt me." You can imagine we all had a good laugh because it sounded so funny, but it reminded me of something else that is being offered to every boy and girl, and, do you know it's just as easy for you to accept, when you know your need of it, as it was for the little boy who took the sandwich. Yes, God offers Eternal Life to all boys and girls who will accept the Lord Jesus as their Saviour. The Lord Jesus is just longing for little boys and girls to receive Him, to trust in Him alone. and to hear them give Him thanks from their heart for His having died on the cross to save them. What a wonderful Saviour He is! It is so simple for us to take God at His word, and oh how happy the little boy or girl is who can say!-

I came to the Saviour in life's happy morn,
My life to His service I'll cheerfully give,
And pray for His Spirit to guide and direct me,
That I to His glory and honour may live.